उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

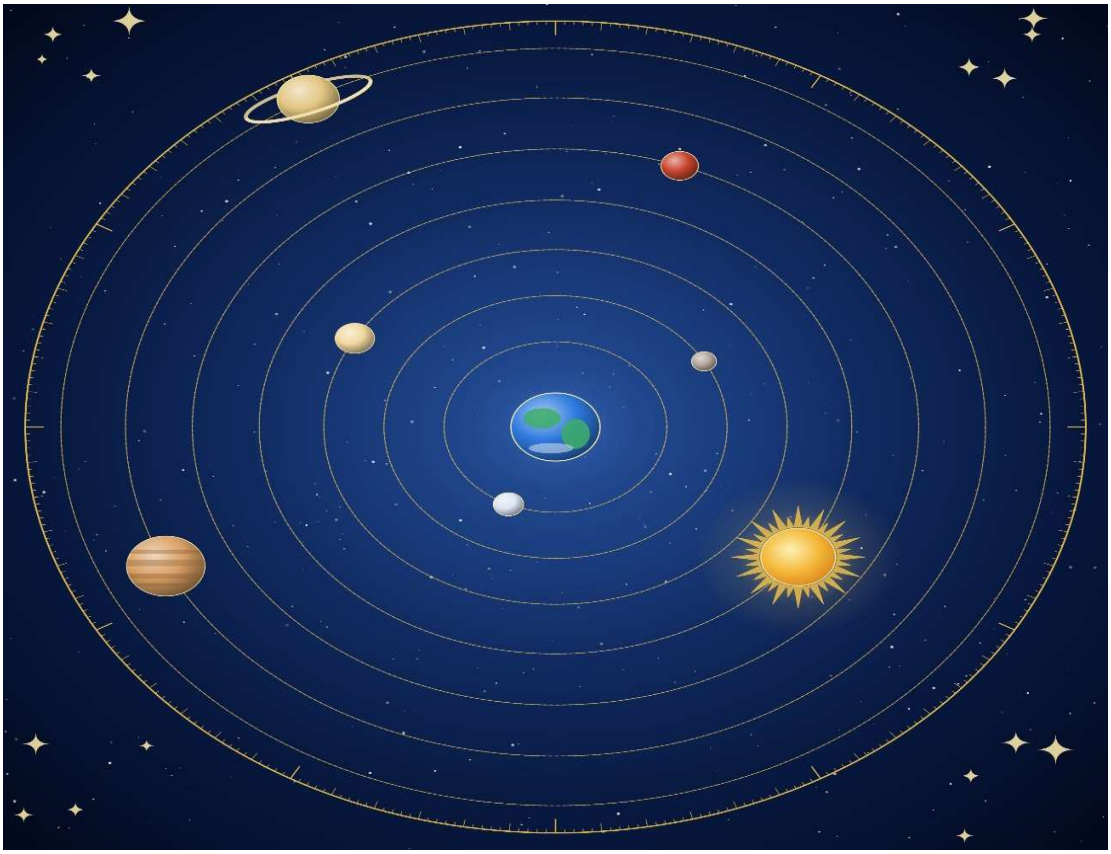
हल्द्वानी

DPJ- 101/ PJ- 101

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित

मानविकी विद्याशाखा

वैदिक ज्योतिष विभाग





तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर अजय रावत (अध्यक्ष) निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, (नैनीताल) **श्री अरुण बंसल** (ज्योतिष विशेषज्ञ) अध्यक्ष, अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली **श्री अशोक भाटिया** (अंक शास्त्र) परीक्षा नियन्त्रक, अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ, दिल्ली	**प्रोफेसर वासुदेव शर्मा (ज्योतिष)** विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर, राजस्थान **श्री पी.आर. काबरा** (हस्तलेखा) अध्यक्ष, अखिल भारतीय वास्तु हस्त रेखा, पराविज्ञान शोध संस्थान, जयपुर, राजस्थान **पाठ्यक्रम संयोजन एवं सम्पादन** डा.अञ्जना जोशी प्रवक्ता (ज्योतिष)उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

पुनर्सम्पादन संस्करण – 2026

सम्पादन

डॉ. रंजीत दूबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), वैदिक ज्योतिष विभाग

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

सह- सम्पादन

डॉ. विजय प्रसाद रतूड़ी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), वैदिक ज्योतिष विभाग

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखक	इकाई संख्या
श्री सुरेश आत्रेय प्राध्यापक, ज्योतिष भारतीय ज्योतिष प्रशिक्षण केन्द्र, लुधियाना, पंजाब	1, 4, 8
पं. प्रेमशंकर शर्मा अध्यक्ष, शान्ति ज्योतिष संस्थान चैप्टर चेयरमेन अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ, जयपुर	2
श्री अरुण बंसल अध्यक्ष, अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ, दिल्ली	3,5,6
पं. प्रदीप कुमार सक्सेना सम्पादक, ग्रह शक्ति मासिक ज्योतिष–पत्रिका मथुरा, उत्तरप्रदेश	7, 9, 10, 11

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रथम संस्करण : 2011 **द्वितीय संस्करण : 2026** **ISBN No. -**

प्रकाशक : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, **हल्द्वानी** **मुद्रक :**

नोट: - इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी स्थित सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित

DPJ- 101/ PJ- 101

क्रम व इकाइयों के नाम	पृष्ठ संख्या
ब्लॉक 1 खगोल एवं काल परिचय	**2**
इकाई 1 काल-गणना	3- 15
इकाई 2 खगोल शास्त्र एवं समय रूपान्तरण	16 - 31
इकाई 3 भचक्र में राशि व नक्षत्रों का विभाजन	32 - 52
इकाई 4 पंचाँग परिचय	53 - 74
ब्लॉक 2 जन्मकुण्डली निर्माण- विधि	**75**
इकाई 5 लग्न एवं द्वादश भाव–स्पष्ट साधन	76 - 119
इकाई 6 ग्रह–स्पष्ट साधन	120 -149
इकाई 7 विंशोत्तरी दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा साधन	150 -165
इकाई 8 योगिनी दशा एवं अन्तर्दशा साधन	166 -173
ब्लॉक 3 षोडशवर्ग – साधन	**174**
इकाई 9 द्रेष्काँण, चतुर्थांश, सप्तमांश एवं नवांश साधन	175 -189
इकाई 10 दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश एवं खवेदांश साधन	190 -207
इकाई 11 अक्षवेदांश, चतुर्विंशांश, सप्तविंशांश, त्रिशांश एवं षष्ट्यंश साधन	208 - 230

प्रश्न पत्र कोड- DPJ- 101/ PJ- 101

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित

ब्लॉक - 1

खगोल एवं काल परिचय

इकाई – 1 काल–गणना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 काल– गणना

1.3.1 भचक्र का राशि–अंश–कला–विकला में विभाजन

1.3.2 भारतीय मान्यतानुसार काल–विभाजन

1.3.3 अहोरात्र

1.3.4 भारतीयवर्ष–मान–पद्धति

1.3.5 संवत्

1.3.6 मास--वर्णन

1.3.7 चान्द्र–सौर–मास

1.3.8 ऋतु

1.3.9 सप्ताह

1.3.10 पक्ष

1.3.11 अयन

1.3.12 मुहूर्त्त

1.3.13 तिथि

1.3.14 युग

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना -

ज्योतिषीय गणनात्मक पक्ष के साथ–साथ काल गणना का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान के लिए काल गणनाओं का ज्ञान आवश्यक है। काल गणना के विभिन्न सूचकों से ज्योतिषीय अध्ययन का आरम्भ हम कर रहे हैं।

प्रस्तुत इकाई में काल गणना के विभिन्न मानों का परिचय किया जायेगा। काल ही मनुष्य के सुख–दुःख, जीवन–मरण, लोक–परलोक एवं उत्थान–पतन का नियामक होता है। काल से ही सृष्टि उत्पन्न होती है और काल में ही विलीन हो जाती है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार कुल नौ द्रव्य हैं, उनमें से छठा द्रव्य काल है। 'काल' सभी क्रिया, गति एवं परिवर्तन को उत्पन्न करने वाली शक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यद्यपि यह दो समयों में अन्तर प्रकट करने का आधार है परन्तु आधुनिक युग में यह समय (अवधि) के रूप में प्रकट होता है, इस प्रकार काल आज के युग[?] में समय का पर्याय हो गया है। व्यावहारिक जीवन को व्यवस्थित व नियमित बनाने के लिए हमारे पूर्वाचार्यों ने 'काल मान' की रचना की। भचक्र में भ्रमण करते हुए सूर्य के एक चक्र को 'वर्ष' का नाम दिया गया तथा वर्ष की सूक्ष्मतम इकाई का नाम क्षण, सेकेण्ड या विपल आदि दिया गया। भारतीय ज्योतिष आचार्यों के अनुसार काल गणना (समय) का आधार सूर्य ही है।

आगामी इकाई में हम खगोल के कुछ मुख्य बिन्दुओं का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य:

समय ज्ञान के बिना ज्योतिष का ज्ञान होना सम्भव नहीं है क्योंकि जन्म–पत्रिका निर्माण तथा मुहूर्त आदि शोधन के लिए समय को भली–भांति जानना अत्यावश्यक है। इस इकाई में भारतीय काल–गणना के सभी आयामों (प्राचीन व अर्वाचीन) का विस्तार से वर्णन किया गया है।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- प्राचीन समय में काल गणना के स्वरूप का ज्ञान हो सकेगा।
- आधुनिक काल गणना के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- प्राचीन व अर्वाचीन काल गणना के आपसी सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
- वर्ष के प्रकार, उनका मान और निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान हो सकेगा।
- सौर और चान्द्र वर्ष के आपसी सम्बन्ध का परिचय प्राप्त कर पायेंगे।

- ऋतु, सप्ताह, पक्ष, अयन, मुहूर्त्त, तिथि, युग का परिचय एवं परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त[?] कर पायेंगे।

1.3 काल – गणना

हमारे प्राचीन ऋषियों ने काल को परमात्मा का स्वरूप स्वीकार किया है तथा इसे काल–पुरुष की संज्ञा दी है। यद्यपि महाकाल अनादि, अनन्त और असीम है, उसकी गणना नहीं की जा सकती, वह सृष्टि से पूर्व भी था और उसका अस्तित्त्व भविष्य में भी सर्वदा रहेगा, तथापि विश्वव्यापी कार्य–कलापों में एकरूपता लाने के लिये एक 'मानक समय' (स्टैण्डर्ड टाईम) की रचना की गई है। आधुनिक युग में काल विभाजन का निर्धारण यद्यपि घण्टा, मिनट, सेकेण्डों में किया जाता है परन्तु भारतीय आचार्यों ने अहोरात्र, दिन, घटी, पल, विपल, मुहूर्त्तों आदि में अति सूक्ष्म रूप में काल विभाजन की इकाईयों की रचना की थी। समय वह चाहे किसी भी प्रकार से मापा जाये उस का संबंध सूर्य भ्रमण (पृथ्वी की दैनिक व वार्षिक गति से सूर्य भ्रमण का आभास) से ही है। ज्योतिष के विद्यार्थियों को भारतीय काल गणना की इकाईयों के संबंध में प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है। इससे पहले कि हम काल के बारे में चर्चा करें हमें भचक्र के बारे में जान लेना चहिए।

1.3.1 भचक्र का राशि, अंश, कला, विकला आदि में विभाजन

1 भचक्र 12 राशियां (360°)

1 राशि 30 अंश (30°)

1 अंश 60 कला (60′)

1 कला 60 विकला (60″)

1.3.2 भारतीय मान्यतानुसार काल–विभाजन

भारतीय मान्यतानुसार पलक झपकने में जितना समय लगता है, उसे निमेष कहते हैं। तीन निमेष का एक क्षण होता है। 5 क्षण की एक काष्ठा तथा 15 काष्ठा की एक लघु एवं 15 लघु की एक घटी (घड़ी) होती है। सुविधा हेतु काल विभाजन इस प्रकार से होगा –

समय की विभिन्न इकाईयां

1 त्रुटि = सैकेंड का 33750 वां हिस्सा 4 सैकेंड = 1 असु

100 त्रुटि = 1 तत्पर 6 असु = 1 पल (24 सेकेण्ड)

30 तत्पर = 1 निमेष 60 पल = 1 घटी (24 मिनट)

18 निमेष = 1 काष्ठा (1.6 सेकेण्ड) 60 घटि = 1 अहोरात्र (24 घंटे)

30 काष्ठा = 1 कला (48 सेकेण्ड) 15 अहोरात्र = 1 पक्ष

2 पक्ष = 1 मास, 2 मास = 1 ऋतु, 3 ऋतु = अयन, 2 अयन = 1 वर्ष

इसी तरह से एक अन्य प्रकार के अनुसार 10 बार एक गुरु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे एक प्राण या एक असु कहते हैं। कमल–पत्र पर सुई से छेद करने में जो समय लगता है, उसे त्रुटि कहते हैं।

1 असु 10 विपल (4 सेकेण्ड)

60 विपल 1 पल (24 सैकिण्ड)

60 पल 1घटी

60 घटी 1 अहोरात्र(दिन रात)

2 घटी 1 मुहूर्त्त

30 मुहूर्त्त 1 अहोरात्र

7 अहोरात्र 1 सप्ताह

30 अहोरात्र 1 मास

12 मास 1 वर्ष

घण्टा मिनट में काल गणना

60 सेकेण्ड 1 मिनट

60 मिनट 1 घण्टा

24 घण्टे 1 अहोरात्र

घण्टा मिनट का घटी पलों से सम्बन्ध

अढ़ाई घटी 1 घण्टा

1 घटी 24 मिनट

अढ़ाई पल 1 मिनट

अढ़ाई विपल 1 सेकेण्ड

ज्योतिष के विद्यार्थियों को यह ज्ञान भी होना चाहिए।

दिन मान सूर्योदय से सूर्य अस्त तक

रात्रि मान सूर्य अस्त से आगामी सूर्योदय तक

उषा काल सूर्योदय पूर्व 5 घटी से सूर्योदय तक

प्रातः सूर्योदय से 3 घटी तक

सायं सूर्य अस्त से 3 घटी तक

प्रदोष सूर्य अस्त से 6 घटी तक

7 अहोरात्र(दिन रात) 1 सप्ताह

15 अहोरात्र 1 पक्ष

2 पक्ष 1 चान्द्र मास

2 मास 1 ऋतु

6 ऋतुएं 1 वर्ष

6 मास 1 अयन

2 अयन 1 वर्ष

इस के अतिरिक्त इष्ट काल वह समय है जो सूर्योदय से जन्म समय तक का समय घटी पलों व विपलों में होता है।

1.3.3 अहोरात्र (दिन रात)

भारतीय ज्योतिष आचार्यों के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय के बीच का समय एक अहोरात्र है, किन्तु व्यावहारिक जीवन पर पश्चिमी समय का प्रभाव होने से मध्य रात्रि को समय शून्य मान कर समय की गणना करते हैं तथा अगली मध्य रात्रि तक एक दिन रात की गणना की जाती है। भारतीय रेलवे की समय–सारणी इसी प्रकार की काल गणना पर आधारित है। भारतीय मान्यतानुसार प्रत्येक स्थान का दिन अलग अलग समय पर प्रारम्भ होता है क्योंकि प्रत्येक स्थान का सूर्योदय

अलग अलग समय पर होता है। पाश्चात्य मत से समय की रचना 'विषुवत् वृत्त' पर सूर्य को समान गति से चलता हुआ मान कर की गई है। इसे मध्यम सूर्य द्वारा 'याम्योत्तर वृत्त' का एक पूर्ण चक्र होने पर एक दिन रात होता है। यह वास्तविक सूर्य द्वारा क्रान्ति–वृत्त पर भ्रमण करने की औसत दैनिक गति के बराबर है। इसे सौर दिवस भी कहा जाता है।

1.3.4 भारतीयवर्ष मान–पद्धति

भारतीय पूर्वाचार्यों द्वारा पाँच प्रकार से वर्षमान ही मुख्यतः स्वीकार किये गये हैं।

(1) सौर

(2) चान्द्र

(3) नाक्षत्र

(4) सावन

(5) बार्हस्पत्य

सौर– वर्ष:

जितने समय में सूर्य मेषादि द्वादश राशियों (एक भचक्र) का भ्रमण करता है,उसे सौर वर्ष कहते हैं। एवं जितने दिनों में सूर्य एक राशि (30 अंश) का भ्रमण करता है उसे सौर मास तथा जितने काल में सूर्य एक अंश पूरा करता है, उसे सौर दिन कहते हैं। आधुनिक मतानुसार एक सौर वर्ष में 365 दिन, 15 घटी, 22 पल,और 57 विपल, तदनुसार 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट व 11 सेकेण्ड होते हैं।

चान्द्र–वर्ष:

जितने समय में चन्द्रमा भचक्र के 12 चक्र पूरे करता है, उसे चान्द्र वर्ष कहते हैं। एक चान्द्र वर्ष में औसतन 354 दिन, 22 घटी, 1 पल, 22 विपल होते हैं। चन्द्रमा का एक भचक्र का भोग काल चान्द्र मास होता है।

नाक्षत्र–वर्ष:

12 नाक्षत्र मासों का एक नाक्षत्र वर्ष होता है, चन्द्रमा द्वारा एक नक्षत्र का भोग काल नाक्षत्र दिन होता है। चन्द्रमा द्वारा 27 नक्षत्रों के परिभ्रमण के समय को नाक्षत्र मास कहा जाता है।

सावन–वर्ष:

एक सूर्योदय से आगामी दिवस के सूर्योदय तक का काल सावन दिन होता है। 30 सावन दिनों का एक सावन मास तथा 12 मासों का एक सावन वर्ष होता है।

बार्हस्पत्य –वर्ष:

बृहस्पति मध्यम गति से जितने समय में एक राशि का संचरण करता है, उसे बार्हस्पत्य वर्ष कहते हैं। प्रत्येक बार्हस्पत्य वर्ष का एक नाम होता है जैसे 'प्रभव' आदि। बार्हस्पत्य वर्ष के 60 नाम होते हैं। विवाह, यज्ञ, अनुष्ठानादि, शुभ कार्यों के आरम्भ में प्रभवादि सम्वत्सर का उच्चारण अवश्य किया जाता है।

1.3.5 संवत् :

वर्ष प्रारम्भ के विभिन्न प्रकार भारतवर्ष में प्रचलित हैं, पंचाँग में अनेक प्रकार के वर्षों के नाम दिए रहते हैं जिन्में कुछ सौर वर्ष हैं कुछ चान्द्र वर्ष। इन सब के प्रारम्भ अलग–अलग मासों में तथा अलग–अलग तिथियों पर होते हैं। कुछ वर्ष सायन गणना पर कुछ निरयण गणना पर, कुछ सूर्य और चन्द्रमा के सम्बन्ध से तथा कुछ चन्द्रमा पर आधारित होते हैं।

इनमें से कुछ मुख्य इस प्रकार हैं। ग्रेगोरियन, विक्रमी, शक, राष्ट्रीय, पंजाबी, बंगाली, तमिल, केरल, नेपाली चैत्रादि, कार्तिकादि, हिज़री। इनमें से कुछ की तिथियां पंचाँग में दी रहती हैं।

1.3.6. मास–वर्णन

भारतीय ज्योतिष में मुख्यतया दो प्रकार के मास ही व्यवहार में आते हैं। (1) सौर मास (2) चान्द्र मास।

1.3.7. सौर मास :

सूर्य की एक राशि के भोग काल को सौर मास कहते हैं। सौर मास लगभग 30 दिन व 10 घण्टे का होता है। जब सूर्य मेष राशि (अश्विनी नक्षत्र अर्थात् भचक्र का प्रथम बिन्दु) में तथा वृष राशि में सूर्य प्रविष्ट करे तो ज्येष्ठ मास होगा। जिस दिन सूर्य राशि परिवर्तन करता है उसे संक्रान्ति कहा जाता है। सौर मास में संक्रान्ति से 1 प्रविष्टा प्रारम्भ हो कर अगली संक्रान्ति तक अंग्रेजी तिथियों के समान एक, दो, तीन आदि क्रमशः तिथियां होती हैं।

सौर मास के 12 नाम इस प्रकार हैं:

(1) वैशाख (2) ज्येष्ठ

(3) आषाढ़ (4) श्रावण

(5) भाद्रपद (6) आश्विन

(7) कार्तिक (8) मार्गशीर्ष

(9) पौष (10) माघ

(11) फाल्गुन (12) चैत्र

1.3.7 चान्द्र मास :

यह मास चन्द्रमा द्वारा निर्मित होने से चान्द्र मास कहलाता है। सूर्य व चन्द्रमा के समान भोगांश से इस का प्रारम्भ होता है तथा अगले समान भोगांश तक एक मास रहता है। इस मास में दो पक्ष होते हैं।
(1) शुक्ल पक्ष (2) कृष्ण पक्ष

एक अन्य मत से जब चन्द्रमा के भोगांश सूर्य से 180° का कोण बनाते हैं तो इस मास का प्रारम्भ होता है। इस मत में पहले कृष्ण पक्ष व बाद में शुक्ल पक्ष होता है। प्रत्येक चान्द्रमास लगभग 29 दिन, 22 घण्टे का होता है। अधिकांशतः चान्द्रमासों के नाम पूर्णिमा के दिन चन्द्र द्वारा संचरित नक्षत्र संज्ञा पर आधारित होते हैं।

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
चित्रा	विशाखा	ज्येष्ठा	पू. षा.	श्रवण	शत भि.	रेवती	कृत्तिका	मृगशिरा	पुनर्वसु	आश्ले.	पू. फा.
स्वाती	अनुराधा	मूल	उ. षा.	धनिष्ठा	पू. भा. उ. भा.	अश्विनी भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ. फा. हस्त

व्यावहारिक जीवन में मुख्यतः तीन प्रकार के मास, सावन मास, सौर मास व चान्द्र मास ही आते हैं। सौर और चान्द्र मासों का सम्मिश्रण 'चान्द्र–सौर–वर्ष' भारत वर्ष में प्रचलित है।

चान्द्र–सौर–वर्ष

वैदिक काल से ही भारतवर्ष में सौर–वर्ष तथा चान्द्र–वर्ष दोनों का व्यवहार होता आया है। दोनों के सम्मिश्रण को चान्द्र–सौर–वर्ष के नाम से जानते हैं। इनमें से एक के बारे में ऋग्वेद में तथा

दूसरे के बारे में अथर्ववेद में बताया गया है। वराह मिहिर ने अधिक व क्षय तिथियों तथा अधिक मास में कुछ संशोधन किये थे। आजकल पंचांगों में जिस चान्द्र–सौर–वर्ष का प्रयोग हो रहा है और जिसके आधार पर अधिकतर सामाजिक उत्सव / धार्मिक त्यौहार, पर्व आदि मनाये जाते हैं, यह चान्द्र मास एवं सौर वर्ष का मिश्रित स्वरूप है। प्रत्येक 19 वर्ष में 7 मास बढ़ा दिये जाते हैं, जिन्हें अधिक मास या मलमास कहते हैं। एक वर्ष में 13 महीने करने के लिए जिस सिद्धान्त का प्रयोग किया जाता है वह यह है कि जब एक ही सौर मास में दो अमावस्या का अन्त हो रहा हो, वह महीना जो पहली अमावस्या के बाद पड़ता हो, उसे दोबारा दूसरी अमावस्या के बाद एक महीने और बढ़ा दिया जाएगा अर्थात् एक ही नाम के दो चान्द्र मास उस वर्ष होंगे। इन दो चान्द्र मासों के नाम (सौरमास–विशेष के लिए) उस सौर मास के आधार पर रखे जायेंगे। इस प्रकार प्रत्येक 2 या 3 वर्ष में 13 चान्द्र मासों का वर्ष होता है जिससे सौर एवं चान्द्र वर्षों के बीच जो अन्तर होता है उसे समायोजित कर लिया जाता है।

1.3.8 ऋतु :

एक वर्ष में छः ऋतुएं होती हैं। एक ऋतु की अवधि 2 सायन सौर मास की होती है।

1.3.9. सप्ताह :

सात वारों का समूह एक सप्ताह होता है तथा इस का क्रम रविवार से शुरू होता है जैसे रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार।

1.3.10. पक्ष :

एक मास में दो पक्ष होते हैं। यह ज्ञात रहे कि पक्ष केवल चान्द्र मास में होते हैं शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष। एक पक्ष में 15 तिथियां होती है।

1.3.11 अयन :

एक वर्ष में दो अयन होते हैं एक अयन छः सायन–सौर –मास का होता है।

1.3.12 मुहूर्त्त :

मुहूर्त्त भी एक समय की इकाई है, सामान्यतः दो घटी (अड़तालीस मिनट) का एक मुहूर्त्त होता है। वास्तव में 15 मुहूर्त्त दिन के होते हैं तथा 15 मुहूर्त्त रात्रि के होते हैं। दिनमान अधिक होने पर दिन के मुहूर्त्त बड़े तथा रात्रिमान अधिक होने पर रात्रि के मुहूर्त्त बड़े होते हैं।

1.3.13 तिथि :

तिथि में समय की अवधि निश्चित नहीं है, यह बड़ी छोटी भी हो सकती है।

1.3.14 युग :

पुराणानुसार काल के चार विभागों को एक महायुग कहा जाता है। एक भाग को एक युग कहा गया है। चार युग, सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। इन की समयावधि का अनुपात क्रमशः 4:3:2:1 है अर्थात् कलियुग से सतयुग की समयावधि चार गुणा है।

चार युग व उनकी आयु

1– कलियुग = 432000 वर्ष (कलियुग की बीती आयु–5112 वर्श, शेष आयु--426888 वर्ष)

द्वापर युग = 864000 वर्ष, त्रेता युग = 1296000 वर्ष, सतयुग = 1728000 वर्ष

43,2,0,000 वर्ष = 1 महायुग

1000 महायुग (4,32,0000,000 वर्ष) = 1 कल्प

(एक कल्प में 14 मन्वन्तर होते हैं। अब तक छः मन्वन्तर बीत चुके हैं और 'वैवस्वत' नामक सातवां मन्वन्तर चल रहा है)

सृष्टि का आरभ्भ वर्ष : 1,95,58,85,110

नया कलियुग संवत् : 5113, नया विक्रमी संवत् : 2068 (4 अप्रैल 2011 से)

1.4 सारांश:

इस इकाई का अध्ययन करने पर आप को ज्ञात हुआ होगा कि हमारे प्राचीन आचार्यों को विशेष काल ज्ञान था, तथा उस ज्ञान के आधार पर वे ऋतुओं आदि के बारे में जान कर अपने कार्य–कलाप निश्चित किया करते थे। बीज बोना, फसलों की कटाई,यात्रा करना आदि अनेक कार्यों के मुहूर्तों में हमें काल ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस इकाई से हमें इन सब के बारे में अच्छी प्रकार जानकारी प्राप्त हुई है। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए काल ज्ञान अत्यावश्यक है। इस इकाई से आप को यह ज्ञान हो गया होगा कि वर्ष क्या है, मास कैसे बनता है, अहोरात्र क्या है, ऋतुएं कब होती हैं और कैसे बनती हैं। इस इकाई से यह बोध भी हो गया होगा कि सूर्य–चान्द्र–वर्ष कब, क्यों और कैसे बनता है।

1.5 शब्दावली

अयन उत्तरायण दक्षिणायन

अभ्यास प्रश्न

1. काल किसे कहते हैं ?
2. मानक समय क्या है ?
3. घटी व घण्टे में अन्तर बताएं।
4. 'अहोरात्र' में कितने मुहूर्त्त होते हैं।
5. मास कितने प्रकार के होते हैं।
6. वर्ष किसे कहते हैं ?आधुनिक युग में कौन–कौन से वर्ष प्रयोग में लाए जाते हैं।
7. एक अयन में कितने मास होते हैं।
8. चान्द्र वर्ष और सौर वर्ष में कौन सा बड़ा है।
9. अधिक मास क्यों होते हैं।
10. सौर तिथि व चान्द्र तिथि कितने अन्तर के बाद वही होती है।
11. भारतीय रेलवे समय सारिणी में समय कब से लिया जाता है।

(1) सूर्योदय से (2) मध्य रात्रि से

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. देखें इकाई की प्रस्तावना।

2 किसी राष्ट्र या राष्ट्र का एक जोन (एक भाग जो समय के लिए निर्धारित किया गया है) के मध्य रेखांश से लिया गया समय जैसे भारतीय मानक समय 82°[?]–30'पू० से लिया गया है को मानक समय कहते हैं।

3. घटी अहोरात्र का साठवां भाग है तथा घण्टा मानक समय में प्रयोग होने वाली इकाई है। 1 घण्टे में 60 मिनट होते हैं तथा 1 घटी में 24 मिनट होते हैं।

4. एक अहोरात्र में 30 मुहूर्त्त होते हैं।

5. मास सौर, चान्द्र, नाक्षत्र और सावन चार प्रकार के होते हैं। परन्तु व्यवहार में सौर और चान्द्र मास ही प्रयुक्त होते हैं।

6. पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर का एक भ्रमण ही वर्ष होता है। चन्द्रमा का सूर्य स्पष्ट से पुनः सूर्य स्पष्ट तक की यात्रा को चान्द्र मास कहा जाता है। 2 चान्द्र मासों का एक वर्ष होता है। चार प्रकार

के वर्ष मुख्यतः सौर वर्ष, चान्द्र वर्ष, नाक्षत्र वर्ष, सावन वर्ष प्रयोग में आते हैं। आधुनिक युग में सौर–चान्द्र मास के सम्मिश्रण से बना वर्ष ही अधिक प्रयोग में आता है। ईस्वी सन् का प्रयोग भी अत्यधिक प्रचलित है। राष्ट्रीय काम--काज में सौर वर्ष सायन शक संवत् का प्रयोग होता है।

7. एक अयन में छः मास होते हैं।

8. सौर वर्ष चान्द्र वर्ष से बड़ा होता है।

9. सौर वर्ष व चान्द्र वर्ष का सामंजस्य स्थापित करने के लिए अधिक मास की आवश्यकता होती है।

10. सौर तिथि व चान्द्र तिथि 19 वर्ष के बाद वही होती है।

11. मध्य रात्रि से

1.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

पन्ना लाल ज्योतिष तत्त्व जनरल बुक डिपो (जालन्धर)

के.के.जोशी मुहूर्त्त सागर पब्लिकेशन (दिल्ली);2008

वी.पी.जैन खगोल शास्त्र भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान (नई दिल्ली)

पन्ना लाल ज्योतिषी पंचाँग दिवाकर पं. देवी दयाल ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (जालन्धर)

शिव नाथ झारखण्डी भारतीय ज्योतिष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 'अनुवादक' (लखनऊ);1990

1.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

नेमि चन्द्र शास्त्री भारतीय ज्योतिष भारतीय ज्ञान पीठ;

(नई दिल्ली)1952

राणा प्रसाद शर्मा पौराणिक कोश ज्ञान मण्डल लिमिटेड

(वाराणसी)

डा. राज बली पाण्डेय हिन्दु धर्म कोष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(लखनऊ);1988

अरुण बंसल सरल ज्योतिष अखिल भारतीय ज्योतिष

संस्था संघ (नई दिल्ली);2010

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न – काल गणना के विविध पक्षों का विस्तार से वर्णन करें।

1.9 निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर – सम्पूर्ण इकाई

इकाई – 2 खगोल–शास्त्र व समय–रूपान्तरण

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 सौर– मण्डल

2.3.1 आन्तरिक–ग्रह

2.3.2 बाह्य–ग्रह

2.3.3 नव–ग्रह

2.4 खगोलीय परिभाषायें

2.4.1 भूमध्यरेखा

2.4.2 मध्याह्नरेखा

2.4.3 मानक मध्याह्नरेखा

2.4.4 अक्षांश

2.4.5 क्रान्तिवृत्त

2.4.6 भचक्र

2.4.7 अयनांश

2.5 अधिकमास –क्षयमास

2.6 वृद्धि –क्षय -तिथि

2.7 स्थानीय समय

2.8 मानक समय

2.9 समय परिवर्तन

2.10 इष्ट साधन

2.11 सारांश

2.12 शब्दावली

2.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

2.15 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.16 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

ज्योतिष शास्त्र के आरम्भिक अध्ययन क्रम में आपने विग्रह अध्याय में काल गणना के प्रमुख मानों का अध्ययन किया।

ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण विषय खगोल शास्त्र है जिसकी जानकारी के बिना ग्रहों की, आंतरिक व बाह्य संचरना के बारे में जानना असंभव है। ग्रहों के उपग्रह, तारों का वर्गीकरण, तारे एवं ग्रह में अंतर, पृथ्वी की आंतरिक–बाह्य संचरना के अलावा उसका अपनी धुरी पर घूर्णन आदि खगोलीय ज्ञान बिन्दु हैं। पृथ्वी के घूर्णन के आधार पर दिन–रात का होना, लग्न का समय निर्धारण, चन्द्रमा का उदय अस्त होना निर्भर करते हैं। पृथ्वी जिसे स्थिर माना जाता था खगोलशास्त्र के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि वास्तव में पृथ्वी अपने अक्ष पर सूर्य के चारों ओर घूमती है तथा सूर्य स्थिर रहता है।

इस इकाई से खगोलशास्त्र के प्रमुख बिन्दुओं के अध्ययन के साथ–साथ समय के निर्धारण हेतु मानक समय, स्थानीय समय और ग्रीनविच समय का अध्ययन करेंगे।

आगामी अध्याय में आप भचक्र में राशि व नक्षत्रों के विभाजन का अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1 सौर मण्डल को पहचान पायेंगे।
2 ग्रह, उपग्रह में अंतर स्पष्ट कर पायेंगे।
3 पृथ्वी के बारे में विश्लेषण कर पायेंगे।
4 पृथ्वी एवं सूर्य का आपस में सम्बन्ध बता पायेंगे।
5. अक्षांश–देशान्तर का अन्तर कर पायेंगे।
6. अधिक मास व क्षय मास की तुलना कर सकेंगे।
7. तिथि–वृद्धि व तिथि–क्षय को परिभाषित कर पायेंगे।
8. मानक समय व स्थानीय समय में अन्तर कर सकेंगे।
9. समय के रूपान्तरण–विधि की गणना कर सकेंगे।

2.3 सौर– मंडल (Solar System)

सूर्य, ग्रहों, उपग्रहों, धूमकेतु, उल्का, लघुग्रहों तथा ग्रहों के धूलि–कण एवं गैसीय कणों से बना है। हमारा सौर--मंडल ब्रह्माण्ड का एक छोटा भाग है। इस सौर–मण्डल में हम रहते हैं। यह सौर–मंडल सूर्य के आस–पास केन्द्रित है। सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

हमारे सौर–मंडल में अभी तक नौ ग्रहों का पता लगा है। भारतीय पद्धति में **केवल पांच** ग्रहों को ही माना है।

सूर्य से दूरी के क्रम से ज्ञात ग्रहों के नाम इस प्रकार हैं।

1. बुध 6. शनि

2. शुक्र 7. यूरेनस

3. पृथ्वी 8. नेप्च्यून

4. मंगल 9. प्लूटो

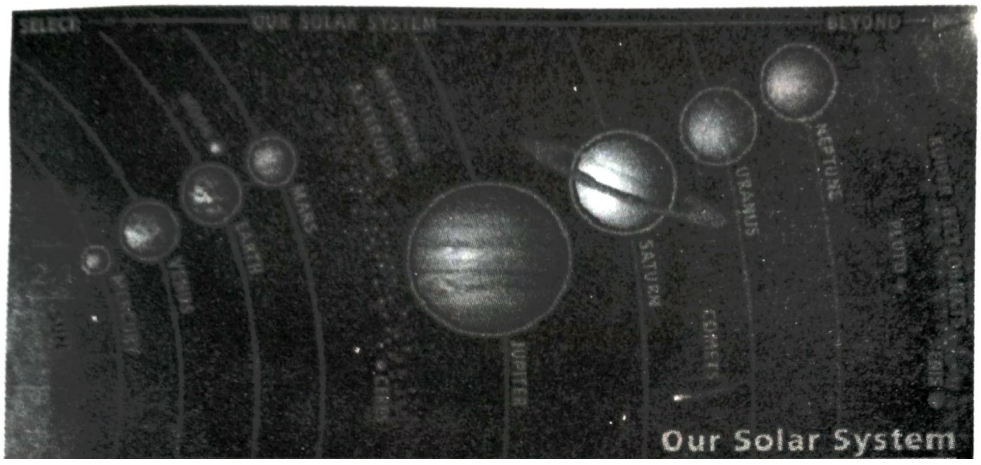
5. बृहस्पति

वर्तमान समय में इस सौर मंडल में तीन ग्रह और जुड़े हैं जो इस प्रकार से हैं –

1) यूरेनस की खोज सन् 1781 की गयी।

2) सन् 1846 में नेपच्यून की खोज की गयी।

3) प्लूटो की खोज सन् 1930 में हुई।



2.3.1 आन्तरिक–ग्रह (Interior Planet)

वे ग्रह हैं जो सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य स्थित हैं। वे हैं बुध तथा शुक्र।

2.3.2 बाह्य–ग्रह (Exterior Planet)

वे ग्रह जो सूर्य तथा पृथ्वी दोनों से बाहर हैं। वे ग्रह हैं मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून तथा प्लूटो।

यूरेनस, नेप्चून तथा प्लूटो को भारतीय मनीषियों ने जातक ग्रन्थों में कोई स्थान नहीं दिया। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि भारतीय मनीषियों को इसके बारे में पता नहीं था। भारतीय मनीषियों ने इनका वर्णन क्रमशः अरुण, वरुण तथा यम के नाम से किया है। परन्तु इनका अस्तित्व पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण तथा सूर्य की परिक्रमा अधिक वर्षों में पूरा करने के कारण कम होता है कि जातक का जीवन ही पूरी हो जाता है। जैसे प्लूटो सूर्य की परिक्रमा 248 वर्ष में पूरी करता है। नेप्च्यून सूर्य परिक्रमा 164.8 वर्ष में पूरी करता है। इसलिए जातक के जीवन में इन ग्रहों का अधिक महत्त्व नहीं है।

2.3.3 नव–ग्रह

सूर्य –

पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाते हुए अंतरिक्ष में घूमती है। सूर्य को मिलाकर सूर्य का यह परिवार सौर मण्डल कहलाता है। इसकी उत्पत्ति कम से कम 5 अरब वर्ष पहले हुई है जिसमें नौ ग्रह 33 चन्द्रमा हैं तथा कई हजार छोटे–छोटे ग्रह और ग्रहिकाएं भी सम्मिलित हैं। सूर्य, सौर मंडल के बीच सबसे विशाल पिण्ड है। यह चमकती हुई गैस का विशाल गोला है। सूर्य का व्यास 13,92,000 किलो–मीटर का है अर्थात् 8,65,000 मील है जबकि पृथ्वी का व्यास 13,000 किलोमीटर है। सूर्य की सतह पीली व गरम है तथा वहाँ का तापमान 6000° है जबकि सूर्य के भीतर का ताप लगभग 1,30,00,000 डिग्री है।

हमारा सूर्य एक तारा है। यह अनेक तारों में से एक है। तारों के मंडल अर्थात् नक्षत्र मंडल को "आकाश गंगा" कहते हैं और यह आकाश गंगा बहुत अधिक विशाल है। अंतरिक्ष में ज्ञात यह दूसरी सबसे बड़ी आकाश गंगा है। इससे बड़ी विशाल ज्ञात आकाश गंगा को " एंड्रीमेडा " कहा जाता है। सूर्य अपने परिवार के ग्रहों के साथ धीरे–धीरे आकाश गंगा के केन्द्र के चारों ओर घूमता है। इसे एक यात्रा पूरी करने में लगभग 225 अरब वर्ष लगते हैं।

सूर्य का अधिकतम भाग हाइड्रोजन गैस के रूप में है जो धीरे–धीरे ऊर्जा छोड़ते हुए हीलियम गैस में परिवर्तित होती रहती है।

सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर अपनी कक्षा में चक्कर लगाते रहते हैं तथा वे अपनी कक्षा में सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण बने रहते हैं।

बुध –

सूर्य के सबसे निकट ग्रह बुध है जो सूर्य से लगभग 5,79,00,000 किलोमीटर दूर है। इसका व्यास लगभग 4890 किलोमीटर है। इसका तापमान लगभग 400 डिग्री है। चूंकि 400 डिग्री पर सीसा भी पिघल जाता है अत : यहाँ यान आदि उतारना संभव नहीं तथा जीवन होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यहाँ का जल कभी का भाप बनकर उड़ चुका है, अतः यहाँ पर शुष्क तथा गर्म पत्थर है। जिसके संपर्क में आते ही कोई भी चीज जल जायेगी। अतः बुध का वातावरण निष्प्राण है। बुध ग्रह लगभग 21 से 30 दिनों में एक राशि से गुजरता है। बुध का कोई उपग्रह नहीं है। इस पर वायुमंडल भी नहीं है।

शुक्र –

सूर्य से गिनने पर यह सौर मंडल का दूसरा ग्रह है। शुक्र का कोई भी उपग्रह नहीं है। इसकी कक्षा क्रान्तिवृत्त से 3 डिग्री 38 कला के झुकाव पर है। शुक्र ग्रह पृथ्वी के सबसे पास वाला ग्रह है। सूर्य से शुक्र ग्रह की दूरी लगभग 10,82,00000 किलोमीटर[?] है तथा पृथ्वी से शुक्र ग्रह की दूरी 4,13,98,000 किलोमीटर है। शुक्र ग्रह का औसत व्यास 12,320 किलोमीटर है। शुक्र ग्रह के चारों ओर घना वायुमण्डल है। टेलीस्कोप से देखने पर शुक्र ग्रह सफेद रंग की रुई का गोला दिखाई देता है। शुक्र के बादलों की ऊपरी सतह गंधक के तेजाब की बून्दों से बनी हुई है जिसके कारण यह सूर्य के प्रकाश को बहुत अधिक परावर्तित कर पाता है। जब सूर्य की किरणें शुक्र पर एक ओर पड़ती हैं तो वह आधा दिखाई पड़ता है। शुक्र के वायु मण्डल में विषैली गैसें हैं जिसके कारण वहाँ सांस नहीं ली जा सकती है। इसके वातावरण में सबसे अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड पाई जाती है। सौन्दर्य की देवी को तथा शुक्र को अंग्रेजी में 'वीनस' कहते हैं। पृथ्वी से देखने पर शुक्र ग्रह शाम को पश्चिम में तथा प्रातःकाल पूर्व दिशा में दिखाई देता है।

मंगल –

सूर्य से दूरी के आधार पर मंगल चौथा ग्रह है। सूर्य से इसकी दूरी 22,79,00000 किलोमीटर है। पृथ्वी से मंगल ग्रह की दूरी 10,06,30,000 किलोमीटर है। इसे अपनी धुरी पर घूमने में 23 घंटा 56 मिनट 4 सेकेण्ड लगते हैं। लगभग प्रत्येक 15वें वर्ष में मंगल ग्रह पृथ्वी के अत्यधिक पास आ जाता है। जब 15वें वर्ष यह ग्रह पृथ्वी के निकटस्थ होता है उस समय पृथ्वी से इसकी दूरी

करीब 5,50,09000 किलोमीटर होती है । इसका व्यास लगभग 6800 किलोमीटर है। यह सूर्य की परिक्रमा लगभग 687 दिनों में पूरी कर लेता है। इसकी गति में परिवर्तनशीलता है। अपने भ्रमण के दौरान जब मंगल सूर्य के अत्यधिक करीब होता है तब इसकी गति सबसे तेज होती है जब मंगल ग्रह पृथ्वी के पास होता है तब इसे सुर्ख लाल चमकीले गोले के रूप में देखा जा सकता है। मंगल ग्रह के दो उपग्रह अभी तक ज्ञात हुये हैं। जिन्हें डैमॉस तथा फैबॉस के नाम से जाना जाता है। मंगल ग्रह पर जीवन के कोई भी लक्षण अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं ।

बृहस्पति (गुरु) :

सूर्य से दूरी के आधार पर यह पाँचवाँ ग्रह है। इसकी सूर्य से दूरी लगभग 77,83,00000 किलोमीटर है तथा पृथ्वी से इसकी दूरी 59,06,28,000 किलोमीटर है। यह लगभग 12 वर्ष कुछ माह में सूर्य की एक परिकमा पूरी कर लेता है अर्थात् एक राशि में लगभग एक वर्ष कुछ दिन रहता है।

बृहस्पति सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। अतः इसे गुरु ग्रह के नाम से भी जाना जाता है। अपनी धुरी पर यह तेजी से घूमता है। उस पर पाये जाने वाले मुख्य तत्व हाइड्रोजन तथा हीलियम हैं। थोड़ी मात्रा में यहाँ अमोनिया, मिथेन तथा अन्य तत्व भी पाये जाते हैं। दूरबीन से देखने पर बृहस्पति ग्रह के दोनों ओर एक लाइन में चार छोटे–छोटे तारे दिखाई देते हैं। बृहस्पति में चार उपग्रह हैं जिन्हें इओ, यूरोपा, गेनिमीड तथा कलिस्बो के नाम से जाना जाता है। इओ उपग्रह बृहस्पति के पास का उपग्रह है जो टेलीस्कोप से देखने पर चमकीला सफेद तारा जो ध्यान देने पर पीला सा दिखाई देता है. इसे उत्तरायण में उत्तर दिशा की तरफ जहाँ से सूर्य दिन में गुजरता दिखाई दे देखा जा सकता है। तथा दक्षिणायन में सूर्य के पथ की दक्षिण दिशा में इसे रात्रि में देखा जा सकता है। बृहस्पति के अब तक 16 उपग्रह ज्ञात किये जा चुके हैं ।

शनि –

सूर्य से दूरी के आधार पर यह छठा ग्रह है। इसकी सूर्य से दूरी 1,42,70,00,000 किलोमीटर है। यह क्रान्तिवृत्त पर 2 डिग्री 49 कला झुका हुआ है। इसकी कोणीय गति कम है तथा यह अपनी कक्षा पर भी कम गति से चलता है। धीमी (शनैः) गति होने के कारण इसे शनैश्चर के नाम से भी जानते हैं। सूर्य की परिक्रमा करने में इसे लगभग 30 वर्ष का समय लगता है। तथा एक राशि में भ्रमण करने में 30 माह का समय लगता है। शनि ग्रह के अभी तक 21 उपग्रहों की जानकारी प्राप्त की जा चुकी है। इसका सबसे पहले पाया जाने वाला उपग्रह "टाइटन" है तथा दूसरा उपग्रह फोबॉस है

जो ग्रह का सबसे अधिक दूरी का उपग्रह है। शनि के किसी चुम्बकीय क्षेत्र की जानकारी नहीं है तथा यहाँ नाइट्रोजन गैस बहुतायत से पायी जाती है।

चन्द्रमा –

चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। पृथ्वी से उसकी औसत दूरी 3,84,400 किलोमीटर की है। चन्द्रमा को पृथ्वी की परिक्रमा करने में 27.32 दिन लगते हैं अतः एक राशि में यह सवा दो दिन रहता है। चन्द्रमा पर वायुमंडल और जल तत्व नहीं है। चन्द्रमा पर कहीं लम्बे चौड़े मैदान हैं तो कहीं मिट्टी के बड़े–बड़े पर्वत हैं और कहीं खाईयाँ हैं। चन्द्रमा के धरातल का गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल का लगभग 20 प्रतिशत अर्थात् चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से लगभग 5 गुना है।

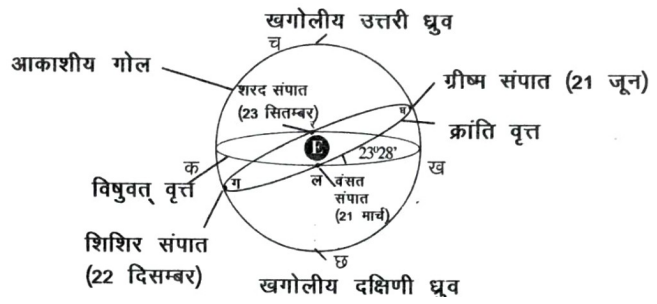
जैसा कि सब जानते हैं पृथ्वी से देखने पर चन्द्रमा का प्रकाश (कलाएँ) प्रतिदिन घटता बढ़ता रहता है। इसका कारण यह है कि चन्द्रमा अपने पथ पर भ्रमण करते हुए जैसे–जैसे सूर्य के पास आता जाता है वैसे–वैसे उसका प्रकाश कम होता जाता है तथा उसका आकार भी छोटा होता जाता है। जब चन्द्रमा सूर्य के बहुत पास आ जाता है तब वह सूर्य के प्रकाश से दिखाई नहीं देता। वह दिन अमावस्या कहलाता है। पंचाँग में इसीलिये अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि में होते है तथा सूर्य चन्द्रमा के बीच 12 डिग्री के अन्तर तक चन्द्रमा अस्त माना जाता है। जैसे–जैसे चन्द्रमा सूर्य से दूर होता जाता है उसका प्रकाश और आकार बढ़ता जाता है तथा जब चन्द्रमा सूर्य से अधिकतम दूरी 180° पर होता है तब वह पूर्ण चन्द्रमा के रूप में दिखलाई देता है इस दिन को पूर्णिमा कहते हैं (सूर्य तथा चन्द्र में 6 राशि का अन्तर होता है अर्थात् कुण्डली में सूर्य के सामने वाले भाव में चन्द्रमा होता है) चन्द्रमा की यह दोनों स्थितियाँ 15–15 दिन में आती हैं अतः जब चन्द्रमा सूर्य के निकट से दूर जाने लगता है तब उन 15 दिन के पक्ष को शुक्ल पक्ष कहते हैं। तथा पूर्णिमा (सूर्य से चन्द्रमा की अधिकतम दूरी) के बाद जब चन्द्रमा सूर्य के निकट आने लगता है तब उन 15 दिनों के पक्ष को कृष्ण पक्ष कहते हैं जो चन्द्रमा पूर्ण अस्त होने तक (अमावस्या) रहता है ।

राहु केतु के संपात बिंदु

सूर्य एक तारा है तथा चन्द्रमा उपग्रह। भारतीय ज्योतिष पद्धति में बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति तथा शनि ग्रहों को हो मान्यता दी है। वास्तव में (Planet) प्लानेट का हिन्दी रूपान्तर ग्रह उचित नहीं क्योंकि भारतीय पद्धति उसको ग्रह मानती है जिसका प्रभाव हम ग्रहण करते हैं या जिसका अस्तित्व हमें प्रभावित करता है। इसलिये भारतीय पद्धति ने सूर्य चन्द्रमा, राहु तथा केतु को

भी ग्रह माना है। जबकि राहु तथा केतु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं। यह हम जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का तथा चन्द्रमा पृथ्वी का वृत्ताकार परिभ्रमण करते हैं।

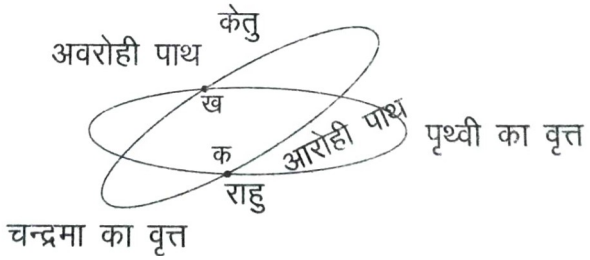
जहां यह दोनों वृत्त एक–दूसरे को काटते हैं उन बिन्दुओं को राहु तथा केतु कहते हैं। चित्र में क, ख राहु तथा केतु हैं।



2.4 खगोलीय परिभाषायें

2.4.1 भूमध्यरेखा (EPLIPTIC)

भूमध्य रेखा पृथ्वी पर वह काल्पनिक वृत्ताकार रेखा है जो पृथ्वी को दो समान उप भागों में (उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिणी गोलार्द्ध) में बांटती हैं। चित्र में गोल को पृथ्वी मान लेते हैं जिसमें च उत्तरी ध्रुव तथा छ दक्षिणी ध्रुव हैं इसमें क ल ख महावृत्त हैं जिसे भूमध्यरेखा या विषुवत् रेखा Epilitic कहते हैं। यह पृथ्वी के अक्ष अर्थात् धुरी जिसके चारों ओर पृथ्वी घूमती है पर लम्बवत् है। पृथ्वी का अक्ष च उत्तरी ध्रुव छ दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली रेखा ही है। भूमध्य रेखा क ल ख इस पर समकोण बनाती है। भूमध्यरेखा के सभी बिन्दु उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर ही हैं।



2.4.2 मध्याह्नरेखा (MERIDIAN)

पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव च दक्षिणी ध्रुव छ जिन्हें हम भौगोलिक ध्रुव भी कहते हैं को मिलाने वाली रेखा को मध्याह्नरेखा (Meridian) कहते हैं। यह मध्याह्नरेखा, भूमध्यरेखा को 90° समकोण के कोण पर काटती है।

2.4.3 मानक मध्याह्नरेखा (Principal Meridian) :

पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली वो काल्पनिक रेखा जो ग्रीनविच से होकर गुजरती है उसे मानक मध्याह्नरेखा (Principal Meridian) कहते हैं तथा अन्य वे सभी रेखाएं जो उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों को मिलाती है मध्याह्नरेखा (Meridian) कहलाती हैं।

2.4.4 अक्षांश (LATITUDE):

अक्षांश वह वृत्त खंड है जो भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण में खींचा जाता है। इसके द्वारा यह पता लगता है कि कोई स्थान भूमध्यरेखा से कितना उत्तर या दक्षिण में है। भूमध्यरेखा पर अक्षांश 0 होगा। उत्तरी गोलार्द्ध में जो स्थान होगा उसे उत्तरी अक्षांश तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में जो स्थान होगा उसे दक्षिणी अक्षांश कहा जायेगा।

90 अंश उत्तरी अक्षांश उत्तरी ध्रुव तथा 90 अंश दक्षिणी अक्षांश दक्षिणी ध्रुव है ।

रेखांश या देशान्तर (LONGITUDE)

इससे यह मालूम होता है कि कोई स्थान एक निश्चित स्थान जिसे ग्रीनविच कहते हैं से कितना पूर्व या पश्चिम में है। विश्व के सब नगर ग्रीनविच से पूर्व या पश्चिम में है। अतः देशान्तर रेखाएं पृथ्वी की सतह पर यह काल्पनिक वृत्त है जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव से होकर गुजरती हैं। एक देशान्तर रेखा से दूसरी देशान्तर रेखा 4 मिनट का अन्तर दर्शाती है।

2.4.5 क्रान्तिवृत्त –

सूर्य का पथ जो एक काल्पनिक वृत्त है। जिस पथ पर सूर्य भ्रमण करता हुआ दिखाई देता है उसे क्रांतिपथ या क्रान्तिवृत्त कहते हैं ।

2.4.6 भचक्र (Zodic)

आकाश में क्रान्तिवृत्त के उत्तर में 9 अक्ष चौड़ी तथा 0 अंश दक्षिण में चौड़ी काल्पनिक पट्टी जिसमें सभी ग्रह विचरण करते हुए दिखलाई देते हैं भचक्र Zodic कहलाता है।

2.4.7 अयनांश AYANAMSA

निरयन मेष प्रथम बिन्दु और बसंत सम्पात बिन्दु के बीच के कोणीय अन्तर को अयनांश कहते हैं।

2.5 अधिक मास

हिन्दी महीने चैत्रादि एक वर्ष में 12 महीने ही होते हैं। प्रत्येक महीने में अंग्रेजी 15 तारीख के पास सूर्य अपनी राशि का परिवर्तन कर अगली राशि में प्रवेश करता है। इस प्रकार बारह महीनों में बारह संक्रान्तियाँ आती हैं। तिथियों के इस घटने बढ़ने के कारण जब किसी महीने में संक्रान्ति नहीं आती है तब उसी महीने की वृद्धि हो जाने से उस वर्ष उसे अधिक मास के नाम से जाना जाता है। इस अधिक मास को लोग पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। यह 32 माह 16 दिन तथा 4 घटी के अन्तर से आता रहता है।

क्षय मास :

गणना के आधार पर जब एक ही महीने के अन्दर दो बार संक्रान्ति आ जाती है तब उस महीने के एक पक्ष का क्षय मान लिया जाता है तथा वह महीना 30 दिनों के स्थान पर 15 दिन का ही महीना मान लिया जाता है। अतः जब 30 दिन के भीतर दो बार सूर्य संक्रान्ति हो जाये तो उस महीने को क्षय मास के नाम से जाना जाता है। क्षय मास 141 वर्ष बाद और फिर 19 वर्ष बाद पुनः आता है। तिथियाँ तथा नक्षत्र मान में घटा बढ़ी होने के कारण कभी–कभी एक नक्षत्र पूर्णिमा के दिन किसी माह में आगे पीछे भी हो सकता है।

तिथि–वृद्धि–क्षय

शुक्ल पक्ष में 15 तिथियाँ होती हैं तथा कृष्ण पक्ष में भी 15 तिथियाँ होती हैं। सूर्योदय के समय जो तिथि होती है उस दिन उसी तिथि को माना जाता है।

तिथि–वृद्धि –

परन्तु कभी–कभी एक ही तिथि सूर्योदय के समय लगातार दो दिन भी आ जाती है उस दिन को तिथिवृद्धि कहते हैं।

तिथि–क्षय :

जब कोई तिथि सूर्योदय के बाद आरंभ होती है तथा दूसरे दिन सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जाती है तो उसे तिथिक्षय कहते हैं।

दिन रात तथा ऋतुओं का निर्माण सूर्य से होता है। हिन्दू ज्योतिष में दिन सूर्योदय से दूसरे दिन पुनः सूर्योदय होने तक को मानते हैं। सूर्य जब आकाश मध्य (सिर) पर होता है तो स्थानीय दोपहर होती है। पृथ्वी नारंगी के समान गोल है और अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर

घूमती है इसलिये सूर्य प्रतिदिन पूर्व के देशों व नगरों में पहले दिखाई देता है और पश्चिम के देशों व नगरों में बाद में दिखाई देता है इसलिये सूर्योदय का समय सब स्थानों पर अलग–अलग होता है।

2.7 स्थानीय–समय (Local mean time)

सूर्य, पूर्व के देशो में पहले दिखाई देगा तथा पश्चिम के देशों–नगरों में बाद में दिखाई देगा इसलिये प्रत्येक स्थान नगर का स्थानीय समय भी अलग–अलग होगा। लेकिन समय के गुजरने की दर से समानता लाने के लिये हम स्थानीय औसत समय (Local mean time) मान लेते हैं इसे L.M.T लिखते हैं। यह समय किसी भी स्थान के अक्षांश Latitude और देशांतर रेखांश (Longitude) पर निर्भर करता है। ज्योतिष में लग्न–स्पष्ट करने के लिये सबसे पहले दिये हुए मानक समय को स्थानीय औसत समय L.M.T में बदलते हैं।

2.8 मानक समय (Standard Time) :

देश किसी भी स्थान से बड़ा होता है। संचार साधनों के विकास, आने जाने की सुविधाओं के विस्तार के कारण देश एक यूनिट हो गया है। यातायात के साधनों के विस्तार सुधार तथा विकास होने के फलस्वरूप एक नगर दूसरे नगर से जुड़ गया है। डाक, तार टेलीफोन ई मेल, वेब साइट आदि संचार साधनों से सभी देश एक दूसरे से जुड़ गये हैं। अतः किसी देश में प्रत्येक शहर नगर–पोस्ट गांव का समय एक ही हो इसकी आवश्यकता का अनुभव किया गया। पहले भारत में प्रान्त के अनुसार अलग–अलग समय थे, जैसे बंगाल टाइम, असम टाइम, मद्रास टाइम आदि। इसमें गणनाओं तथा व्यवस्थाओं में जटिलता थी। पंचाँगों की गणनाओं में अन्तर तथा क्लिष्टता थी। इसे ध्यान में रखते हुए सन् 1906 ई0 में यह निर्णय लिया गया कि 82°30° देशान्तर को भारत INDIA का मानक मध्याह्नरेखा के रूप में लिया जाये। यह भारत का मानक समय zonal time है। आज हमारी घड़ियाँ उसी समय के अनुसार चलती हैं तथा इसी समय के अनुसार सभी कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। इसी समय पहले भारतवर्ष में सूर्य घड़ी का भी प्रचलन था जिससे स्थानीय समय की जानकारी प्राप्त की जाती थी। आज स्थानीय समय तथा सूर्य घड़ी की सोच भी नहीं रही है तथा सामान्य वर्ग को उसकी जानकारी भी नगण्य है। आज ज्योतिष में मानक समय Standard time से स्थानीय रामय निकाला जाता है। ग्रीनविच माध्य समय (Green witch Mean time) G.M.T) यातायात एवं संचार संसाधनों के विस्तार एवं विकास के कारण सम्पूर्ण विश्व एक सा हो गया है इसलिये अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी समय की आवश्यकता महसूस हुई जिससे विश्व के सभी देश एक दूसरे से समय के प्रारूप में जुड़ सकें। समय की इस आवश्यकता को देखते हुए ग्रीनविच के मध्य से गुजरने वाली मध्याह्नरेखा

(Maridian) को शून्य मान लिया गया तथा देशों के मानक समय उसके अनुसार निर्धारित किये गये।

समय का रूपान्तरण (Time Conversion)

G.M.T से देशों में समय का रूपान्तरण कैसे संभव हुआ। इसे समझने के लिये अपने ही देश भारतवर्ष का उदाहरण लेते हैं जैसा कि आप समझ चुके हैं तथा जानते भी हैं·कि 24 घंटे (दिन–रात) में पृथ्वी का चक्र (360°) पूरा हो जाता है अर्थात् पृथ्वी 24 घण्टे में 360° घूम लेती है।

360° घूमने में पृथ्वी को लगते हैं 24 घण्टे

360° घूमने में पृथ्वी को लगते हैं 24 x 60 minute

1° ,, $\frac{24 \times 60}{360}$ = 4 minute

जो समय स्थान ग्रीनविच के पूर्व में है उसमें ग्रीनविच के समय में जोड़ा जायेगा तथा जो देश ग्रीनविच के पश्चिम में है उसमें ग्रीनविच के समय में दर्शाया जायेगा।

उदाहरण देश : भारत वर्ष

भारत वर्ष में मानक मध्याह्नरेखा का देशान्तर 82° – 30′ पूर्व है

तथा ऊपर से 1° – 4 मिनट

82° = 82 x 4 = 328 Minute

30° = 30 x 4 = 120 Second

82° _ 30° = 328 Min + 120 Second = 328 + 2 = 330 Minutes

जोड़ने पर = 1 घंटा = 60 मिनट, इसलिये

330 मिनट = 5 घंटा 30 मिनट

भारतवर्ष ग्रीनविच से पूर्व में स्थित है, इसलिये ग्रीनविच के समय में 5 घण्टा 30 मिनट जोड़े जायेंगे यदि ग्रीनविच में समय 0 घण्टा 0 मिनट (मध्य रात्रि) है तो भारत में सुबह के 5 घंटा 30 मिनट समय होगा तथा यदि ग्रीनविच में दोपहर के 12.00 बजे हैं तो भारत में 12.00 – 5.30 = 17 .30 घण्टे अर्थात् शाम के साढ़े पांच बजे होंगे।

(Local mean time) L.M.T

स्थानीय समय संस्कार समय की वह अवधि है, जो किसी स्थान के स्थानीय औसत समय L.M.T को उस देश के मानक समय से ज्ञात करने के लिये काम में लेते हैं। इस स्थानीय मानक समय संशोधन को उस देश के मानक समय में यदि स्थान, मानक स्थान से पश्चिम में है तो मानक समय में से अन्तर को घटाया जायेगा। इसे एक उदाहरण से इस प्रकार स्पष्ट करते हैं –

जयपुर (राजस्थान) का देशान्तर 75°–49′ है । यहाँ e का अर्थ है East अर्थात् पूर्व

जयपुर भारत के मानक स्थान 82° – 30 ′ (वाराणसी के पास) से पश्चिम में है तो अन्तर घटाया जायेगा –

मानक स्थान – जयपुर देशान्तर

82° – 30′ – 75° – 6.44

1^{0-} 4 मिनट

6.44 – 6 x 4 + 44 X 4

= 24 Minut + 164 Second

= 26 Minutes 44 Second

यह 26 मिनट 44 सेकेण्ड जयपुर के लिये Local mean time correction हुआ जिसे भारत के मानक समय (आई एस आई) में से घटाकर जयपुर का स्थानीय समय प्राप्त कर सकते हैं। जैसे

घड़ी में प्रात : काल के 8 बजे हैं यह ISI Time हुआ

जयपुर का स्थानीय समय ISI (L.M.T Correction) = (8000 Min.) - (0.26 Hrs. 26 Min. 44 Sec

08	00	00
	26	44
07	33	16

7 बजकर 33 मिनिट 16 सेकेण्ड जयपुर का स्थानीय समय हुआ

नोट – भारत का मानक समय देशान्तर 82° 30′ है जिन शहरों नगरों का देशान्तर इससे अधिक होगा सब यहाँ से पूर्व में होंगे। जिनके स्थानीय समय संस्कार को आई0एस टी में जोड़ा जायेगा तथा जिन नगरों स्थानों का देशांतर 82 डिग्री 30′ से कम है वह सब यहाँ से पश्चिम में होंगे। अतः उनके स्थानीय संस्कार को आई0 एस0टी में से घटाया जायेगा जिससे वहाँ का स्थानीय समय प्राप्त होगा। जैसे उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है।

2.10 इष्ट–साधन

देशी भारतीय पंचाँगों में प्रत्येक दिन का सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया होता है। पहले पंचाँगों में यह सूर्योदय एवं सूर्यास्त स्थानीय समय में दिया जाता था परन्तु आजकल पंचाँग निर्माता भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम (I.S.I) से भी सूर्योदय एवं सूर्यास्त देते हैं। ध्यान यह रखना होगा कि जन्म समय भा0 स्टे0 टाइम में है तो उस स्थान (जन्म स्थान) का सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में ही लेना होगा। यदि सूर्योदय स्थानीय समय में है तो जन्म समय को भी स्थानीय समय में लेना होगा।

जन्म समय में से उस दिन का सूर्योदय समय घटाकर यह मालूम करें कि सूर्योदय से कितने घण्टे, मिनट, सेकेण्ड के बाद जन्म समय तक का क्या अन्तर (डिफरेन्स) है। इस अन्तराल का ढाई गुणा कर जो संख्या आये वही जातक का इष्टकाल होगा , यथा –

सूर्य उदय से जन्म लो बंटादिक सब लेहु।
वाके कर ढाई गुणा, इष्टकाल कहि देहु॥

उदाहरण –

मान लो किसी जातक का जन्म 27 जुलाई 2010 को सायंकाल 6 बजकर 17 मिनट (I.S.T) पर जयपुर में हुआ। 27 जुलाई 2010 को सूर्योदय जयपुर पंचाँग में 5.53 आई.एस0टी है तब शाम को 6.17 बजे अर्थात् रेलवे अनुसार 18.17 I.S.T में से सूर्योदय 5.53 को घटाया।

18.17 - 5 .53 = 12.24 Hours अर्थात् सूर्योदय से जन्म समय के बीच 12 घण्टे 24 मिनट का अन्तराल आया। 12 घण्टे 24 मिनट को ढाई गुणा ($2^1/_2$ गुणा) किया तो यह 31 घटी 00 पल आया अर्थात् 31 / 00 इष्ट काल हुआ।

2.11 सारांश :

ज्योतिष के अध्ययन में खगोल एवं समय का महत्वपूर्ण स्थान है। आपने खगोल शास्त्र के सामान्य परिचय के साथ–साथ अधिक मास व क्षय मास के विषय में पढ़ा। तिथियों के घटने बढ़ने और स्थानीय समय, मानक समय, इष्टकाल तथा समय के परिवर्तन का विस्तार से अध्ययन किया। जन्म कुण्डली के निर्माण में खगोल व समय सम्बन्धी इस ज्ञान से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

2.12 शब्दावली

भचक्र – राशि चक्र

अक्षांश – भूमध्य रेखा के समानान्तर रेखा

रेखांश – पृथ्वी के अक्ष के समानान्तर रेखा

अभ्यास प्रश्न

1 सौर मण्डल में कितने ग्रह है ?

2 यूरेनस, प्लूटो, नेपच्यून की खोज कब हुई ?

3 क्रांतिवृत्त क्या है ?

4 अयनांश किसे कहते हैं ?

5 भचक्र किसे कहते हैं ?

6 अक्षांश किसे कहते हैं ?

2.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सौर मण्डल में 9 ग्रह हैं।

2. यूरेनस की 1781, नेपच्यून की 1846 एवं प्लूटो की खोज 1930 में हुई।

3. सूर्य का पथ जो एक काल्पनिक वृत्त है। जिस पथ पर सूर्य भ्रमण करता हुआ दिखाई देता है उसे क्रांतिपथ या क्रा[अपठनीय]ते हैं ।

4. निरयन मेष प्रथम बिन्दु और बसंत सम्पात बिन्दु के बीच की कोणीय अन्तर को अयनांश कहते हैं।

5. आकाश में क्रान्तिवृत्त के उत्तर में 9 अक्ष चौड़ी तथा 0 अंश दक्षिण में चौड़ी काल्पनिक पट्टी जिसमें सभी ग्रह विचरण करते हुए दिखलाई देते हैं भचक Zodic कहलाता है।

6. अक्षांश वह वृत्त खंड है जो भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण में खींचा जाता है।

2.14 संदर्भ ग्रंथ / सूची

1. भारतीय ज्योतिष – नेमिचंद्र शास्त्री – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

2. बृहत् पाराशर होरा शास्त्र

3. सरल ज्योतिष – अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

2.15 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. इंटरनेट साइट http ://www.skymap.com

2. अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ द्वारा प्रकाशित 'सरल ज्योतिष'

2.16 निबन्धात्मक प्रश्न

1 सौर मण्डल क्या है ? सौर मण्डल में स्थित ग्रहों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुये बतायें कि आन्तरिक एवं बाह्य ग्रह क्या हैं?

3 सभी नौ ग्रहों के उपग्रहों को बताते हुये इनकी भौगोलिक संचरना का विस्तृत वर्णन करें।

इकाई – 3 भचक्र में राशियों एवं नक्षत्रों का विभाजन

3.1 **प्रस्तावना**

3.2 **उद्देश्य**

3.3 **भचक्र में राशियों एवं नक्षत्रों का विभाजन**

3.3.1 खगोलीय विषुवत् वृत्त (Celestial equator)

3.3.2 क्रान्ति–वृत्त

3.3.3 भचक्र (Zodiac)

3.3.4 खगोलीय अक्षांश

3.3.5 भोगांश

3.3.6 क्रांति

3.3.7 अयनांश (Ayanamsa)

3.4 **अथ जन्म नक्षत्र फलम्**

3.4.1 नक्षत्रों के चरण का फल

3.4.2 गण्डमूल नक्षत्रों का विचार

3.5 **राशि विचार**

3.5.1 राशियों एवं नक्षत्रों का अंश कला में विभाजन

3.5.2 राशि स्वामी (राशि क्रमानुसार)

3.5.3 राशियों का वर्गीकरण

3.5.4 राशियों का स्वभाव

3.5.5 राशियों के तत्व

3.5.6 राशियों के लिंग

3.5.7 राशियों की प्रकृति

3.5.8 राशियों के वर्ण (जातियां)

3.5.9 राशियों की दिशाएं

3.5.10 राशियों के बल

3.5.11 राशियों के पाद

3.5.12 कालपुरुष के अंग

3.6 **सारांश**

3.7 **शब्दावली**

3.8 **अभ्यास प्रश्नों के उत्तर**

3.9 **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

3.10 **सहायक / उपयोगी ग्रन्थ**

3.11 **निबन्धात्मक प्रश्न**

3.1 प्रस्तावना

पूर्व अध्याय में खगोल व काल गणना सम्बन्धी प्रमुख बिन्दुओं का आपने अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप राशियों व नक्षत्रों के भचक्रीय विभाजन का ज्ञान प्राप्त करेंगे। राशियों के नाम व नक्षत्रों के नाम तो सभी जानते हैं, लेकिन राशि व नक्षत्र वास्तव में क्या होते हैं, यह जन सामान्य की जानकारी में नहीं होता है। ज्योतिष के विद्यार्थियों को यह जानना आवश्यक है कि वास्तव में राशि व नक्षत्र क्या होते हैं तथा ब्रह्मांड में इनकी संरचना कैसे होती है। प्रत्येक राशि का अपना एक चिह्न होता है। जिस चिह्न का अपना महत्व होता है जिसके आधार पर ज्योतिषी जातक के गुण स्वभाव आदि की चर्चा कर पाते हैं।

वास्तव में राशि, भचक्र व नक्षत्र कोई ठोस पिण्ड न होकर एक समूह को दर्शाते हैं। जैसे कि भचक्र एवं काल्पनिक पट्टी होती है जो पृथ्वी के अक्षांश से लगभग 9° ऊपर 9° नीचे स्थित होती है। जिसके अंदर चमकने वाले सितारों को यदि देखा जाए तो उससे वे चमकते हुये दूर से देखे जा सकते हैं, टेलीस्कोप की सहायता से इनको चिह्नित करके इनको काल्पनिक रेखाओं से मिलाया जाये तो एक आकृति उभर कर आती है, इसी आकृति के आधार पर राशि चिह्नों को माना गया है। यह राशि चिह्न भचक्र में कैसे दिखायी देते हैं, इसकी एक राशि का मान क्या होता है? इसके अतिरिक्त एक नक्षत्र क्या होता है ? उसके चार चरण कैसे बनते हैं ? तथा एक ही भचक्र में राशि और नक्षत्रों का समावेश व विभाजन किस प्रकार है ? इन सब तथ्यों की जानकारी इस पुस्तक में दी गयी है। इस इकाई के पश्चात् आपको ग्रहों की राशि में स्थिति व राशिफल का ज्ञान बताया जायेगा, जिसके आधार पर ग्रहों की राशि में स्थिति के फल की जानकारी दी जा सकेगी। इस इकाई से आशा है कि विद्यार्थी यदि आकाश में टेलीस्कोप की सहायता से राशि भचक्र को देखेंगे तो आसमान में उसको देखकर चिह्नित कर पायेंगे।

आगामी इकाई में आप सामान्य ज्योतिषीय गणना के केन्द्र पंचांग के विषय में अध्ययन करेंगे।

3.2 उद्देश्य

प्राचीन काल में सर्वप्रथम नक्षत्रों का अविष्कार ज्योतिष में किया गया था। उसके पश्चात् राशियों का अविष्कार किया गया था परंतु आधुनिक ज्योतिष में राशि का प्रचलन अधिक हो गया है। जबकि नक्षत्रों का आधार ज्योतिष की शाखा विशेष में भी देखने को मिलता है। जब कि देखा जाये तो नक्षत्र आधारित ज्योतिष गणना के लिए अधिक सटीक है क्यों कि 360 अंशों का भचक्र यदि राशियों में विभाजित किया जाये तो एक भाग 30 अंशों का बनता है जबकि 27 नक्षत्रों में

विभाजित किया जाये तो एक भाग 13 डिग्री 20 मिनट का बनता है। अर्थात् नक्षत्र का मान अधिक सटीक है।

इस इकाई में इसी तथ्य को समझाने की चेष्टा की गयी है इसके लिए भचक्र का राशि एवं नक्षत्रों, में विभाजन सारणी के रूप में दिया गया है। जोकि स्पष्ट, सरल एवं अपने आप समझ आने वाली विधि से समझाया गया है।

इसके अतिरिक्त इस इकाई द्वारा इस बात को भी स्पष्ट कर सकेंगे कि राशियों का नाम तारों के समूह से उद्यत चित्र पर आधारित है तथा ब्रह्माण्ड में यह किस प्रकार समाहित है। इसके अलावा यह बताने की चेष्टा भी की गयी है कि विशेष राशि में उत्पन्न जातक के गुण स्वभाव आदि किस प्रकार होंगे।

इस इकाई के अध्ययन के बाद –

1. राशियों के नाम, स्वामी व संरचना का ज्ञान हो सकेगा।
2. नक्षत्रों के नाम, स्वामी व संरचना का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
3. खगोलीय तथ्यों से परिचित हो सकेंगे।
4. भचक्र की पहचान कर पायेंगे।
5. भचक्र का राशियों में विभाजन कर पायेंगे।
6. भचक्र का नक्षत्रों में विभाजन क्रम को सीख पायेंगे।
7. भचक्र का राशि में अंशों पर विभाजन कर सकेंगे।
8. भचक्र का नक्षत्रों में अंशों पर विभाजन कर पायेंगे।

3.3 भचक्र में राशियों एवं नक्षत्रों का विभाजन

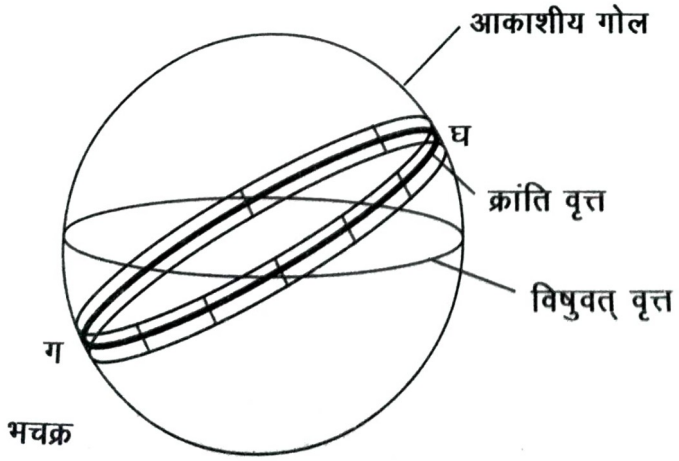
3.3.1 खगोलीय विषुवत् वृत्त (Celestial equator)

खगोलीय विषुवत् वृत्त ब्रह्माण्ड का वह बृहत् वृत्त है जिसका तल खगोलीय ध्रुवों को मिलाने वाली रेखा को समकोण पर काटता है। अर्थात् भू–मध्य रेखा का ब्रह्माण्ड में अनंत तक विस्तार ही विषुवत् वृत्त कहलाता है।

3.3.2 क्रान्ति–वृत्त

नक्षत्र–मंडल में सूर्य जिस पथ पर भ्रमण करता हुआ दिखाई पड़ता है उसे क्रांतिपथ या क्रान्ति वृत्त कहते हैं। ग, घ क्रान्ति वृत्त है।

क्रांतिवृत्त का तल विषुवत् वृत्त के तल के साथ $23°–28'$ का कोण बनाता है।



3.3.3 भचक्र (Zodiac)

भचक्र आकाश में वह काल्पनिक पट्टी है जो क्रांति वृत्त के 9° उत्तर 9° दक्षिण तक फैली हुई है। जिसमें सभी ग्रह–नक्षत्र विचरण करते हुए दिखाई देते हैं।

इसको इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि जैसे 12 इंच के एक प्लास्टिक के पारदर्शी पैमाने को गोल करके ब्रह्मांड के चारों ओर लगा दिया जाये और इसमें जो एक–एक इंच के निशान होंगे वह एक–एक राशि को दिखा रहे होंगे तथा इसमें और छोटे–छोटे भाग के निशान नक्षत्रों को दिखा रहे होंगे।

वास्तव में ब्रह्मांड में ऐसा कोई पैमाना या मीटर नहीं लगा होता है, ऐसी कल्पना की जाती है कि यह पैमाना क्रांतिवृत्त के 9° उत्तर की ओर 9° दक्षिण की ओर गोल करके पृथ्वी के चारों ओर लगा हुआ है। अब पृथ्वी से यदि हम किसी ग्रह को देखेंगे तो जो ग्रह जिस राशि के आगे दिखायी देता है, हम कहते हैं वह ग्रह उस राशि में स्थित है।

दूसरी बात यह है कि कैसे जानें कि किस जगह कौन सी राशि स्थित है। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि राशि कोई ग्रह के समान ठोस पिण्ड या वायु पिण्ड नहीं होता है। बल्कि यह तो एक तारे का समूह होता है। यह समूह इस प्रकार होता है कि यदि उसमें मुख्य तारों अर्थात् सबसे अधिक चमकने वाले तारों को चिह्नित कर लिया जाये और उन सभी चिह्नित तारों को एक काल्पनिक रेखा से जोड़ा जाये तो एक आकृति बन जाती है। इसी काल्पनिक आकृति के आधार पर हम उसे एक राशि का नाम दे देते हैं।

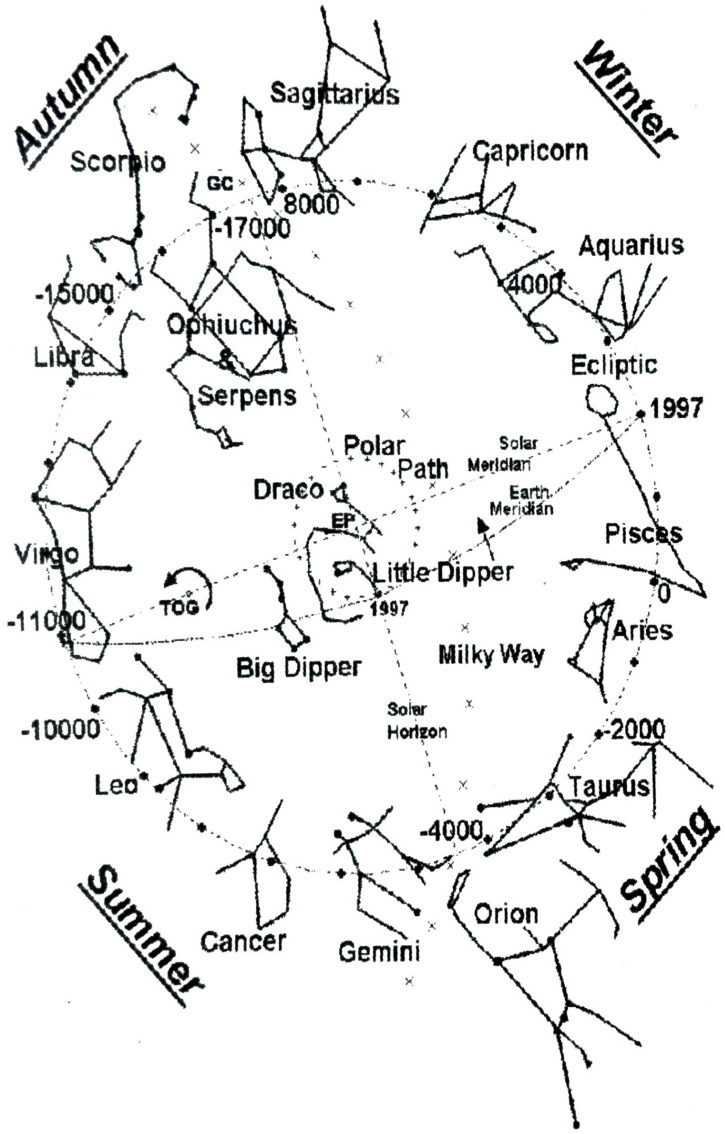
मान लीजिये हमने कुछ तारों को चिह्नित किया और उनको काल्पनिक रेखा द्वारा मिलाकर देखा तो एक बैल की आकृति प्रतीत होती है, तो हमने उसका नाम वृष राशि रख दिया। वृष का मतलब होता है 'बैल' इस प्रकार वृष राशि का निर्माण हो गया। इसी प्रकार अन्य आकृतियों के आधार पर अन्य राशियों का निर्माण हो गया।

यहां पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि वहां कोई सीमा रेखा भी नहीं खिंची होती है इसलिए हम यहां दूरी को कोणीय दूरी में नापते हैं और ऐसा हम प्रत्येक 30° के भाग में ही खोजते हैं और तारों को चिह्नित करके आकृति के आधार पर राशि निर्धारित करते हैं।

आपको बताना चाहेंगे कि एक वृत्त का पूरा कोणीय मान 360° होता है। इस प्रकार पूरे वृत्त को 12 बराबर भागों में विभाजित करने पर एक भाग का मान 30° होता है और यही एक भाग एक राशि कहलाती है।

इसी प्रकार यदि इसी भचक्र को 12 की जगह 27 भागों में विभाजित करेंगे तो एक भाग का मान 13° 20′ आयेगा। चूंकि 360° / 27 = 13° 20′। अब इस एक भाग को एक नक्षत्र की संज्ञा दी जाती है। इसमें भी राशि के समान कुछ चमकते हुये तारों को पृथ्वी से टेलीस्कोप की सहायता से किसी अन्य मशीनरी या उपकरण की सहायता से देखकर चिह्नित किया जाता है और इनमें सबसे अधिक चमकते हुये सितारों को काल्पनिक रेखा द्वारा जोड़कर जो आकृति उभरती है उसके आधार पर नक्षत्र का नाम दिया जाता है। इसको यदि आगे प्रत्येक नक्षत्र को चार–चार भागों में और विभाजित कर दिया जाये तो नक्षत्र के एक–एक चरण का निर्माण होता है। इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र के चार–चार चरणों को जोड़ा जाये तो भचक्र में कुल 27X4=108 चरण होते हैं।

राशि भचक्र



जातक के जन्म होने पर उसके इसी नक्षत्र व चरण के आधार पर जन्म नामाक्षर दिया जाता है। जो कुल 108 नामाक्षर होते हैं। इन्हीं 108 चरणों को आधार मानते हुये किसी भी मंत्र के जाप की संख्या 108 मानक मानी जाती है। एक चरण का मान अंशों में $13° 20' / 4 = 3° 20'$ तथा मिनटों में $3° 20' = 3°X60'+20' = 180'+20 = 200'$ होता है।

इसी प्रकार एक नक्षत्र का मान अंशों में $13° 20'$ और मिनटों में परिवर्तित करें तो $13°X60'+20' = 780'+20' = 800'$ होता है। नक्षत्र के एक चरण का मान भचक्र की सबसे छोटी इकाई होती है।

इस भचक्र के बारे में भी विद्वानों और वैज्ञानिकों में क्षेत्र के आधार पर मतान्तर है। कुछ विद्वान् जो पश्चिमी देशों के हैं वे मानते हैं कि यह भचक्र स्थिर रहता है और गति में नहीं होता है। यह सन् 285 में नोटिस किया गया और माना गया कि भचक्र कभी भी गतिमान नहीं होता है और स्थिर रहता है। ऐसा सिद्धांत सायन पद्धति को मानने वाले कहते हैं परंतु निरयण पद्धति वाले अर्थात् पूर्वी देशों के विद्वान् इस बात को मानते हैं कि यह भचक्र स्थिर नहीं है और यह भी चलायमान है और यह भचक्र प्रतिवर्ष लगभग 50″.3 प्रति वर्ष की गति से गतिमान् है। इस प्रकार सन् 285 से 2011 तक 1726 वर्षों में लगभग 24° भचक्र अपने स्थान से चल चुका है। ऐसा निरयण पद्धति वाले मानते हैं। यही अंतर अयनांश कहलाता है। अतः जो लोग सायन पद्धति को मानते हैं वे अयनांश संस्कार गणना में प्रयुक्त नहीं करते जबकि जो लोग निरयण पद्धति को मानते हैं के लोग अयनांश संस्कार गणना में प्रयोग करते हैं। यही निरयण पद्धति और सायन पद्धति में मुख्य अंतर है। यही कारण है कि पाश्चात्य ज्योतिष में सूर्य राशि का अपनी वैदिक ज्योतिष में सूर्य राशि से भी लगभग 1 माह का अंतर आ जाता है।

3.3.4 खगोलीय अक्षांश

इसे विक्षेप या शर भी कहते हैं। ब्रह्माण्ड में स्थित किसी भी पिण्ड या ग्रह की स्थिति जानने के लिये ग्रह से क्रांति वृत्त पर लम्बवत् चाप खींचा जाता है। उस चाप की कोणीय दूरी को खगोलीय अक्षांश कहते हैं।

3.3.5 भोगांश

किसी भी आकाशीय पिण्ड का भोगांश, उसके क्रांति वृत्त पर मेष से प्रथम बिन्दु से कोणीय दूरी होती है।

3.3.6 क्रांति

किसी भी आकाशीय पिण्ड से विषुवत् वृत्त पर जो लम्बवत् चाप डाला जाएगा और उसके द्वारा पृथ्वी के केन्द्र पर जो कोण बनेगा उस कोण को पिंड की क्रांति कहते हैं।

3.3.7 अयनांश (Ayanamsa)

बसंत सम्पात बिन्दु और निरयन मेष प्रथम बिन्दु के बीच कोणीय अन्तर को अयनांश कहते हैं।

3.4 अथ जन्म–नक्षत्र–फलम्

अश्विनी : बुद्धिमान[?] चालाक, चुस्त, सुरूप, भाग्यवान्, अलंकारों का शौकीन एवं सुखी।

भरणी : चतुर, पवित्र, सत्यवक्ता, नीरोगी, कृतनिश्चयी, अच्छा, सुखी, धनवान्।

कृतिका : परस्त्रीगामी, बहुरोगी, तेजस्वी, प्रख्यात, अतिचतुर, महाक्रोधी, लोभी।

रोहिणी : प्रियवक्ता, सुरूप, स्थिरचित्त, पवित्र, सत्यवादी, धनी, राजाओं से मान्य।

मृगशिरा : चंचल, उत्साही, गुणी, सुख भोगने वाला, डरपोक, अहंकारी, निन्दित कामी।

आर्द्रा : क्रोधी, कृतघ्न, पापी, घमंडी, धनधान्य से वंचित, हिंसक, दुष्ट रत से युक्त।

पुनर्वसु : शांत स्वभाव, पूर्ण सुखी, सुंदर, सर्वदा पुत्र–मित्र से युक्त, रोगी होता है।

पुष्य : देवता, धर्म, धन से युक्त, पुत्र पौत्रादि का सुख, उत्तम पंडित, सुंदर आकृति वाला।

आश्लेषा : धूर्त, शठ, पाप रत, कृतघ्न, सर्वभक्षी, दुर्जन।

मघा : अच्छा, उद्योगी, सुखी, भोगी, धनवान्, महाउद्यमी, पितृभक्त, राजा की सेवा से धनी।

पूर्वा फाल्गुनी : विद्यावान्, राज कार्यकर्त्ता, दानी, भाग्यवान्, सुख पाने वाला, कांतियुत।

उत्तरा फाल्गुनी : विद्वान्, धनी, सुखी, भोगी, प्रसिद्ध, भाग्यवान्, सहनशील, महायोद्धा।

हस्त : मिथ्यावादी, चौर बुद्धि, पापरत, अतिधूर्त्त, व्यर्थ साहसी, परायी स्त्रियों के साथ रमण।

चित्रा : विचित्र परस्त्रीभरण, पुष्पादिधारणकर्त्ता, सुलोचन, सुंदर देह, धन धान्य से युक्त।

स्वाती : दानी, कृपालु, स्त्री से प्रेम, धार्मिक कार्य।

विशाखा : लोभी, अभिमान रखने वाला, ईर्ष्या वाला, वाक्चतुर।

अनुराधा : विदेश गमन, उद्यम करने वाला, धनवान्[?] व सुखी।

ज्येष्ठा : संतोषरत अति क्रोधी, अल्प मित्र युक्त, धर्मनिरत, स्वयं प्रधान, शूद्र से पूजित।

मूल : सुखी, वाहनादि का सुख, हिंसक विचार, पुरस्कार योग्य कामों को करने वाला व पंडित।

पूर्वाषाढ़ा: विशेष आनंद भोगी, धनवान्, सुंदर स्त्री मित्रादि से युक्त व प्रसिद्ध पुरुष होता है।

उत्तराषाढ़ा : नम्र स्वभाव, बहुमित्रयुक्त, धर्मरत, कृतज्ञ, भाग्यवान् व परिवार वाला, विजयी।

श्रवण : उपकार को मानने वाला, सुंदर, दानी, सर्वगुणों से युक्त, धनी एवं अधिक संतान।

धनिष्ठा : गाने का प्रेमी, परिवार में मान्य, आभूषणों से शोभित, सैकड़ों व्यक्तियों का अधिपति।

शतभिषा: कंजूस, धनी, परस्त्री की सेवा में रत, देशांतर में अधिक काम चेष्टा रखने वाला।

पूर्वा भाद्रपद : परुषवक्ता, सुखी, सम्मानित, अधिक सोने वाला, निरर्थक, शत्रुहंता, प्रजावान्।

उत्तरा भाद्रपद : गौरवर्ण, सत्वगुण, प्रधान धर्मज्ञाता, उत्कृष्ट देवता के समान एवं साहसी।

रेवती : पवित्र, कार्य में दक्ष, साधु, शूर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वदा अलंकृत रहता है।

3.4.1 नक्षत्रों के चरण का फल

नक्षत्र	प्रथम पाद	द्वितीय पाद	तृतीय पाद	चतुर्थ पाद
अश्विनी	तस्कर	अल्पकामी	भाग्यवान्	भोगी, दीर्घायु
भरणी	त्यागी	धनवान्	क्रूर कर्मा	दरिद्री
कृतिका	तेजस्वी[?]	शास्त्री	शूरवीर	दीर्घायु, बहुपुत्र
रोहिणी	श्रेष्ठ भाग्य	पीड़ित	डरपोक	सत्यवक्ता
मृगशिरा	राजा	चौर	भोगी	धनधान्य
आर्द्रा	व्ययी	दरिद्री	स्वल्पायु	चौर
पुनर्वसु	सुखी	विद्वान्	रोगी	मृदुभाषी
पुष्य	दीर्घायु	चौर	भोगी	बुद्धिमान्
आश्लेषा	अप्रज	परकार्यरत	रोगी	भाग्यवान्
मघा	अपुत्र	पुत्रवान्	अतिरोगी	पण्डित
पू.फा.	समर्थ	धार्मिक	राजा	रोगी, क्रूर
उ.फा.	पंडित	पृथ्वीपाल	विजयी	धार्मिक
हस्त	शूर	वादी	रोगी	श्रीमान्
चित्रा	चौर	चित्रकार	परदाररत	पण्डित
स्वाती	चौर	अल्पायु	धार्मिक	राजा
विशाखा	नीतिज्ञ	शास्त्रज्ञ	वादी	दीर्घायु
अनुराधा	तीव्र	धर्मात्मा	दीर्घायु	पुंश्चल
ज्येष्ठा	क्रूर	भोगी	विद्वान्	पुत्रवान्
मूला	भोगी	त्यागी	सुमित्र	नृपति

नक्षत्र	प्रथम पाद	द्वितीय पाद	तृतीय पाद	चतुर्थ पाद
पू.षा.	श्रेष्ठा	राजप्रिय	वादी	धनी
उ.षा.	नृपति	मित्रविरोधी	मानी	धर्मरत
श्रवण	शुभमानी	शुभगुणी	विद्वान्	धर्मात्मा
धनिष्ठा	दीर्घायु	पीड़ित	डरपोक	श्रेष्ठस्त्रीवान्
शतभिषा	वाचाल	श्रीमान्	सुखी	पुत्रवान्
पू.भा.	शूर	चौर	श्रेष्ठबुद्धि	ग्रामपति
उ.भा.	राजा	चौर	पुत्रवान्	सुखी
रेवती	ज्ञानी	चौर	युद्धभीरु	क्लेशवान्

3.4.2 गण्डमूल नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र – मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, दूसरे चरण में फिजूलखर्ची, तीसरे चरण में भ्रमणशील तथा चतुर्थ नक्षत्र में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र – कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। प्रथम चरण में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, दूसरे चरण में पैतृक धन की हानि, तीसरे चरण में माता–पिता या सास के लिए गण्डान्त शूल तथा चतुर्थ चरण में पिता के लिए अनिष्टकारी है।

मघा नक्षत्र – सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान् होते हैं। प्रथम चरण में उत्पन्न हो तो माता–पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, दूसरे चरण में पिता को परेशानी, तीसरे चरण में जन्म हो तो शुभ फलदायक, चतुर्थ चरण में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र – मंगल की राशि एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम पाद में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ को अरिष्टकर, दूसरे चरण में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, तीसरे चरण में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि चतुर्थ चरण में उत्पन्न हो तो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

मूल नक्षत्र – केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन–वाहनादि सुखों से युक्त होता है। मूल के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। दूसरे चरण में माता की हानि, तीसरे चरण में धन का नाश तथा चौथा चरण शुभ होता है। नक्षत्र की विधि पूर्वक शांति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता। मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है।

रेवती नक्षत्र – बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान्, सुंदर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, दूसरे में मंत्री के समान सुख साधनों से युक्त, तीसरे में जन्म होने से धनवान् तथा चतुर्थ में जन्म होने से माता–पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

3.5 राशि विचार

3.5.1 राशियों एवं नक्षत्रों का अंश–कला में विभाजन

राशि	नक्षत्र	न.सं.	चरण	न.प्रा.अंश	समाप्तअंश	नक्षत्र स्वामी
मेष	अश्विनी	1	4	00°00	13°20′	केतु
	भरणी	2	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	कृत्तिका	3	1	26°40′	30°00′	सूर्य
वृष	कृत्तिका	3	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	रोहिणी	4	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	मृगशिरा	5	2	23°20′	30°00′	मंगल
मिथुन	मृगशिरा	5	2	00°00′	06°40′	मंगल
	आर्द्रा	6	4	06°40′	20°00′	राहु
	पुनर्वसु	7	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति

राशि	नक्षत्र	न.सं.	चरण	न.प्रा.अंश	समाप्तअंश	नक्षत्र स्वामी
कर्क	पुनर्वसु	7	1	00°00′	03°20′	बृहस्पति
	पुष्य	8	4	03°20′	16°40′	शनि
	आश्लेषा	9	4	16°40′	30°00′	बुध
सिंह	मघा	10	4	00°00′	13°20′	केतु
	पूर्व फाल्गुनी	11	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	उ.फाल्गुनी	12	1	26°40′	30°00′	सूर्य
कन्या	उ.फाल्गुनी	12	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	हस्त	13	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	चित्रा	14	2	23°20′	30°00′	मंगल
तुला	चित्रा	14	2	00°00′	06°40′	मंगल
	स्वाती	15	4	06°40′	20°00′	राहु
	विशाखा	16	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति
वृश्चिक	विशाखा	16	1	00°00′	3°20′	बृहस्पति
	अनुराधा	17	4	3°20′	16°40′	शनि
	ज्येष्ठा	18	4	16°40′	30°00′	बुध
धनु	मूल	19	4	00°00′	13°20′	केतु
	पूर्वाषाढ़ा	20	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	उत्तराषाढ़ा	21	1	26°40′	30°00′	सूर्य

राशि	नक्षत्र	न.सं.	चरण	न.प्रा.अंश	समाप्तअंश	नक्षत्र स्वामी
मकर	उत्तराषाढ़ा	21	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	श्रवण	22	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	धनिष्ठा	23	2	23°20′	30°00′	मंगल
कुम्भ	धनिष्ठा	23	2	00°00′	06°40′	मंगल
	शतभिषा	24	4	06°40′	20°00′	राहु
	पूर्वभाद्र	25	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति
मीन	पूर्वभाद्रपद	25	1	00°00′	03°20′	बृहस्पति
	उत्तरभाद्रपद	26	4	03°20′	16°40′	शनि
	रेवती	27	4	16°40′	30°00′	बुध

3.5.2 राशि स्वामी (राशि क्रमानुसार)

ग्रह	राशि संख्या	राशि का नाम
1	मेष	मंगल
2	वृष	शुक्र
3	मिथुन	बुध
4	कर्क	चंद्र
5	सिंह	सूर्य
6	कन्या	बुध
7	तुला	शुक्र
8	वृश्चिक	मंगल

ग्रह	राशि संख्या	राशि का नाम
9[?]	धनु	गुरु
10	मकर	शनि
11	कुंभ	शनि
12	मीन	गुरु

राशि स्वामी (ग्रह क्रमानुसार)

ग्रह	राशि संख्या	राशि का नाम
सूर्य	5	सिंह
चंद्र	4	कर्क
मंगल	1, 8	मेष, वृश्चिक
बुध	3, 6	मिथुन, कन्या
गुरु	9, 12	धनु, मीन
शुक्र	2, 7	वृष, तुला
शनि	10, 11	मकर, कुंभ

3.5.3 राशियों का वर्गीकरण

पुरुष या विषम राशियां : मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ

स्त्री या सम राशियां : वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन

चर राशियां : मेष, कर्क, तुला, मकर

स्थिर राशियां : वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ

द्विस्वभाव राशियां: मिथुन, कन्या, धनु, मीन

अग्नितत्व की राशियां : मेष, सिंह, धनु

पृथ्वी तत्व की राशियां : वृष, कन्या, मकर

वायु तत्व की राशियां : मिथुन, तुला, कुंभ

जल तत्व की राशियां : कर्क, वृश्चिक, मीन

दीर्घ तत्व की राशियां : कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु

ह्रस्व तत्व की राशियां : मेष, वृष, मिथुन, मकर, कुंभ, मीन

3.5.4 राशियों का स्वभाव

राशियों का स्वभाव तीन प्रकार का होता हैं – चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव।

चर राशि : मेष, कर्क, तुला, मकर

स्थिर राशि : वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ

द्विस्वभाव राशि : मिथुन, कन्या, धनु, मीन

3.5.5 राशियों के तत्त्व

राशियां चार प्रकार के तत्त्वों की होती हैं –अग्नि, पृथ्वी, वायु एवं जल।

अग्नि तत्त्व : मेष, सिंह एवं धनु

पृथ्वी तत्त्व : वृष, कन्या एवं मकर

वायु तत्त्व : मिथुन, तुला एवं कुम्भ

जल तत्त्व : कर्क, वृश्चिक एवं मीन

3.5.6 राशियों के लिंग

राशियों के लिंग दो प्रकार के होते हैं – पुरुष लिंग, स्त्री लिंग

पुरुष लिंग : मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ

स्त्री लिंग : वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन

3.5.7 राशियों की प्रकृति

राशियों की प्रकृति चार प्रकार की होती है – पित्त, वायु, मिश्रित एवं कफ।

पित्त प्रकृति : मेष, सिंह एवं धनु

वायु प्रकृति : वृष, कन्या एवं मकर

मिश्रित प्रकृति : मिथुन, तुला एवं कुम्भ

कफ प्रकृति : कर्क, वृश्चिक एवं मीन

3.5.8 राशियों के वर्ण (जातियां)

राशियों की जातियां चार प्रकार की होती हैं – क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं ब्राह्मण।

क्षत्रिय वर्ण : मेष, सिंह, धनु

वैश्य वर्ण : वृष, कन्या, मकर

शूद्र वर्ण : मिथुन, तुला, कुम्भ

ब्राह्मण वर्ण : कर्क, वृश्चिक, मीन

3.5.9 राशियों की दिशाएं

राशियों की दिशाएं चार प्रकार की होती हैं – पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर।

पूर्व दिशा : मेष, सिंह, धनु

दक्षिण दिशा : वृष, कन्या, मकर

पश्चिम दिशा : मिथुन, तुला, कुम्भ

उत्तर दिशा : कर्क, वृश्चिक, मीन

3.5.10 राशियों के बल

राशियों के बल दो प्रकार के होते हैं – दिन बली और रात्रि बली

दिन बली : सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन

रात्रि बली : मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर

3.5.11 राशियों के पाद

राशियों के पाद तीन प्रकार के होते हैं – द्विपाद, चतुष्पाद तथा बहुपाद।

द्विपाद : मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ तथा धनु का पूर्वोत्तर भाग

चतुष्पाद : मेष, वृष, सिंह, धनु, का उत्तरोत्तर भाग एवं मकर का पूर्वोत्तर भाग।

बहुपाद : कर्क, मीन, मकर का उत्तरोत्तर भाग, वृश्चिक।

3.5.12 कालपुरुष के अंग

क्र.	राशियां	शरीर के अंग
1.	मेष	सिर
2.	वृष	आँखें, चेहरा, गर्दन, मुंह के अन्दर का भाग
3.	मिथुन	भुजाएं, छाती के ऊपर का भाग, कान, कंधे
4.	कर्क	हृदय, फेफड़े, स्तन, पेट का ऊपरी भाग
5.	सिंह	छाती के नीचे का भाग, नाभि से ऊपर का भाग
6.	कन्या	कमर, कूल्हे, नाभि के नीचे का भाग, आँतें, मूत्राशय के ऊपर का भाग
7.	तुला	मूत्राशय, नाभि के पीछे का भाग
8.	वृश्चिक	गुदा द्वार, लिंग
9.	धनु	जांघें
10.	मकर	दोनों घुटने तथा पीठ
11.	कुम्भ	कान, घुटनों से नीचे का भाग, पिंडलियाँ
12.	मीन	आँखें, पैर

3.6 सारांश

संपूर्ण ब्रह्मांड में एक ऐसी काल्पनिक पट्टी की कल्पना की गयी जो पृथ्वी की भूमध्य रेखा के 9° उत्तर की ओर और 9° दक्षिण की ओर पृथ्वी के चारों ओर गोल वृत्ताकार में स्थित है। जिसके अंदर कुछ विशेष चमकते हुए तारों को चिह्नित किया गया। इस काल्पनिक पट्टी को भचक्र कहा जाता है। इस भचक्र को 12 बराबर भागों में विभाजित किया गया। प्रत्येक विभाजित भाग को एक राशि का नाम दिया गया, जिसका मान 30° होता है। इसका नाम इन चमकते तारों को मिलने पर जो आकृति उभरी उसी के आधार पर दिया गया। इसी प्रकार, इस भचक्र को 12 के स्थान पर 27 बराबर–बराबर भागों में विभाजित किया गया, जिसको एक नक्षत्र का नाम दिया गया आगे प्रत्येक नक्षत्र को भी चार बराबर–बराबर भागों में विभाजित किया गया जिसको एक चरण का नाम दिया गया।

इस प्रकार 12 राशियों, 27 नक्षत्रों एवं 108 चरणों का निर्माण हुआ जिसके आधार पर जातक के गुण, स्वभाव आदि निश्चित किये गये तथा जातकों का भविष्य कथन किया गया।

3.7 शब्दावली

भचक्र – राशि चक्र

अक्षांश – भूमध्य रेखा के समानान्तर रेखा

रेखांश – पृथ्वी के अक्ष के समानान्तर रेखा

गण्डमूल – विशिष्ट नक्षत्रों का समूह

पंचक – अंतिम पांच नक्षत्र

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भचक्र किसे कहते हैं?

प्रश्न 2. क्या लग्न--स्पष्ट का भी नक्षत्र व नक्षत्र स्वामी ज्ञात कर सकते हैं?

प्रश्न 3. द्वादश राशियों के स्वामी बतायें।

प्रश्न 4. एक राशि में नक्षत्र व चरणों की संख्या बताते हुये किसी एक राशि का विभाजन अंशों के आधार पर करें।

प्रश्न 5. एक नक्षत्र व चरण का मान अंशों में तथा मिनटों में बतायें।

प्रश्न 6. पूरे भचक्र में कितने नक्षत्र होते हैं उनके नाम क्रम से बतायें व उनके स्वामी भी बतायें।

प्रश्न 7. राशि व नक्षत्र में क्या अंतर होता है?

प्रश्न 8. जन्म राशि व जन्म नक्षत्र का आधार किस ग्रह को मानते हैं?

प्रश्न 9. जन्म राशि और जन्म लग्न में क्या अंतर होता है?

प्रश्न 10. एक राशि व एक नक्षत्र की लगभग अवधि बतायें।

प्रश्न 11. गंडमूल नक्षत्र कौन–कौन से हैं और इन नक्षत्रों को गंडमूल नक्षत्र क्यों कहा जाता है।

प्रश्न 12. पंचक नक्षत्र किसे कहते हैं?

प्रश्न 13. बुध और केतु के नक्षत्रों के नाम बतायें।

3.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. देखें प्रस्तुत इकाई का 3.3

उत्तर 2. हां

उत्तर 3. देखें प्रस्तुत इकाई का 3.8

उत्तर 4. मेष अश्विनी – 4 चरण – 0 से $13° 20'$ तक

भरणी – 4 चरण – $13° 20'$ से $26° 40'$ तक

कृत्तिका – 1 चरण – $26° 40'$ से $30°$ तक

उत्तर 5. एक नक्षत्र = $13° 20' = 800'$

एक चरण = $3° 20' = 200'$

उत्तर 6. 27, नाम व क्रम के लिए प्रस्तुत इकाई में विस्तृत सूची देखें।

उत्तर 7. राशि का मान $30°$ और नक्षत्र का मान $13° 20'$ होता है।

उत्तर 8. चंद्र

उत्तर 9. चंद्र जिस राशि में होता है वह जन्म राशि कहलाती है। जबकि जन्म के समय पूर्वी क्षितिज में उदित हो रही राशि को जन्म लग्न कहते हैं और यह प्रथम भाव की राशि होती है।

उत्तर 10. एक राशि की अवधि ढाई दिन और नक्षत्र की अवधि एक दिन होती है।

उत्तर 11. अश्विनी, मघा, मूल, आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती

क्योंकि इन नक्षत्रों पर नई राशि प्रारंभ व समाप्त होती है।

उत्तर 12. धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती

उत्तर 13. बुध–आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती

केतु–अश्विनी, मघा, मूल

3.9 संदर्भ ग्रंथ / सूची

1. भारतीय ज्योतिष – नेमिचंद्र शास्त्री – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

2. बृहद पराशर होरा शास्त्र

3. सरल ज्योतिष – अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

3.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. इंटरनेट साइट http://www.skymap.com[?]

2. अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था[?] संघ द्वारा प्रकाशित 'सरल ज्योतिष'

3. मानसागरी

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 14. यदि किसी व्यक्ति के जन्म समय पर चंद्र–स्पष्ट के रेखांश 4 रा. 15 अं 57 क.हों तो जातक की जन्म राशि, जन्म नक्षत्र, नक्षत्र स्वामी व राशि स्वामी बतायें।

प्रश्न 15. भचक्र में द्वादश राशियों का विभाजन चक्र बनायें।

3.11 निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 14. नक्षत्र – पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र स्वामी – चंद्र

राशि – सिंह राशि स्वामी – सूर्य

उत्तर 15. देखें प्रस्तुत इकाई का 3.5.1

इकाई – 4 पंचाँग परिचय

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 पंचाँग

4.3.1 तिथि

4.3.2 वार

4.3.3 नक्षत्र

4.3.4 योग

4.3.5 करण

4.4 पंचाँग के अन्य आवश्यक अंग

4.5 पंचाँग अवलोकन विधि

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.90 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

पूर्व में काल गणना की इकाइयों के साथ–साथ खगोल शास्त्र के महत्वपूर्ण विषयों भचक्र व नक्षत्रों के विषय में आपने अध्ययन किया।

प्रस्तुत इकाई में ज्योतिषीय गणनाओं के प्रमुख बिन्दु रूप पंचाँग के विविध महत्वपूर्ण अंगों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

पंचाँग भारतीय ज्योतिष का मूलाधार है। समय की विभिन्न इकाइयां जैसे सम्वत्, मास, पक्ष, तिथि, वार, ऋतु, अयन, आदि विधाओं को अभिव्यक्त करने का पंचाँग एक मात्र साधन है। प्राचीन काल से ही वैदिक, स्मार्त एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक एवं सांकल्पिक अनुष्ठान आदि कृत्यों का मार्ग–दर्शन पंचाँग के तिथ्यादि अंगों के द्वारा ही सिद्ध हुआ माना जाता है। ईश्वर के एक रूप काल पुरुष के अंगभूत पंचाँग (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, एवं करण के संकलन) को हमेशा ही नमस्कार किया जाता है।

"श्रौतं स्मार्तं च गार्हस्थ्यं यद् विना नैव सिद्धयति।

तत् कालाख्येश्वरस्यांगं वन्दे तिथ्यादिपंचकम्।।"

प्रातः काल पंचाँग का दर्शन करने से ज्योतिषी को पुण्य प्राप्त होता है तथा न करने पर पाप का भागी होना होता है यह प्राचीन मान्यता है। अर्थात् ज्योतिषी को नित्य पंचाँग का ज्ञान न होने से उपहास का पात्र बनना पड़ता है। भारतीय जन–जीवन में ज्योतिष का उपयोग पग–पग पर किया जाता है। जन्म से मृत्यु तक, तथा मृत्यु के पश्चात् भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बार–बार ज्योतिष की सलाह ली जाती है। ज्योतिष को मार्ग दर्शक के रूप में स्वीकार किया गया है। कृषि, व्यापार, हवन–यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों को प्रारम्भ करने का काल ज्ञान पंचाँग द्वारा ही प्राप्त होता है। बीज बोना, फसल काटना, षोडश संस्कार तथा जीवन की नित्य प्रति की क्रियाएं इन सभी में काल ज्ञान की आवश्यकता होती है और काल ज्ञान केवल पंचाँग द्वारा ही प्राप्त होता है। प्रत्येक ज्योतिषी को पंचाँग का ज्ञान होना अनिवार्य है।

अगली इकाई में आप फलादेश के आधार बिन्दु अर्थात् जन्म पत्रिका की निर्माण विधि का अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में पंचाँग का विवरण दिया जा रहा है। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए सरल प्रकार से इस इकाई की रचना की गई है ताकि वे पंचाँग से मिलने वाली सभी जानकारियां सरलता से प्राप्त कर सकें। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- पंचाँग के पाँच अंगों के बारे में विस्तृत जानकारी और पंचाँग के मूलभूत अंगों तथा उनकी गणना विधि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- तिथि क्षय, वृद्धि के ज्ञान के साथ इनकी गणना का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वार तथा उनके बनने के प्रकारों को चित्र द्वारा पहचान पायेंगे।
- नक्षत्र तथा भचक्र में नक्षत्रों के स्थान व संख्या की गणना कर पायेंगे।
- योग और करण की गणना के साथ योग और करणों के क्रम व उनके नामों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- इस इकाई से ज्योतिष के छात्र दिन–मान, रात्रि–मान तथा सूर्योदय व सूर्यास्त की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- उत्तरी गोलार्द्ध, दक्षिणी गोलार्द्ध के अतिरिक्त उत्तरायण –दक्षिणायन, सायन–निरयण सूर्य की जानकारी व ऋतु परिवर्तन तथा ग्रहण विवरण के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- पंचाँग अवलोकन की विधि से अवगत हो पायेंगे।

4.3 पंचाँग

प्राचीन काल में पंचाँग के 5 अंग तिथि, वार, नक्षत्र, योग, और करण ही आवश्यक अंग माने जाते थे, परन्तु पंचाँग के आधुनिक स्वरूप में दैनिक ग्रह संचार, राशि परिवर्तन, ग्रहण–विवरण, राशि–फल, पर्व[?] -त्यौहार निर्णय, विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, गृह निर्माण, विपणि आदि प्रारम्भ करने के मुहूर्त, भविष्यवाणियां आदि विविध विषयों का समावेश होने लगा है

प्रत्येक प्रामाणिक पंचाँग किसी स्थान विशेष के अक्षांश–रेखांश पर आधारित होता है। पंचाँग में स्थानीय सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि के घटी पल स्थानीय सूर्योदय के अनुसार दिए जाते हैं। कुछ पंचाँगों में तिथि, नक्षत्र, योगों आदि का मान घण्टे–मिनटों में दिया जाता है, वह पंचाँग भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार होने से अखिल भारतोपयोगी हो जाता है। उन पंचाँगों में सूर्यादि ग्रह–स्पष्ट भी भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम पर आधारित होता है। इसलिए ये सर्व

भारतोपयोगी होता है। ज्योतिष के विद्यार्थियों को यह जान लेना चाहिए कि तिथि, नक्षत्र, योग, करण तथा ग्रह–स्पष्ट सभी स्थानों पर एक ही समय शुरू होते हैं तथा एक ही समय पर समाप्त होते हैं। इन पंचाँगो में तिथि की समाप्ति का समय सूर्योदय के पश्चात् घटी पलों में दिया रहता है। इसे हम इस प्रकार समझते हैं कि यदि स्थानीय सूर्योदय प्रातः 5 बज कर 32 मिनट पर है और पंचमी तिथि 16 घ॰ 20 पल है तो पहले हमें 16 घटी 20 पलों को घण्टे मिनटों में परिवर्तित करना होगा जो 6 घण्टे 32 मिनट हुए अब इसे सूर्योदय में जमा (+) करना होगा तो इस प्रकार 5 घण्टे 32 मिनट + 6 घण्टे 32 मिनट = 12 घण्टे 04 मिनट अर्थात् उपर्युक्त पंचमी तिथि दोपहर 12 बज कर 04 मिनट तक रहेगी तथा उस के बाद षष्ठी तिथि प्रारम्भ होगी।

पंचाँग के 5 अंग इस प्रकार हैं।

4.3.1 तिथि

सूर्य एवं चन्द्रमा द्वारा निर्मित विभिन्न कोणीय दूरियों को तिथि का नाम दिया गया है। तिथि को चन्द्रमा की एक कला भी कहा गया है। जब चन्द्रमा व सूर्य एक ही भोगांशों (किसी भी ग्रह के भुक्त राशि, अंश, कला, विकला) पर होता है तो अमावस्या होती है। जैसे ही चन्द्रमा सूर्य से 12 अंशों की दूरी पर जाता है तो एक नई तिथि का निर्माण होता है। इसे गणित के द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है।

$$\text{तिथि} = \frac{(\text{चन्द्रमा का भोगांश} - \text{सूर्य का भोगांश})}{12}$$

यदि चन्द्रमा के भोगांश 6 राशि, 14 अंश, 20 कला है और सूर्य के भोगांश 2 राशि, 10 अंश, 14 कला है तो तिथि इस प्रकार होगी।

चन्द्र भोगांश = 6 राशि 14 अंश 20 कला

सूर्य भोगांश = 2 राशि 10 अंश 14 कला

4 राशि 4 अंश 6 कला

4 राशियों के 120(4X30) अंश बने उन में 4 अंश जोड़े तो अन्तर बना 124 अंश 6 कला इनको अब 12 अंशों से भाग दिया तो भागफल प्राप्त हुआ 10 तथा शेष 4 अंश 6 कला इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि दसवीं तिथि समाप्त हो कर 11 तिथि अर्थात् एकादशी तिथि चल रही है, यह एकादशी तिथि शुक्ल पक्ष की है क्यों कि चन्द्रमा के भोगांश सूर्य के भोगांश से 180 अंश के

मध्य हो तो शुक्ल पक्ष व अधिक होने पर कृष्ण पक्ष होता है। यदि चन्द्रमा व सूर्य के भोगांशों का अन्तर 180 अंश से अधिक है तो उस में से 180 अंश घटा दिए जाते हैं शेष अन्तर को 12 अंशों से भाग दिया जाता है तो यह तिथि कृष्ण पक्ष की होती है। चन्द्रमा के भोगांश यदि सूर्य के भोगांश से न्यून हैं तो चन्द्रमा के भोगांशों में 12 राशि जोड़ दी जाती है। इस को हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि कुल 30 तिथियां होती हैं 15 तिथियां शुक्ल पक्ष की जब चन्द्रमा सूर्य से दूर जाता है तथा 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं, जब चन्द्रमा सूर्य की ओर आता है।

तिथियों को हम निम्न तालिका से अच्छी प्रकार समझ सकते हैं।

अंशों के अनुसार तिथियों का क्रम

शुक्ल पक्ष की तिथियां

तिथि क्रम	नाम तिथि	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी	तिथि क्रम	नाम क्रम	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी
1	प्रतिपदा	0° से 12°	9	नवमी	96° से 108°
2	द्वितीया	12° से 24°	10	दशमी	108° से 120°
3	तृतीया	24° से 36°	11	एकादशी	120° से 132°
4	चतुर्थी	36° से 48°	12	द्वादशी	132° से 144°
5	पंचमी	48° से 60°	13	त्रयोदशी	144° से 156°
6	षष्ठी	60° से 72°	14	चतुर्दशी	156° से 168°
7	सप्तमी	72° से 84°	15	पूर्णिमा	168° से 180°
8	अष्टमी	84° से 96°			

कृष्ण पक्ष की तिथियां

तिथि क्रम	नाम तिथि	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी	तिथि क्रम	नाम क्रम	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी
1	प्रतिपदा	180° से 192°	9	नवमी	276° से 288°
2	द्वितीया	192° से 204°	10	दशमी	288° से 300°
3	तृतीया	204° से 216°	11	एकादशी	300° से 312°
4	चतुर्थी	216° से 228°	12	द्वादशी	312° से 324°
5	पंचमी	228° से 240°	13	त्रयोदशी	324° से 336°
6	षष्ठी	240° से 252°	14	चतुर्दशी	336° से 348°
7	सप्तमी	252° से 264°	15	अमावस्या	348° से 360°
8	अष्टमी	264° से 276°			

पंचाँग में तिथि समाप्ति काल दिया रहता है। यह समय घटी–पलों व घण्टे–मिनटों में दिया रहता है, जिसका अर्थ है कि सूर्योदय के बाद घटी पल या घण्टे मिनट।

तिथिक्षय :

यदि एक तिथि सूर्योदय के पश्चात् प्रारम्भ होकर अगले सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो जाती है तो उस तिथि को क्षय तिथि कहा जाता है। तिथि क्षय का अर्थ है वह तिथि सूर्योदय के समय नहीं थी। जैसे यदि चन्द्रमा तथा सूर्य के भोगांश का अन्तर 36 अंश व 48 अंश एक सूर्योदय से अगले

सूर्योदय के बीच में ही हो तो चतुर्थी तिथि का लोप हो गया अतः चतुर्थी तिथि क्षय हुई। जिस दिन कोई तिथि क्षय होती है वह दिन मुहूर्त आदि के लिए शुभ नही होता।

तिथि वृद्धि :

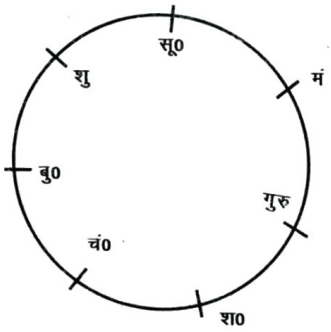
यदि कोई तिथि दो सूर्योदयों के समय मौजूद होती है अथवा यह कहें कि कोई तिथि एक सूर्योदय से पूर्व प्रारम्भ हो कर अगले दिन के सूर्योदय के पश्चात् समाप्त होती है, तो यह तिथि वृद्धि कहलाती है। यह भी सभी शुभ कार्यो में त्याग देनी चाहिए।

4.3.2 वार :

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय, एक दिन या वार होता है। भारतीय ज्योतिष में प्रत्येक नवीन वार का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। प्रत्येक दिन एक ग्रह को आवंटित किया गया है, जैसे कि सूर्य को रविवार, चन्द्रमा को सोमवार, मंगल को मंगलवार, बुध को बुधवार, बृहस्पति को गुरुवार, शुक्र को शुक्रवार, शनि को शनिवार। वार का क्रम होरा के स्वामी ग्रहों (आज किस ग्रह की वारी है) के आधार पर होता है। श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा लिखित सूर्य सिद्धान्त की टीका (दूसरा संस्करण) के अध्याय 12 (भूगोल अध्याय) का 31 वां श्लोक इस प्रकार है –

"मन्दामरेज्यभू–पुत्र–सूर्य–शुक्रेन्दुजेन्दवः।
परिभ्रमन्त्यधोऽधस्तात्सिद्धविद्याधरा घनाः॥"

पृथ्वी के चारों ओर सभी ग्रहों का परिभ्रमण कक्षा इस क्रम में है– शनि, बृहस्पति, मंगल, रवि, शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा। एक वृत्त में इन ग्रहों को हम इसी क्रम से लिख लें –



यह क्रम वास्तव में इन ग्रहों के अवरोही नक्षत्र अवधि तथा कोणीय गति के आरोही क्रम में हैं। इनमें शनि सबसे मन्द गति का ग्रह व चन्द्रमा सबसे तेज है। सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई देता है इस लिए पहली होरा सूर्य से शुरू की जाती है। अतः पहले वार का नाम रविवार है।

रवि के बाद दूसरी होरा शुक्र की तीसरी बुध, चौथी चन्द्रमा, पाँचवी शनि, छठी बृहस्पति, तथा सातवीं होरा मंगल की होगी इसी क्रम से आठवीं होरा फिर सूर्य की होगी यह क्रम फिर दोहराया जाएगा तो 22वीं होरा सूर्य की होगी। 23वीं होरा शुक्र की, 24वीं बुध की तथा 25वीं होरा (जो अगले दिन की पहली होरा) चन्द्रमा की होगी। इस प्रकार दूसरा दिन चन्द्रवार या सोमवार कहलाया। यह क्रम दोहराने पर ज्ञात होगा कि अगली 25वीं होरा मंगल की होगी, अतः अगला वार मंगलवार होगा। इसी क्रम के दोहराये जाने पर क्रमशः बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, हमें प्राप्त हो जाएंगे। जिस ग्रह की प्रथम होरा होगी वही वार कहा जाता है।

प्रथम होरा के स्वामी	दिन का नाम
सूर्य	रविवार
चन्द्र	सोमवार
मंगल	मंगलवार
बुध	बुधवार
बृहस्पति	गुरुवार
शुक्र	शुक्रवार
शनि	शनिवार

4.3.3 नक्षत्र :

आकाश मण्डल में रविमार्ग के दोनों ओर 8–8 अंश की दूरी पर एक काल्पनिक वृत्त बनाएं तो सभी सातों ग्रह इसी वृत्त में भ्रमण करते हुए दृष्ट होते हैं, इसे भचक्र कहा जाता है। जहां ग्रह भ्रमण करते हैं इनके पीछे तारों के पुंज दृष्टिगोचर होते हैं जो एक निश्चित आकृति जैसे अश्व, शकट, हस्त, चक्र, त्रिकोण आदि बनाते हैं, तारों के इन समूहों को नक्षत्र कहते हैं। इनको अपने–अपने तारों के समूह के आधार पर 27 भागों में विभाजित किया गया है, जो 27 नक्षत्रों के नाम से जाने जाते हैं, और ये सभी सूर्य की भाँति प्रकाशमान् हैं। यदि निरयण राशि चक्र को 27 समान भागों में विभक्त करें तो एक भाग का मान 13 अंश 20 कला आता है जो एक कला का मान होता है। प्रत्येक नक्षत्र को आगे 4 भागों में विभाजित किया गया है, जो एक नक्षत्र के पद या चरण कहलाते हैं। निरयण मेष राशि के प्रथम बिन्दु से प्रारम्भ करके 27 नक्षत्रों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं। यहां पर नक्षत्रों का राशि–अंशों में भोग्य काल भी दिया जा रहा है।

क्रमः नाम नक्षत्र	राशि अंश कला	से	राशि अंश कला तक
1. अश्विनी	0 : 0 : 0	से	0 : 13 : 20 तक
2. भरणी	0 : 13 : 20	से	0 : 26 : 40 तक
3. कृत्तिका	0 : 26 : 40	से	1 : 10 : 00 तक
4. रोहिणी	1 : 10 : 00	से	1 : 23 : 20 तक
5. मृगशिरा	1 : 23 : 20	से	2 : 06 : 40 तक
6. आर्द्रा	2 : 06 : 40	से	2 : 20 : 00 तक
7. पुनर्वसु	2 : 20 : 00	से	3 : 03 : 20 तक
8. पुष्य	3 : 03 : 20	से	3 : 16 : 40 तक
9. आश्लेषा	3 : 16 : 40	से	4 : 00 : 00 तक
10. मघा	4 : 00 : 00	से	4 : 13 : 20 तक
11. पूर्वाफाल्गुनी	4 : 13 : 20	से	4 : 26 : 40 तक
12. उत्तरा फाल्गुनी	4 : 26 : 40	से	5 : 10 : 00 तक
13. हस्त	5 : 10 : 00	से	5 : 23 : 20 तक
14. चित्रा	5 : 23 : 20	से	6 : 06 : 40 तक
15. स्वाती	6 : 06 : 40	से	6 : 20 : 00 तक
16. विशाखा	6 : 20 : 00	से	7 : 03 : 20 तक
17. अनुराधा	7 : 03 : 20	से	7 : 16 : 40 तक
18. ज्येष्ठा	7 : 16 : 40	से	8 : 00 : 00 तक
19. मूल	8 : 00 : 00	से	8 : 13 : 20 तक
20. पूर्वाषाढ़ा	8 : 13 : 20	से	8 : 26 : 40 तक
21. उत्तराषाढ़ा	8 : 26 : 40	से	9 : 10 : 00 तक

क्रमः नाम नक्षत्र	राशि अंश कला	से	राशि अंश कला तक
22. श्रवण	9 : 10 : 00	से	9 : 23 : 20 तक
23. धनिष्ठा	9 : 23 : 20	से	10 : 06 : 40 तक
24. शतभिषा	10 : 06 : 40	से	10 : 20 : 00 तक
25. पूर्वाभाद्रपद	10 : 20 : 00	से	11 : 03 : 20 तक
26. उत्तराभाद्रपद	11 : 03 : 20	से	11 : 16 : 40 तक
27. रेवती	11 : 16 : 40	से	12 : 00 : 00 तक

विद्यार्थियों को यह भी समझ लेना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष में चान्द्र नक्षत्रों की भूमिका विशेष रूप से है, क्यों कि चन्द्रमा मन का स्वामी है, तथा पृथ्वी का निकटतम उपग्रह होने से जीवन को अत्यधिक प्रभावित करता है। चन्द्रमा अपनी शीघ्र गति के कारण एक नक्षत्र (13 अंश 20 कला) की दूरी को लगभग एक दिन–रात में तय कर लेता है, सूर्य यह दूरी लगभग 13 या 14 दिनों में तय करता है। पंचाँगों में नक्षत्र नाम से चन्द्र किस नक्षत्र पर है और कब तक रहेगा यह दिखाया जाता है। पाराशर के अनुसार विंशोत्तरी आदि दशा भी नक्षत्रों पर ही आधारित है। मुहूर्त्त–शास्त्र में भी नक्षत्रों का महत्त्व अत्यधिक है।

4.3.4 योग

पंचाँग का चतुर्थ महत्त्वपूर्ण अंग योग है। योग सूर्य तथा चन्द्रमा के भोगांशों के योग से बनता है। योगों की संख्या 27 है, जो इस प्रकार हैं।

विष्कुम्भ	शूल	व्यतीपात	ब्रह्म
प्रीति	गण्ड	वरियान	ऐन्द्र
आयुष्मान्	वृद्धि	परिघ	
सौभाग्य	ध्रुव	शिव	
शोभन	व्याघात	सिद्ध	
अतिगण्ड	हर्षण	साध्य	
सुकर्मा	वज्र	शुभ	
धृति	सिद्धि	शुक्ल	

गणिताय गणना के अनुसार इसे इस प्रकार समझा जा सकता है :

$$\frac{\text{चन्द्रमा के भोगांश + सूर्य के भोगांश}}{13° - 20'}$$

360° में 27 योग बनते हैं।

योग की गणना इस प्रकार से की जाएगी।

उदाहरण : जनवरी 18, 1992 को प्रातः 5–30 बजे जब चन्द्रमा का भोगांश है 2–6°–36′ और सूर्य का भोगांश है 9–3°–23′ उस समय का योग ज्ञात करना है।

$$\text{योग} = \frac{93°23' + 26°36'}{800'}$$

$$= \frac{(9X30+3°)X60+23'+\{(2X30)+6°\}X60+36'}{\mathbf{800}}$$

$$= \frac{16403'+3996}{\mathbf{800}}$$

$$= \frac{20399'}{800}$$

$$= 25 \text{ शेष } \frac{399'}{800}$$

अर्थात् 25 वां योग बीत गया है और 26वां योग (ऐन्द्र) चल रहा था।

शुभ और अशुभ योग उनके नामानुसार होते हैं। अशुभ योगों में विष्कुम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिघ और वैधृति हैं। उपर्युक्त योगों को शुभ कार्यों में त्याग देना चाहिए।

4.3.5 करण

पंचाँग का महत्त्वपूर्ण पांचवाँ अंग करण होता है। यह तिथि का आधा भाग होता है। प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं। तिथि के प्रारम्भ से पहला करण शुरू होता है, वह तिथि के मध्य में समाप्त हो जाता है तथा वहाँ से दूसरा करण शुरू हो कर तिथि के अन्त में वह भी समाप्त हो जाता है। जिस प्रकार चन्द्रमा की सूर्य से प्रत्येक 12° की दूरी पर एक तिथि का निर्माण होता है उसी प्रकार 6° की दूरी पर एक करण बनता है। सात चर करण होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं। बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि। चार स्थिर करण होते हैं। इनके नाम हैं शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किंस्तुघ्न। चर करणों की आवृत्ति एक मास में आठ बार होती है, तथा स्थिर करण एक बार ही एक मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के आधे भाग से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के आधे तक होते हैं।

करण= चन्द्र का भोगांश–सूर्य का भोगांश

6°

निम्न तालिका से हम समझ सकते हैं किस प्रकार से करणों की आवृत्ति होती है।

शुक्ल पक्ष			**कृष्ण पक्ष**		
तिथि	**पूर्वार्द्ध**	**उत्तरार्द्ध**	**तिथि**	**पूर्वार्द्ध**	**उत्तरार्द्ध**
प्रतिपदा	किंस्तुघ्न	बव	प्रतिपदा	बालव	कौलव
द्वितीया	बालव	कौलव	द्वितीया	तैतिल	गर
तृतीया	तैतिल	गर	तृतीया	वणिज	विष्टि
चतुर्थी	वणिज	विष्टि	चतुर्थी	बव	बालव
पंचमी	बव	बालव	पंचमी	कौलव	तैतिल
षष्ठी	कौलव	तैतिल	षष्ठी	गर	वणिज
सप्तमी	गर	वणिज	सप्तमी	विष्टि	बव
अष्टमी	विष्टि	बव	अष्टमी	बालव	कौलव
नवमी	बालव	कौलव	नवमी	तैतिल	गर
दशमी	तैतिल	गर	दशमी	वणिज	विष्टि
एकादशी	वणिज	विष्टि	एकादशी	बव	बालव

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
तिथि	**पूर्वार्द्ध**	**उत्तरार्द्ध**	**तिथि**	**पूर्वार्द्ध**	**उत्तरार्द्ध**
द्वादशी	बव	बालव	द्वादशी	कौलव	तैतिल
त्रयोदशी	कौलव	तैतिल	त्रयोदशी	गर	वणिज
चतुर्दशी	गर	वणिज	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
पूर्णिमा	विष्टि	बव	अमावस्या	चतुष्पद	नाग

करणों के स्वामी

क्रम:	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तुघ्न
स्वामी	इन्द्र	ब्रह्मा	मित्र	विश्व	भूमि	लक्ष्मी	यम	कलियुग	रुद्र	सर्प	मरुत्

पंचाँग के मुख्य पाँच अंगों के अतिरिक्त और भी महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं जिनका दैनिक जीवन में उपयोग होता है।

4.4 पंचाँग के अन्य आवश्यक अंग :

दिनमान

सूर्योदय से सूर्यास्त की समयावधि को दिनमान कहते हैं। सूर्यास्त से सूर्योदय घटाकर घण्टे–मिनटों में जो समय प्राप्त होता है उसे अढ़ाई से गुणा कर देने पर घट्यादि में दिनमान प्राप्त होता है। एक ही तिथि को एक ही रेखांश पर अलग–अलग अक्षांशों की भिन्नता से अलग–अलग सूर्योदय व सूर्यास्त होने के कारण दिनमान अलग–अलग होता है। उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तरायण के समय दिनमान में निरन्तर वृद्धि होती है तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणायन में दिनमान की वृद्धि होती है। वर्ष में केवल दो बार 21 मार्च (बसंत सम्पात) व 23 सितम्बर (शरद् सम्पात) को प्रत्येक स्थान का दिनमान समान होता है।

चन्द्र–संचार

प्रायः सभी पंचाँगों में चन्द्र–संचार का भी एक कालम दिया रहता है। भचक्र में भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तो इस प्रकिया को चन्द्र–संचार कहते हैं। चन्द्र राशि प्रवेश का समय घटी–पलों या घण्टे–मिनटों में प्रत्येक पंचाँग में दिया रहता है।

उत्तरी–गोलार्द्ध व दक्षिणी गोलार्द्ध

प्रत्येक पंचाँग में यह भी दिया रहता है कि सूर्य अब उत्तरी गोलार्द्ध में है या दक्षिणी गोलार्द्ध में है। वसन्त सम्पात से शरद् सम्पात तक सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में रहता है तथा **शरद्** सम्पात से वसंत सम्पात तक सूर्य दक्षिण गोलार्द्ध में रहता हैं।

उत्तरी गोलार्द्ध

विषुवत् रेखा (भू–मध्य रेखा) से असीम तक फैला पृथ्वी का उत्तरी भाग उत्तरी गोलार्द्ध है।

दक्षिणी गोलार्द्ध

विषुवत् रेखा से असीम तक फैला पृथ्वी का दक्षिणी भाग दक्षिणी गोलार्द्ध है।

उत्तरायण, दक्षिणायन

मुहूर्त्त आदि बनाने के लिये प्रत्येक पंचाँग में उत्तरायण व दक्षिणायन का ब्यौरा दिया रहता है। उत्तरायण को देवताओं का दिन व दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहा गया है।

उत्तरायण :

सूर्य दो बार विषुवत् वृत्त को पार करता है। एक बार वह शरद् सम्पात में विषुवत् वृत्त पार करके दक्षिण में अपनी चरम स्थिति (23°–27′ दक्षिण) में पहुँचता है, वहां से वह उत्तरवत् चलना प्रारम्भ करता है। सूर्य की दक्षिण से उत्तर की ओर गति का नाम उत्तरायण है। उत्तरायण की अवधि छः मास 22दिसम्बर से 21 जून तक होती है।

दक्षिणायन :

सूर्य उत्तर क्रान्ति पूर्ण करने के पश्चात् दक्षिण की ओर गति करता है, यह गति दक्षिणायन कही जाती है। सूर्य की दक्षिण की ओर गति भी 23°–27′ उत्तर से शुरू हो कर दक्षिण में 23°–27′ तक होती है। दक्षिणायन की अवधि भी छः मास 21 जून से 22 दिसम्बर तक होती है।

ऋतुएं :

ज्योतिष में षड्ऋतुओं का वर्णन होता है। एक अयन में तीन ऋतुएं होती है। उत्तरायण में जो तीन ऋतुएं होती हैं उनके नाम हैं, शिशिर, वसंत तथा ग्रीष्म। वर्षा, शरद् व हेमन्त ये तीन ऋतुएं दक्षिणायन में होती हैं।

ज्योतिष के विद्यार्थियों को यह भी ध्यान में रखना है कि अयन तथा ऋतुएं सायन सूर्य स्पष्ट से बनती हैं निरयण सूर्य स्पष्ट से नहीं।

ग्रहण–विवरण :

प्रत्येक पंचाँग में वर्ष में होने वाले सूर्य और चन्द्र ग्रहणों का पूर्ण विवरण रहता है। सूर्य व चन्द्र ग्रहण का अलग–अलग स्थान पर कब और किस दिन किस अनुपात में ग्रहण होगा इस का पूर्ण ब्यौरा पंचाँग में दिया होता है।

सूर्य–ग्रहण :

पृथ्वी व चन्द्रमा गति करते हुए एक ऐसी स्थिति में पहुँचते हैं जहां सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाता है, उस स्थिति में सूर्य का कुछ भाग पृथ्वी से दिखाई नहीं देता तब सूर्य ग्रहण होता है।

चन्द्र–ग्रहण :

जब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्र ग्रहण होता है। पूर्णिमा के दिन सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आने से पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ने से ग्रहण की स्थिति बनती है। जब सम्पूर्ण चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया पड़ती है तो सम्पूर्ण चन्द्र ग्रहण (खग्रास) की स्थिति बनती है।

विद्यार्थियों को यह भी जान लेना चाहिए कि चन्द्र ग्रहण सदैव पूर्णिमा को तथा सूर्य ग्रहण अमावस्या पर होता है, क्योंकि इन दोनों दिनों में ही सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा तीनों एक सीध में होते हैं।

ग्रह–स्पष्ट :

प्रत्येक पंचाँग में सूर्यादि ग्रहों का भोगांश दिया रहता है। प्रत्येक तिथि के प्रातः 5–30 बजे के निरयण ग्रह स्पष्ट पंचाँग में दिये रहते हैं। ग्रह स्पष्ट के साथ अयनांश भी दिया रहता है, निरयण ग्रह स्पष्ट में अयनांश जोड़ने से सायन ग्रह स्पष्ट बनते हैं।

4.5 पंचाँग अवलोकन विधि

विद्यार्थियों को पंचाँग के बारे में इस इकाई में पूर्ण ज्ञान दिया गया है। पंचाँग किस प्रकार देखना है इस की जानकारी हम आगे लेते हैं। प्रत्येक पंचाँग किसी स्थान विशेष के रेखांश व अक्षांश

पर आधारित होता है, सूर्योदय व सूर्यास्त भी उसी स्थान के दिए रहते हैं। हम दो प्रकार की नमूना प्रतियां साथ में दे रहे हैं। विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ 'पंचाँग दिवाकर' के पृष्ठ नः 85 तथा पृष्ठ नः 108 से ये दो नमूना प्रतियां ली जा रही हैं। नमूना प्रति 1 में 4 मई 2011 से 17 मई 2011 तक का पंचाँग दिया गया है, जिसको इस प्रकार देखा जा सकेगा। सर्वप्रथम बाएं से दाएं सबसे ऊपर वाले कॉलम में लिखा है श्री वि.सं. 2068 शाके 1933 वैशाख शुक्ल पक्ष। इसे हमें इस प्रकार समझना है विक्रमी संवत् 2068, शक संवत् 1933, वैशाख मास का शुक्ल। विद्यार्थियों को ज्ञात रहे कि विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता है और यह चान्द्र संवत् है तथा शक संवत् सायन मेष राशि के सूर्य से आरम्भ होता है। बाएं से दूसरा कॉलम जिस पर तारीखें लिखी हैं इसे इस प्रकार समझना चाहिए। इस कॉलम में आगे 4 छोटे कॉलम हैं, जिन में अलग–अलग प्रकार के वर्षों की तिथियों का वर्णन है। इन्हें इस प्रकार समझें।

सर्वप्रथम 'प्र' के नीचे वैशाख है, यह निरयण वर्ष वैशाख मास की 21 प्रविष्टा है। दूसरे छोटे कॉलम में मई यह ईस्वी सन् का मास मई व उसकी 4 तिथि है, तीसरे कॉलम में फिर वैशाख है, यह वैशाख मास सायन–सौर–वर्ष शक संवत् पर आधारित है तथा उसकी 14 तिथि हैं। चौथे कॉलम में मु. लिखा है जिसका अर्थ हिज़री वर्ष की तिथियां हैं, यहां पर ज.उ.अ. लिखा है जिसका अर्थ है, जमद–उल –अव्वल यह हिज़री वर्ष एक मास का नाम है। हिज़री वर्ष के 12 मास चान्द्रमास हैं तथा ये नए चन्द्र दर्शन से प्रारम्भ होते हैं।

तीसरा कॉलम 'चन्द्र राशि प्रवेश काल' है। इस कॉलम में आप देख सकेगें कि चन्द्रमा वृष राशि में सूर्योदय के पश्चात् 13 घटी 16 पल पर प्रवेश करेगा, इसी के आगे छः मई के सामने मिथुन राशि में सूर्य 37 घटी व 46 पल पर प्रवेश करेगा।

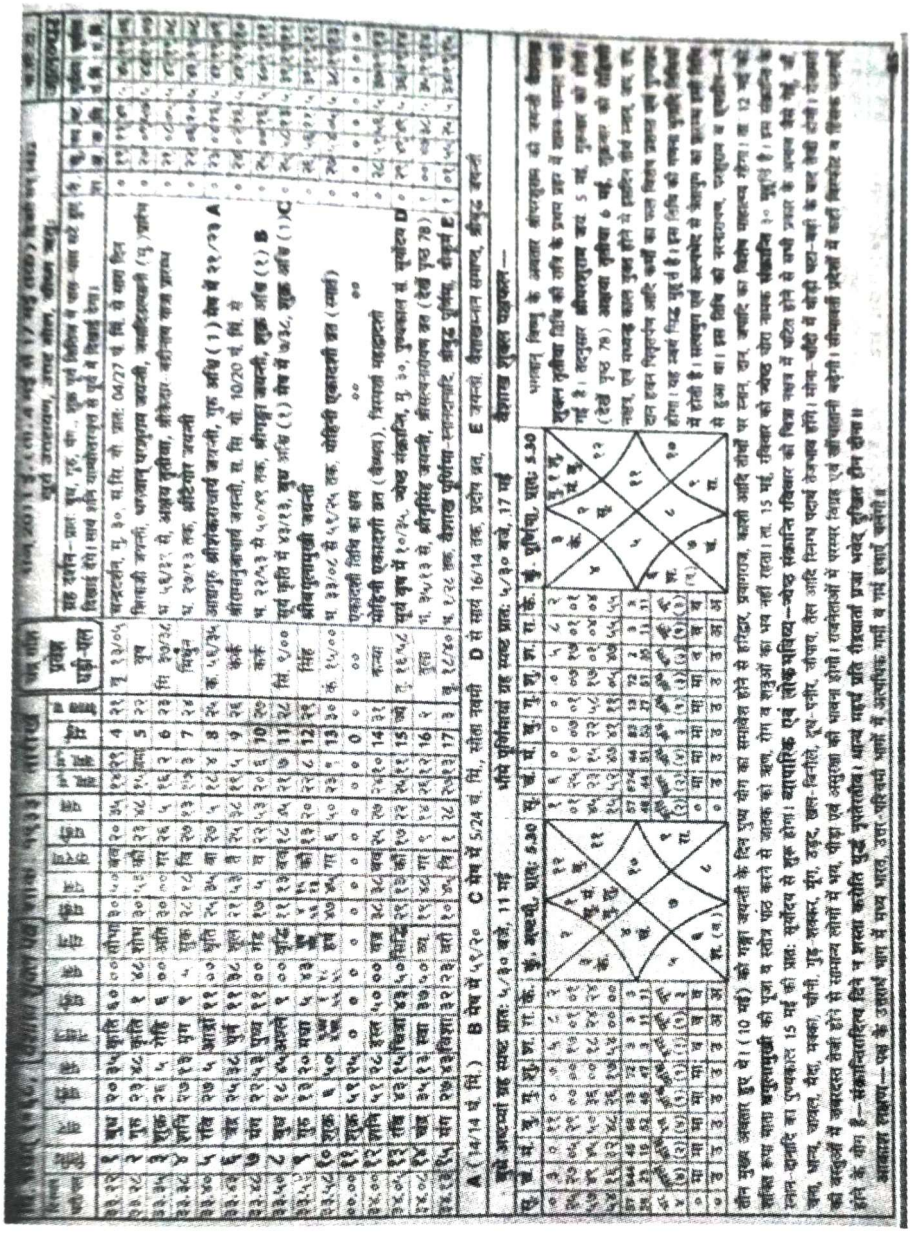
चौथा कॉलम सूर्योदय– सूर्यास्त का है, इस कॉलम में चण्डीगढ़ का सूर्योदय– सूर्यास्त का समय भारतीय स्टै.टाईम में दिया गया है। 4 मई को सूर्योदय 5 बज कर 40 मिनट पर व सूर्यास्त सायं 6 बज कर 58 मिनट पर होगा।

पांचवाँ कॉलम निरयण सूर्य स्पष्ट का है, इस कॉलम में प्रत्येक तिथि का प्रातः 5 बज कर 30 मिनट का निरयण सूर्य स्पष्ट राशि, अंश, कला, विकला में दिया गया है। 4 मई का सूर्य स्पष्ट मेष राशि 19 अंश, 11 कला, 15 विकला है। पंचाँग का छठा कॉलम अन्तिम कॉलम है। इस कॉलम में बताया है कि पक्ष में उत्तरायण है या दक्षिणायन, सूर्य उत्तर गोलार्द्ध में है या दक्षिण गोलार्द्ध में तथा कौन सी ऋतु है। वैशाख शुक्ल पक्ष उत्तरायण में है तथा सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में है और ग्रीष्म ऋतु है।

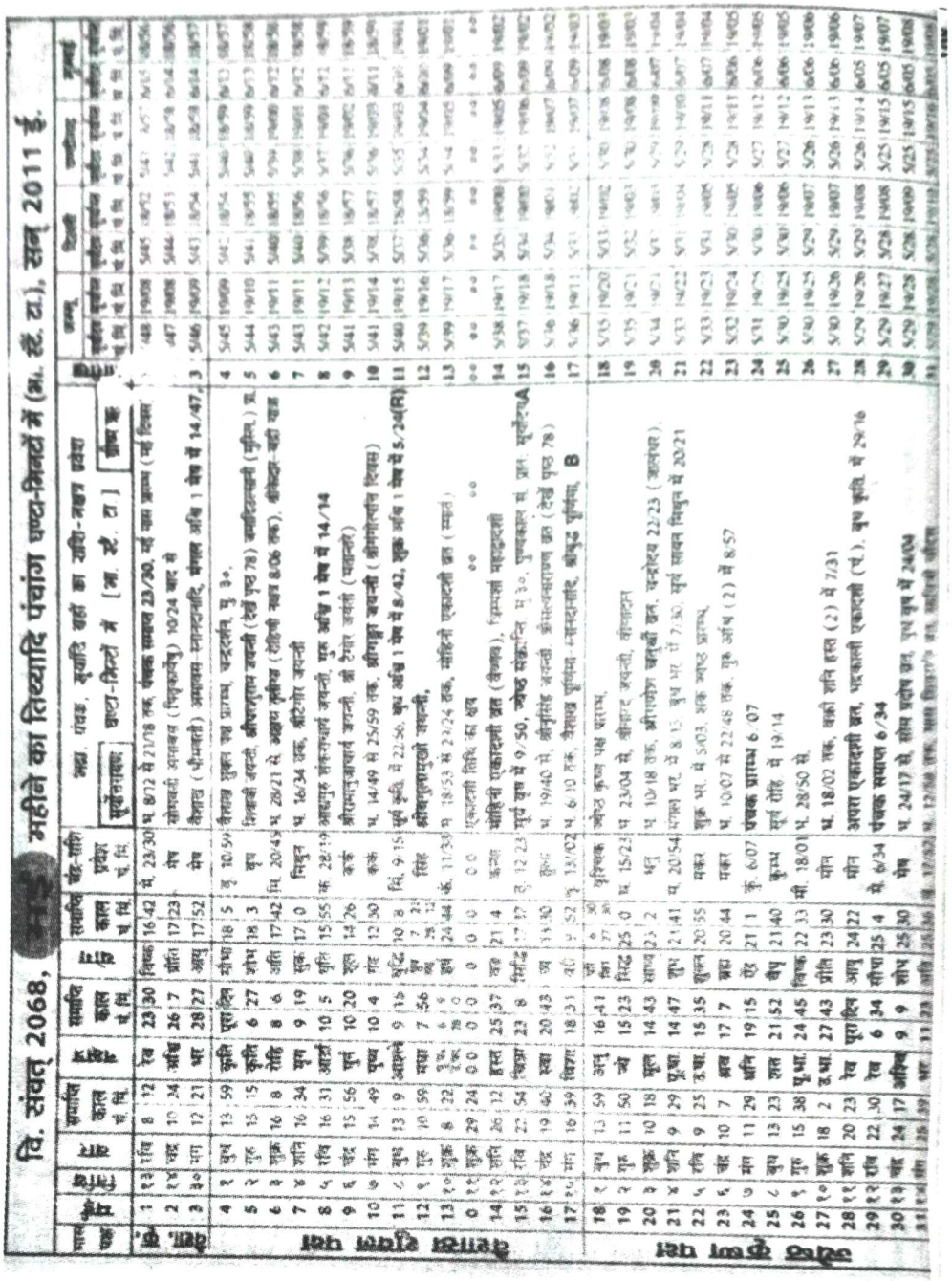
इस के अतिरिक्त इस में नित्य प्रति के त्यौहार, वृत्त, पर्व तथा ग्रह का राशि परिवर्तन ग्रह उदय–अस्त आदि के अनेक विवरण दिए रहते हैं।

बाएं से दाएं ऊपर से नीचे दूसरे कॉलम में दिनमान, तिथि, वार व उनकी घटी पल दिये गये हैं। उदाहरण के लिए 4 मई को दिनमान 33 घटी 22 पल प्रतिपदा तिथि बुधवार 20 घटी 35 पल कृत्तिका नक्षत्र 60 घटी 00 पल सौभाग्य योग 30 घटी 50 पल तथा बव करण 20 घटी 35 पल दिया गया है। अगर हम देखें 5 मई का पंचाँग इस प्रकार बना दिनमान 33 घटी 28 पल द्वितीया 23 घटी 48 पल कृत्तिका नक्षत्र 1 घटी 48 पल शोभन योग 30 घटी 53 पल कौलव करण 23 घटी 25 पल है। यहां पर तिथि, नक्षत्र, योग और करण का समाप्ति काल घटी पलों में दिया गया है। अगर हम पृष्ठ नं. 108 में दूसरे नमूने की प्रति में देखे तो 4 मई का पंचाँग इस प्रकार है तिथि प्रतिपदा बुधवार 13 घं. 59 मिनट अर्थात् 1 बज कर 59 मिनट दोपहर तक कृत्तिका नक्षत्र अगले सूर्योदय तक सौभाग्य योग सायं 6 बज कर 5 मिनट तक है। यहाँ पर समय घण्टे मिनटों में दिया गया है शेष सभी कॉलम नमूना नं. 1 प्रति की तरह ही देखे जाएंगे।

नमूना न. 1



नमूना न. 2



4.6 सारांश

- इस इकाई से यह बोध हो गया होगा कि पंचाँग का ज्योतिष में विशेष स्थान है।

- पंचाँग के पाँच अंग कौन कौन से हैं, वे किस प्रकार बनते हैं तथा ज्योतिष व मुहूर्त्त में इनका क्या प्रयोजन है, इस इकाई से हमें यह ज्ञान अच्छी प्रकार हुआ है।
- उत्तरायण, दक्षिणायन, ऋतुओं का ज्ञान व सूर्य–ग्रहण, चन्द्र–ग्रहण आदि की जानकारी पंचाँग से किस प्रकार होती है का ज्ञान भी इसी इकाई से हमें प्राप्त हुआ है।
- ग्रहों के भोगांशों का विवरण तथा चन्द्र संचार आदि का ज्ञान भी हमें इस इकाई से प्राप्त हुआ है।

4.7 शब्दावली

तिथि– ज्योतिषीय पंचांग का दिनांक[?]।

वार– ज्योतिषीय पंचांग का दिन।

नक्षत्र– तारों का समूह।

योग– चन्द्रमा और सूर्य मिलकर बनने वाला जोड़।

करण– योग का आधा भाग।

अभ्यास प्रश्न

1 पंचाँग के पाँच अंगों के नाम बताएं।

2 शक संवत् सायन सूर्य पर आधारित है या निरयण सूर्य पर।

3 10 मई को सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में होता है या दक्षिणी गोलार्द्ध में।

4 वर्षा ऋतु उत्तरायण में होती है या दक्षिणायन में।

5 क्या सूर्योदय सभी स्थानों पर एक ही समय पर होता है।

6 तिथि की समाप्ति एक ही समय पर सभी स्थानों पर होती है या अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग समय पर होती है।

7 वार का प्रारम्भ मध्य रात्रि से होता है या सूर्योदय से।

8 क्या योगों का क्रमशः आगमन होता है।

9 चर करणों के नाम बताएं।

10 स्थिर करण एक मास में कितनी बार[?] आते हैं।

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1 पंचाँग के पाँच अंग हैं; तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण।

2 शक संवत् सायन सूर्य के मेष राशि से प्रारम्भ होता है जो वसन्त सम्पात पर होती है।

3 10 मई सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में होता है।

4 वर्षा ऋतु दक्षिणायन में होती है।

5 सूर्योदय अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग समय पर होता है, यह उस स्थान के रेखांश व अक्षांश पर निर्भर करता है।

6 तिथि की समाप्ति सभी स्थानों पर एक ही समय पर होती है।

7 वार का प्रारम्भ मध्य रात्रि से नहीं सूर्योदय से होता है।

8 योगों का आगमन क्रमशः होता है।

9 चर करणों के नाम हैं; बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि। चर करणों की आवृत्ति एक मास में आठ बार होती है।

10 स्थिर करण एक मास में एक बार ही आते हैं।

4.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

पन्ना लाल ज्योतिष तत्त्व जनरल बुक डिपो (जालन्धर)

के.के.जोशी मुहूर्त सागर पब्लिकेशन (दिल्ली);2008

वी.पी.जैन खगोल शास्त्र भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान (नई दिल्ली)

पन्ना लाल ज्योतिषी पंचाँग दिवाकर पं. देवी दयाल ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (जालन्धर)

शिव नाथ झारखण्डी 'अनुवादक' भारतीय ज्योतिष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ);1990

4.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

नेमि चन्द्र शास्त्री भारतीय ज्योतिष भारतीय ज्ञान पीठ;

(नई दिल्ली)1952

राणा प्रसाद शर्मा पौराणिक कोश ज्ञान मण्डल लिमिटेड (वाराणसी)

डा. राज बली पाण्डेय हिन्दु धर्म कोष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ);1988

अरुण बंसल सरल ज्योतिष अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ(नई दिल्ली);2010

पंचाँग गणना की आधारभूत जानकारी होना भी आपके लिए आवश्यक है। क्योंकि फलादेश के अनेक महत्वपूर्ण तथ्य है।

4.11 निबंधात्मक प्रश्न

पंचाँग के विभिन्न अंगों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

ब्लॉक - 2

जन्मकुण्डली निर्माण- विधि

इकाई – 5 लग्न एवं द्वादशभाव–स्पष्ट साधन

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3. लग्न–साधन एवं द्वादशभाव–स्पष्ट

5.3.1 लग्न–साधन

5.3.2 दशम–भाव–स्पष्ट

5.3.3 दशम–भाव एवं भाव–स्पष्ट

5.4 सारांश

5.5 शब्दावली

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.8 सहायक/उपयोगी ग्रन्थ

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

काल–गणना के बिना ज्योतिष का आधार नहीं बनता, काल -गणना से ही जन्म–पत्रिका का निर्माण सम्भव है और ज्योतिष में कुण्डली निर्माण के बिना फलादेश करना असंभव है और कुण्डली निर्माण के लिए सबसे पहला कार्य लग्न की गणना करना है। पृथ्वी की गति के आधार पर प्रत्येक लग्न की अवधि लगभग 2 घंटे की होती है और प्रत्येक लग्न अधिकतम 30° का होता है। इस प्रकार प्रत्येक 4 मिनट में लग्न 1° बदल जाता है। इस प्रकार, यदि किसी जातक के जन्म में मात्र 4 मिनट का अंतर आ जाये तो जातक का लग्न परिवर्तन संभव है। परंतु ऐसा तभी संभव है, जब लग्न संधि अवस्था में हो। अन्यथा लग्न दो घंटे की अवधि में समान रहता है यह जरूर है कि प्रत्येक 3°20' पर नवांश के लग्न में अंतर आ सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि लग्न की शुद्ध गणना करना ज्योतिषीय गणना में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। अतः इसके लिए ऐसी विधि की आवश्यकता होती है जिसमें सर्वाधिक शुद्धतम लग्न–स्पष्ट प्राप्त हो सके।

इस इकाई में आपको लग्न–स्पष्ट के साथ–साथ भाव–स्पष्ट की गणना विधि भी सिखायी जायेगी। साथ ही ग्रहों के स्पष्ट रेखांश प्राप्त करने की विधि बतायी जायेगी जिसके पश्चात् पूर्ण कुण्डली प्राप्त हो पायेगी। प्रत्येक कुण्डली तभी संपूर्ण होती है जब लग्न स्पष्ट प्राप्त हो। साथ ही भाव स्पष्ट व भाव मध्य के रेखांश प्राप्त हो तथा साथ ही ग्रह स्पष्ट द्वारा ग्रहों को कुण्डली में स्थापित किया जा सके। हमें आशा है कि इस इकाई से आप ग्रह स्पष्ट व भाव स्पष्ट की जानकारी प्राप्त कर पायेंगे।

आगामी अध्याय में जन्मपत्रिका में जीवन में महत्वपूर्ण समय का निर्धारण करने वाली विंशोत्तरी दशा का अध्ययन कर पायेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य यह है कि आप जान पायें कि लग्न की गणना के लिए किन–किन पदों से गुजरना होता है तथा जन्म का समय जो कि घड़ी में देखा जाता है। जिसको भारतीय मानक समय कहा जाता है, का उपयोग लग्न स्पष्ट गणना में किस प्रकार किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस इकाई का उद्देश्य यह भी है कि आप यह समझ सकें कि जैसा सामान्य जन में विचार रहता है कि भाव 30° का होता है परंतु ऐसा नहीं होता। वास्तव में भाव 30° के स्थान पर यह 31° या 32° या 29° का होता है। इस इकाई की सहायता से आप लग्न स्पष्ट एवं द्वादश भाव की गणना करने में सक्षम हो सकेंगे साथ ही गणना में प्रयुक्त सभी सारणियों की विस्तृत जानकारी नमूना के तौर पर देना है। उदाहरण में इन सारणियों का भी प्रयोग करके भी समझाने की चेष्टा की गयी है।

- लग्न का ज्ञान इस इकाई के अध्ययन के बाद आप प्राप्त कर सकेंगे।
- लग्न स्पष्ट करने की विधि की गणना कर पायेंगे।
- साम्पातिक काल का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- साम्पातिक काल, स्थानीय मानक समय की गणना में महत्व का ज्ञान हो सकेगा।
- साम्पातिक काल की गणना कर सकेंगे।
- अयनांश संस्कार, दशम भाव सारणी व दशम भाव स्पष्ट करने की विधि का ज्ञान हो सकेगा।
- भाव संधि, भाव मध्य व द्वादश भाव स्पष्ट करने की विधि का ज्ञान हो सकेगा।
- चलितकुण्डली, चंद्रकुण्डली की निर्माण विधि का ज्ञान हो सकेगा।

5.3 लग्न–साधन एवं द्वादशभाव–स्पष्ट

कुण्डली निर्माण में सबसे पहले लग्न साधन करना पड़ता है। किसी भी कुण्डली के निर्माण में तीन चीजों की जानकारी चाहिए। वे हैं जन्मसमय, जन्मस्थान व जन्म तारीख।

लग्न

जन्म समय किसी निश्चित स्थान के पूर्वी क्षितिज पर राशि चक्र की जो राशि उदित हो रही होती है वह लग्न कहलाता है।

साम्पातिक समय

लग्न साधन के लिए हमें साम्पातिक समय की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र पूरा करने में 24 घंटे लेती है। लेकिन यही पृथ्वी का चक्र जब किसी निश्चित तारे के सन्दर्भ में पूरा होता है तो 24 घंटे से 3 मिनट 56 सेकेण्ड कम लगते हैं।

इस प्रकार जो समय बनता है उसे साम्पातिक समय कहते हैं।

5.3.1 लग्न–साधन

उदाहरण 1– 12 जून 1987 को समय 3.55 सायं पर कलकत्ता में जन्मे व्यक्ति के लिए जन्म लग्न एवं दशम भाव की गणना करें।

हल – सर्वप्रथम हमें इस तिथि और समय के आधार पर साम्पातिक काल की गणना करनी होगी जिसको हम सारणी–1 द्वारा देखेंगे।

12 जून 2001 के लिए साम्पातिक काल	=	17h	20m	39s
1987 के लिए सारणी–2 से वर्ष शुद्धि संस्कार	=	(-)	02m	24s
अतः 12 जून 1987 (0 hrs.) पर साम्पातिक काल	=	17h	18m	15s
कलकत्ता के लिए समय शुद्धि संस्कार	=		(-)	04s
	=	17h	18m	11s..... (i)

अब हमें जन्म समय 3.55 सायं को स्थानिक समय में परिवर्तन करना होगा इसके लिए कलकत्ता का रेखांश देखेंगे। कलकत्ता का रेखांश 88°20' है। भारत का मध्य रेखांश 82°30' है। अतः कलकत्ता का स्थानीय समय संस्कार का मान + 23m 30s होगा,

जन्म समय	=	15h	55m	00s
समय शुद्धि संस्कार		+00h	23m	20s
जन्म समय का स्थानीय समय	=	16h	18m	20s

उपर्युक्त समय में साम्पातिक काल की शुद्धि सारणी–4 से देखेंगे।

16 घंटे के लिए साम्पातिक काल शुद्धि	=	+	02m	38s
18 मिनट के लिए साम्पातिक काल शुद्धि	=	+	00m	03s
	=	16h	21m	01s ..... (ii)

क्योंकि जन्म समय रात के 12 बजे के बाद है इसलिए समीकरण (i) और (ii) को जोड़ेंगे जिससे वास्तविक साम्पातिक काल प्राप्त होगा,

समीकरण (i) से प्राप्त मान	=	17h	18m	11s .....(i)
समीकरण (ii) से प्राप्त मान	=	+16h	21m	01s ... (ii)
	=	+33h	39m	12s
या अभीष्ट साम्पातिक (24 घंटे घटाने पर)	=	09h	39m	12s

अब हमको साम्पातिक काल 09h 39m 12s के लिए जन्म लग्न एवं दशम भाव की गणना करनी होगी। इसके लिए कलकत्ता के अक्षांश को ध्यान में रखते हुए लग्न सारणी का चयन करना होगा।

कलकत्ता के अक्षांश 22°35' हैं इस आधार पर फ्यूचर पंचांग में लग्न सारणी देखें तो निम्न मान प्राप्त होते हैं।

09h 40m पर लग्न स्पष्ट = 6s 25° 49'

09h 30m पर लग्न स्पष्ट = 6s 23° 37'

10 मिनट में लग्न स्पष्ट का अंतर = 2° 12'

600 सेकंड में लग्न स्पष्ट का अंतर = 132'

9m 12s = 552 सेकंड के लिए लग्न का अंतर = $\frac{132' \times 552\ s}{600\ s}$

= 121' 26" = 2° 1' 26"

09h 30m पर लग्न स्पष्ट = 6' 23° 37' 00"

9m 12s = 552 सेकंड के लिए लग्न का अंतर =+ 2° 01'26"

= 6s 25° 38'26"

सन् 1987 के लिए अयनांश संस्कार

सारणी–5 से देखें =+ 0° 19' 00"

अभीष्ट लग्न स्पष्ट = 6s 25° 57'26"

5.3.2 दशमभाव–स्पष्ट

इसी प्रकार हम दशमभाव–स्पष्ट की गणना करने के लिए साम्पातिक काल 09h 39m 12s के लिए फ्यूचर पंचाँग में दशम भाव सारणी देखेंगे जो लग्न सारणी के अंत में दी गई है।

09h 40m पर दशमभाव–स्पष्ट = 3s 29° 22'

09h 30m पर दशमभाव–स्पष्ट = 3s 26° 49'

2° 33'

10 मिनट में दशमभाव–स्पष्ट का अंतर = 2° 33'

600 सेकेण्ड में दशमभाव–स्पष्ट का अंतर = 153'

9m 12s = 552 सेकेण्ड के लिए

दशमभाव–स्पष्ट का अंतर = $\frac{153' \times 552\ s}{600\ s}$

=140'45" = 2° 20' 45"

09h 30m पर दशमभाव–स्पष्ट	=	3s	26°	49' 00"

8m 07s = 487 सेकेण्ड के लिए

दशम भाव स्पष्ट का अंतर	= +		2°	20' 45"
	=	3s	29°	09' 45"

सन् 1987 के लिए अयनांश संस्कार

सारणी–5 से देखें	= +		0°	19' 00"
अभीष्ट दशमभाव–स्पष्ट	=	3s	29°	28' 45"

5.3.3 दशमभाव एवं भाव–स्पष्ट

किसी निर्धारित समय पर उस स्थान की मध्याह्नरेखा (मध्य आकाश या मध्यबिन्दु) क्रान्तिवृत्त को जिस बिन्दु पर काटती है उस बिन्दु को दशमभाव कहते हैं। दशम भाव का विषुवांश उस समय का सम्पात समय होता है। इसे प्रायः विषुवांश मध्य आकाश भी कहते हैं।

इस प्रकार दशम भाव स्पष्ट करेंगे। दशम भाव के लिए इसी पुस्तक में दी गई तालिका अनुसार गणना करेंगे। यह तालिका सभी स्थानों अर्थात् पृथ्वी के सभी शहरों के लिए एक ही होती है।

प्रथम भाव मध्य	= +	6s	25°	57' 26"
दशम भाव मध्य	= +	3s	29°	28' 45"

$\frac{\text{(प्रथम भाव का मध्य रेखांश) – (दशम भाव का मध्य रेखांश)}}{6}$

$\frac{\text{6s 25° 57' 26" - 3s 29° 28' 45"}}{} = \text{2s 26° 28' 41"}$

6 6

= 86° 28' 41"

6 = 14° 24' 46" 50"' षष्ठांश प्राप्त हुआ है।

नोट–6 से भाग देने का कारण यह है कि दशम भाव से लग्न तक तीन भाव मध्य और तीन भाव संधि (प्रारम्भ) पड़ते हैं।

प्राप्त हुए षष्ठांश के दशम भाव के मध्य रेखांश में बारी–बारी जोड़ते जाने पर क्रमशः अगले भावों के भाव मध्य व संधि रेखांश प्राप्त हो जाएंगे।

दशम भाव मध्य रेखांश	=	3s	29°	28'	45"00"'
प्रथम व दशम भाव के बीच षष्ठांश	= +		14°	24'	46"50"'
दशम व एकादश भाव संधि रेखांश	=	4s	13°	53'	31"50"'
	+		14°	24'	46"50"'
एकादश भाव मध्य रेखांश	=	4s	28°	18'	18"40"'
	+		14°	24'	46"50"'
एकादश एवं द्वादश भाव संधि रेखांश	=	5s	12°	43'	05"30"'
	+		14°	24'	46"50"'
द्वादश भाव मध्य रेखांश	=	5s	27°	07'	52"20"'
	+		14°	24'	46"50"'
द्वादश एवं प्रथम भाव संधि रेखांश	=	6s	11°	32'	39"10"'
	+		14°	24'	46"50"'
प्रथम भाव मध्य रेखांश	=	6s	25°	57'	26"00"'

अब प्राप्त हुए स्पष्ट भाव मध्य रेखांश और भाव संधि रेखांश में 6 राशि जोड़ देने से भाव के सामने वाले भाव मध्य और भाव संधि रेखांश स्पष्ट हो जाएंगे।

जैसे–

• दशम भाव का मध्य रेखांश	=	3s	29°	28' 45"00'"
	+	6s		
चतुर्थ भाव मध्य रेखांश	=	9s	29°	28' 45"00'"
• 10वें और 11वें भाव का संधि रेखांश	=	4s	13°	53' 31"50'"
	+	6s		
चतुर्थ और पंचम भाव का संधि रेखांश	=	10s	13°	53' 31"50'"
• 11वें भाव का मध्य रेखांश	=	4s	28°	18' 18"40'"
	+	6s		
पंचम भाव का मध्य रेखांश	=	10s	28°	18' 18"40'"
• 11वें और 12वें भाव का संधि रेखांश	=	5s	12°	43' 05"30'"
	+	6s		
पंचम और षष्ठ भाव का संधि रेखांश	=	11s	12°	43' 05"30'"
• 12वें भाव का मध्य रेखांश	=	5s	27°	07' 52"20'"
	+	6s		
षष्ठ भाव का मध्य रेखांश	=	11s	27°	07' 52"20'"
• 12वें और प्रथम भाव का संधि रेखांश	=	6s	11°	32' 39"10'"
	+	6s		
षष्ठ और सप्तम भाव का संधि रेखांश	=	0s	11°	32' 39"10'"
• प्रथम भाव का मध्य रेखांश	=	6s	25°	57' 26"00'"
	+	6s		
सप्तम भाव का मध्य रेखांश	=	0s	25°	57' 26"00'"

इस प्रकार प्रथम भाव के मध्य रेखांश से चतुर्थ भाव के मध्य रेखांश के अंतर को लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ भावों के भाव मध्य और भाव संधि रेखांश ज्ञात करेंगे।

जैसे–

चतुर्थ भाव का मध्य रेखांश = 9s 29° 28' 45"00'"

प्रथम भाव का मध्य रेखांश = 6s 25° 57' 26"00'"

अंतर = 3s 3° 31' 19"00'"

षष्ठांश ज्ञात करने के लिए इस अंतर में 6 से भाग देंगे,

$\frac{3s\ 3°\ 31'\ 19"\ 00'"}{6} = \frac{93°\ 31'\ 19"}{6} = 15°\ 35'\ 13"\ 10'"$

प्राप्त हुए षष्ठांश को प्रथम भाव मध्य रेखांश में बारी–बारी जोड़े जाने से क्रमशः अगले भावों के भाव मध्य व संधि रेखांश प्राप्त हो जायेंगे।

प्रथम भाव मध्य रेखांश = 6s 25° 57' 26"00'"

\+ 15° 35' 13"10'"

प्रथम और द्वितीय भाव संधि रेखांश = 7s 11° 32' 39"10'"

\+ 15° 35' 13"10'"

द्वितीय भाव मध्य रेखांश = 7s 27° 07' 52"20'"

\+ 15° 35' 13"10'"

द्वितीय और तृतीय भाव संधि रेखांश = 8s 12° 43' 05"30'"

\+ 15° 35' 13"10'"

तृतीय भाव मध्य रेखांश = 8s 28° 18' 18"40'"

\+ 15° 35' 13"10'"

तृतीय व चतुर्थ भाव संधि रेखांश = 9s 13° 53' 31"50'"

\+ 15° 35' 13"10'"

चतुर्थ भाव मध्य रेखांश = 9s 29° 38' 45"00'"

अब प्राप्त हुए स्पष्ट भाव मध्य और संधि रेखांश में 6 राशि जोड़ देने से भाव के सामने वाले भाव मध्य और संधि रेखांश स्पष्ट हो जाएंगे। जैसे हमने दशम से प्रथम भावों के रेखाशों में 6 राशि जोड़ी है। उसी तरह से यह भी प्रथम से चतुर्थ भावों में 6 राशि जोड़ेंगे।

• प्रथम भाव मध्य रेखांश = 6s 25° 57' 26"00'"

+ 6s

सप्तम भाव मध्य रेखांश = 0s 25° 57' 26"00'"

• प्रथम और द्वितीय भाव संधि रेखांश = 7s 11° 32' 39"10'"

+ 6s

सप्तम और अष्टम भाव संधि रेखांश = 1s 11° 32' 39"10'"

• द्वितीय भाव मध्य रेखांश = 7s 27° 7' 52" 20'"

+ 6s

अष्टम भाव मध्य रेखांश = 1s 27° 7' 52" 20'"

• द्वितीय और तृतीय भाव संधि = 8s 12° 43' 05"30'"

+ 6s

अष्टम और नवम भाव संधि रेखांश = 2s 12° 43' 05"30'"

• तृतीय भाव मध्य रेखांश = 8s 28° 18' 18"40'"

+ 6s

नवम भाव मध्य रेखांश = 2s 28° 18' 18"40'"

• तृतीय और चतुर्थ भाव संधि रेखांश = 9s 13° 53' 31"50'"

+ 6s

नवम और दशम भाव संधि रेखांश = 3s 13° 53' 31"50'"

• चतुर्थ भाव मध्य रेखांश = 9s 29° 38' 45"00'"

+ 6s

दशम भाव मध्य रेखांश = 3s 29° 38' 45"00'"

भावस्पष्ट-तालिका

भाव	भाव प्रारंभ (सन्धि)	भाव मध्य
1.	$06^{\text{रा}}$ 11° 32' 39" 10'"	$06^{\text{रा}}$ 25° 57' 26" 00'"
2.	$07^{\text{रा}}$ 11° 32' 39" 10'"	$07^{\text{रा}}$ 27° 07' 52" 20'"
3.	$08^{\text{रा}}$ 12° 43' 05" 30'"	$08^{\text{रा}}$ 28° 18' 18" 40'"
4.	$09^{\text{रा}}$ 13° 53' 31" 50'"	$09^{\text{रा}}$ 29° 28' 45" 00'"
5.	$10^{\text{रा}}$ 13° 53' 31" 50'"	$10^{\text{रा}}$ 28° 18' 18" 40'"
6.	$11^{\text{रा}}$ 12° 43' 05" 30'"	$11^{\text{रा}}$ 27° 07' 52" 20'"
7.	$00^{\text{रा}}$ 11° 32' 39" 10'"	$00^{\text{रा}}$ 25° 57' 26" 00'"
8.	$01^{\text{रा}}$ 11° 32' 39" 10'"	$01^{\text{रा}}$ 27° 07' 52" 20'"
9.	$02^{\text{रा}}$ 12° 43' 05" 30'"	$02^{\text{रा}}$ 28° 18' 18" 40'"
10.	$03^{\text{रा}}$ 13° 53' 31" 50'"	$03^{\text{रा}}$ 29° 28' 45" 00'"
11.	$04^{\text{रा}}$ 13° 53' 31" 50'"	$04^{\text{रा}}$ 28° 18' 18" 40'"
12.	$05^{\text{रा}}$ 12° 43' 05" 30'"	$05^{\text{रा}}$ 27° 07' 52" 20'"

सारणी–1 : वर्ष 2001 के लिए समय 00:00 घंटे पर 82°30' पर साम्पातिक काल

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
जनवरी		22	10:06:58	14	13:28:02	5	16:53:03	29	20:25:57	19	23:50:58	10	03:15:59
1	6:41:57	23	10:10:55	15	13:31:59	6	16:57:00	30	20:29:54	20	23:54:55	11	03:19:56
2	6:45:54	24	10:14:51	16	13:35:56	7	17:00:56	31	20:33:50	21	23:58:51	12	03:23:52
3	6:49:50	25	10:18:48	17	13:39:52	8	17:04:53	अगस्त		22	00:02:48	13	03:27:49
4	6:53:47	26	10:22:44	18	13:43:49	9	17:08:50	1	20:37:47	23	00:06:44	14	03:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
													31:45
5	6:57:43	27	10:26:41	19	13:47:45	10	17:12:46	2	20:41:44	24	00:10:41	15	03:35:42
6	7:01:40	28	10:30:37	20	13:51:42	11	17:16:43	3	20:45:40	25	00:14:38	16	03:39:38
7	7:05:37	29	10:34:34	21	13:55:38	12	17:20:39	4	20:49:37	26	00:18:34	17	03:43:35

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
8	7:09:33	मार्च		22	13:59:35	13	17:24:36	5	20:53:33	27	00:22:31	18	03:47:32
9	7:13:30	1	10:34:34	23	14:03:31	14	17:28:32	6	20:57:30	28	00:26:27	19	03:51:28
10	7:17:26	2	10:38:31	24	14:07:28	15	17:32:29	7	21:01:26	29	00:30:24	20	03:55:25
11	7:21:23	3	10:42:27	25	14:11:25	16	17:36:25	8	21:05:23	30	00:34:20	21	03:59:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
													21
12	7:25:19	4	10:46:24	26	14:15:21	17	17:40:22	9	21:09:19	अक्तूबर		22	04:03:18
13	7:29:16	5	10:50:20	27	14:19:18	18	17:44:19	10	21:13:16	1	00:38:17	23	04:07:14
14	7:33:12	6	10:54:17	28	14:23:14	19	17:48:15	11	21:17:13	2	00:42:13	24	04:11:11
15	7:37:09	7	10:58:13	29	14:27:11	20	17:52:12	12	21:21:09	3	00:46:10	25	04:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
													15:07
16	7:41:06	8	11:02:10	30	14:31:07	21	17:56:08	13	21:25:06	4	00:50:07	26	04:19:04
17	7:45:02	9	11:06:06	मई		22	18:00:05	14	21:29:02	5	00:54:03	27	04:23:01
18	7:48:59	10	11:10:03	1	14:35:04	23	18:04:01	15	21:32:59	6	00:58:00	28	04:26:57

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
19	7:52:55	11	11:14:00	2	14:39:00	24	18:07:58	16	21:36:55	7	01:01:56	29	04:30:54
20	7:56:52	12	11:17:56	3	14:42:57	25	18:11:54	17	21:40:52	8	01:05:53	30	04:34:50
21	8:00:48	13	11:21:53	4	14:46:54	26	18:15:51	18	21:44:48	9	01:09:49	दिसंबर	
22	8:04:45	14	11:25:49	5	14:50:50	27	18:19:48	19	21:48:45	10	01:13:46	1	04:38:47
23	8:08:41	15	11:29:46	6	14:54:47	28	18:23:44	20	21:52:42	11	01:17:42	2	04:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
													42:43
24	8:12:38	16	11:33:42	7	14:58:43	29	18:27:41	21	21:56:38	12	01:21:39	3	04:46:40
25	8:16:35	17	11:37:39	8	15:02:40	30	18:31:37	22	22:00:35	13	01:25:36	4	04:50:36
26	8:20:31	18	11:41:35	9	15:06:36	जुलाई		23	22:04:31	14	01:29:32	5	04:54:33

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
27	8:24:28	19	11:45:32	10	15:10:33	1	18:35:34	24	22:08:28	15	01:33:29	6	04:58:30
28	8:28:24	20	11:49:29	11	15:14:29	2	18:39:30	25	22:12:24	16	01:37:25	7	05:02:26
29	8:32:21	21	11:53:25	12	15:18:26	3	18:43:27	26	22:16:21	17	01:41:22	8	05:06:23
30	8:36:17	22	11:57:22	13	15:22:23	4	18:47:23	27	22:20:17	18	01:45:18	9	05:10:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
													19
31	8:40:14	23	12:01:18	14	15:26:19	5	18:51:20	28	22:24:14	19	01:49:15	10	05:14:16
फरवरी		24	12:05:15	15	15:30:16	6	18:55:17	29	22:28:11	20	01:53:11	11	05:18:12
1	8:44:10	25	12:09:11	16	15:34:12	7	18:59:13	30	22:32:07	21	01:57:08	12	05:22:09
2	8:48:07	26	12:13:08	17	15:38:09	8	19:03:10	31	22:36:04	22	02:01:05	13	05:26:05
3	8:52:04	27	12:17:04	18	15:42:05	9	19:07:06	सितंबर		23	02:05:01	14	05:30:02
4	8:56:00	28	12:21:01	19	15:46:02	10	19:11:03	1	22:40:00	24	02:08:58	15	05:33:59
5	8:59:57	29	12:24:58	20	15:49:58	11	19:14:59	2	22:43:57	25	02:12:54	16	05:37:55
6	9:03:53	30	12:28:54	21	15:53:55	12	19:18:56	3	22:47:53	26	02:16:51	17	05:41:52
7	9:07:50	31	12:32:51	22	15:57:52	13	19:22:52	4	22:51:50	27	02:20:47	18	05:45:48

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
8	9:11:46	अप्रैल		23	16:01:48	14	19:26:49	5	22:55:46	28	02:24:44	19	05:49:45
9	9:15:43	1	12:36:47	24	16:05:45	15	19:30:46	6	22:59:43	29	02:28:40	20	05:53:41
10	9:19:39	2	12:40:44	25	16:09:41	16	19:34:42	7	23:03:40	30	02:22:37	21	05:57:38
11	9:23:36	3	12:44:40	26	16:13:38	17	19:38:39	8	23:07:36	31	02:36:34	22	06:01:34
12	9:27:33	4	12:48:37	27	16:17:34	18	19:42:35	9	23:11:33	नवंबर		23	06:05:31
13	9:31:29	5	12:52:33	28	16:21:31	19	19:46:32	10	23:15:29	1	02:40:30	24	06:09:28
14	9:35:26	6	12:56:30	29	16:25:27	20	19:50:28	11	23:19:26	2	02:44:27	25	06:13:24
15	9:39:22	7	13:00:27	30	16:29:24	21	19:54:25	12	23:23:22	3	02:48:23	26	06:17:21
16	9:43:19	8	13:04:23	31	16:33:21	22	19:58:21	13	23:27:19	4	02:52:20	27	06:21:17
17	9:47:15	9	13:08:20	जून		23	20:02:18	14	23:31:15	5	02:56:16	28	06:25:14
18	9:51:12	10	13:12:16	1	16:37:17	24	20:06:15	15	23:35:12	6	03:00:13	29	06:29:10
19	9:55:08	11	13:16:13	2	16:41:14	25	20:10:11	16	23:39:09	7	03:04:09	30	06:33:07
2	9:59:0	12	13:20:09	3	16:45:10	2	20:14:	17	23:43:	8	03:08:	31	06:37:

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
0	5					6	08		05		06		03
21	10:03:02	13	13:24:06	4	16:49:07	27	20:18:04	18	23:47:02	9	03:12:03		
						28	20:22:01						

सारणी–2 : विभिन्न वर्षों के लिए शुद्धि संस्कार

(सारणी–1 से प्राप्त मानों पर लागू करने हेतु)

* केवल जनवरी एवं फरवरी के लिए

वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार
	मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से
1901	-03:04	1926	-3:17	1951	-03:30	1976*	-03:43	2000	+00:57	2025	+00:45
1902	-04:02	1927	-4:15	1952*	-04:28	1976	+00:13	2001	+00:00	2026	-00:13
1903	-04:59	1928*	-5:12	1952	-00:31	1977	-00:44	2002	-00:57	2027	-01:10
1904*	-05:56	1928	-1:16	1953	-01:28	1978	-01:41	2003	-01:54	2028*	-02:07
1904	-02:00	1929	-2:13	1954	-02:26	1979	-02:39	2004*	-02:52	2028	+01:49

वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से	वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से	वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से	वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से	वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से	वर्ष	शुद्धि संस्कार मि : से
1905	-02:57	1930	-3:10	1955	-03:23	1980*	-03:36	2004	+01:05	2029	+00:52
1906	-03:54	1931	-4:07	1956*	-04:20	1980	+00:20	2005	+00:08	2030	-00:05
1907	-04:51	1932*	-5:04	1956	-00:24	1981	-00:37	2006	-00:50	2031	-01:03
1908*	-05:49	1932	-1:08	1957	-01:21	1982	-01:34	2007	-01:57	2032*	-02:00
1908	-01:52	1933	-2:05	1958	-02:18	1983	-02:31	2008*	-02:44	2032	+01:56
1909	-02:50	1934	-3:03	1959	-03:16	1984*	-03:29	2008	+01:12	2033	+00:59
1910	-03:47	1935	-4:00	1960*	-04:13	1984	+00:28	2009	+00:15	2034	+00:02
1911	-04:44	1936*	-4:57	1960	-00:16	1985	-00:29	2010	-00:42	2035	-00:55
1912*	-05:41	1936	-1:01	1961	-01:14	1986	-01:27	2011	-01:40	2036*	-01:53
1912	-01:45	1937	-1:58	1962	-02:11	1987	-02:24	2012*	-02:37	2036	+02:04
1913	-02:42	1938	-2:55	1963	-03:08	1988*	-03:21	2012	+01:19	2037	+01:07
1914	-03:39	1939	-3:52	1964*	-04:05	1988	+00:35	2013	+00:22	2038	+00:09
1915	-04:37	1940*	-4:50	1964	-00:09	1989	-00:22	2014	-00:35	2039	-00:48
1916	-	1940	-0:53	1965	-	1990	-	2015	-	2040	-

वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार
	मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से
*	05:34				01:06		01:19		01:32	*	01:45
1916	- 02:36	1941	- 01:50	1966	- 02:03	1991	- 02:16	2016 *	- 02:29	2040	+02:11
1917	- 02:35	1942	- 02:48	1967	- 03:01	1992 *	- 03:14	2016	+01:27	2041	+01:14
1918	- 03:32	1943	- 03:45	1968 *	- 03:58	1992	+00:43	2017	+00:30	2042	+00:17
1919	- 04:29	1944 *	- 04:42	1968	- 00:02	1993	- 00:15	2018	- 00:28	2043	- 00:41
1920 *	- 05:27	1944	- 00:46	1969	- 00:59	1994	- 01:12	2019	- 01:25	2044 *	- 01:38
1920	- 01:30	1945	- 01:43	1970	- 01:56	1995	- 02:09	2020 *	- 02:22	2044	+02:18
1921	- 02:27	1946	- 02:40	1971	- 02:53	1996 *	- 03:06	2020	+01:34	2045	+01:21
1922	- 03:25	1947	- 03:38	1972 *	- 03:51	1996	+00:50	2021	+00:37	2046	+00:24
1923	- 04:22	1948 *	- 04:35	1972	+00:06	1997	- 00:07	2022	- 00:20	2047	- 00:33
1924 *	- 05:19	1948	- 00:39	1973	- 00:51	1998	- 01:04	2023	- 01:17	2048 *	- 01:30
1924	- 01:23	1949	- 01:36	1974	- 01:49	1999	- 02:02	2024 *	- 02:15	2048	+02:26
1925	- 02:20	1950	- 02:33	1975	- 02:46	2000 *	- 02:59	2024	+01:42	2049	+01:29
										2050	+00:32

सारणी–2 : विभिन्न वर्षों के लिए शुद्धि संस्कार

(सारणी–1 से प्राप्त मानों पर लागू करने हेतु)

* केवल जनवरी एवं फरवरी के लिए

वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार
	मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से		मि : से
2051	-00:26	2060*	-01:08	2068*	-00:54	2076*	-00:39	2084*	-00:24	2092*	-00:09
2052*	-01:23	2060	+02:48	2068	+03:03	2076	+03:18	2084	+03:32	2092	+03:47
2052	+02:33	2061	+01:51	2069	+02:06	2077	+02:20	2085	+02:35	2093	+02:50
2053	+02:36	2062	+00:54	2070	+01:08	2078	+01:23	2086	+01:38	2094	+01:53
2054	+00:39	2063	-00:04	2071	+00:11	2079	+00:26	2087	+00:41	2095	+00:55
2055	-00:18	2064*	-01:01	2072*	-00:46	2080*	-00:31	2088*	-00:17	2096*	-00:02
2056*	-01:16	2064	+02:55	2072	+03:10	2080	+03:25	2088	+03:40	2096	+03:54
2056	+02:41	2065	+01:58	2073	+02:13	2081	+02:28	2089	+02:43	2097	+02:57
2057	+01:44	2066	+01:01	2074	+01:16	2082	+01:31	2090	+01:45	2098	+02:00
2058	+00:46	2067	+00:04	2075	+00:19	2083	+00:33	2091	+00:48	2099	+01:03
2059	-00:11									2100	+00:05

सारणी–3 : विभिन्न स्थानों के लिए साम्पातिक काल शुद्धि संस्कार

स्थान	रेखांश	शुद्धि मि. से.		
इलाहाबाद	81° 52' पू.	+	0	0
बैंगलोर	77° 36' पू.	+	0	2
बैंकॉक	100° 30' पू.	-	0	12
मुंबई	72° 50' पू.	+	0	6
कोलकाता	88° 23' पू.	-	0	4
कोलंबो	79° 52' पू.	+	0	2
ढाका	90° 25' पू.	-	0	5
दिल्ली	77° 13' पू.	+	0	3
ग्रीनवीच	0° 0' पू.	+	0	54
इस्लामाबाद	73° 10' पू.	+	0	6
क्वालालाम्पुर	101° 43' पू.	-	0	13
चेन्नई	80° 15' पू.	+	0	1
न्यूयॉर्क	74° 00' प.	+	1	43
पुणे	73° 53' पू.	+	0	6
रंगून	96° 10' पू.	-	0	9
वाराणसी	83° 01' पू.	-	0	0

सारणी–4 : समय वृद्धि अंतराल के लिए घंटा मिनटों का शुद्धि संस्कार

समय शुद्धि			समय शुद्धि		
घंटे	मि.	से.	घंटे	मि.	से.
1	+0	10	20	3	17

समय शुद्धि			समय शुद्धि		
घंटे	मि.	से.	घंटे	मि.	से.
2	0	20	21	3	27
3	0	30	22	3	37
4	0	39	23	3	47
5	0	49	24	+3	57
6	0	59	मिनट	मि.	से.
7	1	9	6	+0	1
8	1	19	12	0	2
9	1	29	18	0	3
10	1	39	24	0	4
11	1	48	30	0	5
12	1	58	36	0	6
13	2	8	42	0	7
14	2	18	48	0	8
15	2	28	54	0	9
16	2	38	60	+0	10
17	2	48			
18	2	57			
19	3	7			

सारणी–5 : अयनांश संस्कार

वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार
	० '		० '		० '		० '		० '		० '
100	+26:34	1919	+1:16	1956	+0:45	1992	+0:15	2028	-0:16	2064	-0:46
200	+25:01	1920	+1:15	1957	+0:44	1993	+0:14	2029	-0:16	2065	-0:47
300	+23:47	1921	+1:14	1958	+0:43	1994	+0:13	2030	-0:17	2066	-0:47
400	+22:25	1922	+1:14	1959	+0:43	1995	+0:12	2031	-0:18	2067	-0:48
500	+21:01	1923	+1:13	1960	+0:42	1996	+0:11	2032	-0:19	2068	-0:49
600	+19:38	1924	+1:12	1961	+0:41	1997	+0:11	2033	-0:20	2069	-0:50
700	+18:15	1925	+1:11	1962	+0:40	1998	+0:10	2034	-0:20	2070	-0:51
800	+16:51	1926	+1:10	1963	+0:39	1999	+0:09	2035	-0:21	2071	-0:51
900	+15:28	1927	+1:10	1964	+0:39	2000	+0:08	2036	-0:22	2072	-0:52
100	+14:05	192	+1:9	196	+0:38	200	+0:08	203	-0:23	207	-

वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार
	० '		० '		० '		० '		० '		० '
0		8		5		1		7		3	0:53
1100	+12:41	1929	+1:8	1966	+0:37	2002	+0:07	2038	-0:23	2074	-0:54
1200	+11:18	1930	+1:7	1967	+0:36	2003	+0:06	2039	-0:24	2075	-0:54
1300	+9:54	1931	+1:6	1968	+0:35	2004	+0:05	2040	-0:25	2076	-0:55
1400	+8:30	1932	+1:5	1969	+0:34	2005	+0:04	2041	-0:26	2077	-0:56
1500	+7:07	1933	+1:4	1970	+0:33	2006	+0:03	2042	-0:27	2078	-0:57
1600	+5:43	1934	+1:3	1971	+0:32	2007	+0:02	2043	-0:28	2079	-0:58
1700	+4:20	1935	+1:2	1972	+0:31	2008	+0:01	2044	-0:29	2080	-0:59
1800	+2:56	1936	+1:1	1973	+0:30	2009	+0:00	2045	-0:30	2081	-1:00
1900	+1:32	1937	+1:0	1974	+0:30	2010	-0:00	2046	-0:31	2082	-1:0

वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार
	० '		० '		० '		० '		० '		० '
											1
1901	+1:31	1938	+1:0	1975	+0:29	2011	-0:01	2047	-0:32	2083	-1:02
1902	+1:30	1939	+0:59	1976	+0:28	2012	-0:02	2048	-0:32	2084	-1:03
1903	+1:29	1940	+0:58	1977	+0:27	2013	-0:03	2049	-0:33	2085	-1:03
1904	+1:29	1941	+0:58	1978	+0:27	2014	-0:04	2050	-0:34	2086	-1:04
1905	+1:28	1942	+0:57	1979	+0:26	2015	-0:04	2051	-0:35	2087	-1:05
1906	+1:27	1943	+0:56	1980	+0:25	2016	-0:05	2052	-0:35	2088	-1:06
1907	+1:26	1944	+0:55	1981	+0:24	2017	-0:06	2053	-0:36	2089	-1:07
1908	+1:26	1945	+0:55	1982	+0:24	2018	-0:07	2054	-0:37	2090	-1:07
1909	+1:25	1946	+0:54	1983	+0:23	2019	-0:07	2055	-0:38	2091	-1:08

वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार
	० '		० '		० '		० '		० '		० '
1910	+1:24	1947	+0:53	1984	+0:22	2020	-0:08	2056	-0:39	2092	-1:09
1911	+1:23	1948	+0:52	1985	+0:21	2021	-0:09	2057	-0:39	2093	-1:10
1912	+1:22	1949	+0:51	1986	+0:20	2022	-0:10	2058	-0:40	2094	-1:10
1913	+1:21	1950	+0:50	1987	+0:19	2023	-0:11	2059	-0:41	2095	-1:11
1914	+1:20	1951	+0:49	1988	+0:18	2024	-0:12	2060	-0:42	2096	-1:12
1915	+1:19	1952	+0:48	1989	+0:17	2025	-0:13	2061	-0:43	2097	-1:13
1916	+1:18	1953	+0:47	1990	+0:16	2026	-0:14	2062	-0:44	2098	-1:14
1917	+1:17	1954	+0:46	1991	+0:15	2027	-0:15	2063	-0:45	2099	-1:15
1918	+1:17	1955	+0:45							2100	-1:16

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 18°58' (मुंबई)				अक्षांश 20°				अक्षांश 22°35' (कोलकाता)			
मि	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 13 47	5 6 00	7 28 13	11 6 00	2 14 14	5 6 00	7 27 45	11 6 00	2 15 23	5 6 00	7 26 36	11 6 00
10	16 02	8 22	8 0 28	9 12	16 29	8 21	8 0 01	9 14	17 37	8 18	28 50	9 19
20	18 16	10 44	2 44	12 24	18 43	10 42	2 16	12 28	19 50	10 37	8 1 06	12 38
30	20 30	13 06	5 01	15 35	20 56	13 03	4 33	15 41	22 03	12 55	3 21	15 57
40	22 44	15 28	7 19	18 45	23 09	15 24	6 51	18 53	24 15	15 13	5 38	19 14
50	24 57	17 50	9 37	21 55	25 22	17 45	9 09	22 04	26 27	17 31	7 56	22 30
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 27	5 20	8 11	11 25	2 27	5 20	8 11	11 25	2 28	5 19	8 10	11 25

	10	12	57	03	35	05	29	14	38	49	16	45
10	29 23	22 33	14 18	28 09	29 48	22 25	13 49	28 23	3 0 50	22 07	12 36	28 58
20	3 1 37	24 54	16 40	0 1 14	3 2 00	24 45	16 12	0 1 29	3 01	24 24	14 58	0 2 09
30	3 50	27 14	19 04	4 17	4 13	27 05	18 35	4 34	5 12	26 41	17 22	5 17
40	6 03	29 35	21 29	7 18	6 26	29 24	21 00	7 36	7 24	28 58	19 47	8 23
50	8 17	6 1 54	23 55	10 17	8 39	6 1 43	23 27	10 36	9 35	6 1 14	22 14	11 27
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 10 30	6 4 14	8 26 24	0 13 14	3 10 52	6 4 01	8 25 55	0 13 34	3 11 47	6 3 30	8 24 42	0 14 28
10	12 44	6 32	28 54	16 08	13 05	6 19	28 26	16 30	13 58	5 46	27 13	17 27
20	14 59	8 51	1 26	19 00	15 19	8 37	9 0 58	19 23	16 10	8 01	29 46	20 23
30	17 13	11 09	9 4 00	21 50	17 33	10 54	3 32	22 14	18 23	10 16	9 2 21	23 16
40	19	13	6	24	19	13	6	25	20	12	4	26

	29	26	36	37	48	10	09	02	35	31	59	06
50	21 44	15 43	9 14	27 22	22 02	15 26	8 48	27 48	22 48	14 45	7 39	28 54
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 24 00	6 17 59	9 11 54	1 0 05	3 24 18	6 17 42	9 11 29	1 0 31	3 25 01	6 16 58	9 10 21	1 1 39
10	26 16	20 15	14 37	2 45	26 33	19 57	14 12	3 12	27 15	19 11	13 06	4 21
20	28 33	22 31	17 22	5 24	28 49	22 12	16 58	5 51	29 29	21 24	15 54	7 01
30	4 0 51	24 46	20 09	8 00	4 1 06	24 26	19 46	8 27	4 1 43	23 37	18 44	9 38
40	3 09	27 01	22 59	10 34	3 23	26 40	22 36	11 01	3 58	25 49	21 37	12 13
50	5 27	29 15	25 51	13 06	5 40	28 54	25 30	13 34	6 13	28 01	24 33	14 46
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 7	7 1	9	1	4 7	7 1	9	1	4 8	7 0	9	1

	46	29	28 46	15 36	58	07	28 25	16 04	29	13	27 31	17 17
10	10 05	3 43	10 1 42	18 04	10 17	3 21	10 1 23	18 33	10 45	2 24	10 0 32	19 46
20	12 25	5 56	4 41	20 31	12 35	5 34	4 23	20 59	13 01	4 36	3 36	22 13
30	14 45	8 10	7 42	22 56	14 55	7 46	7 26	23 24	15 18	6 47	6 42	24 38
40	17 06	10 23	10 45	25 19	17 14	9 59	10 30	25 48	17 35	8 58	9 51	27 01
50	19 27	12 36	13 50	27 42	19 34	12 12	13 37	28 10	19 53	11 10	13 02	29 23
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 21 48	7 14 49	10 16 57	2 0 02	4 21 54	7 14 24	10 16 45	2 0 31	4 22 10	7 13 21	10 16 15	2 1 44
10	24 09	17 03	20 05	2 22	24 15	16 37	19 55	2 50	24 28	15 33	19 29	4 03
20	26 31	19 16	23 14	4 41	26 35	18 50	23 06	5 09	26 46	17 45	22 45	6 21
30	28	21	26	6	28	21	26	7	29	19	26	8

	53	30	25	58	56	03	19	26	04	57	03	38
40	1 15	23 44	29 36	9 15	1 17	23 17	29 32	9 43	5 1 23	22 09	29 21	10 54
50	5 3 37	25 58	11 2 48	11 31	5 3 39	25 31	11 2 46	11 59	3 41	24 22	11 2 40	13 09

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

दशम भाव सारणी

	अक्षांश 55°				अक्षांश 60°				संपूर्ण पृथ्वी के लिए			
मि	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. °'	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 5 36	5 6 00	7 6 24	11 6 00	3 10 34	5 6 00	7 1 26	11 6 00	11 6 43	2 6 43	5 6 43	8 6 43
10	7 19	7 41	8 08	13 08	12 07	7 33	2 59	16 50	9 27	9 01	9 27	9 01
20	9 02	9 22	9 54	20 08	13 39	9 06	4 34	27 10	12 10	11 19	12 10	11 19
30	10 45	11 03	11 40	26 55	15 12	10 40	6 08	0 6 36	14 53	13 37	14 53	13 37
40	12 27	12 44	13 27	0 3 22	16 44	12 13	7 44	14 58	17 36	15 55	17 36	15 55
50	14	14	7	9	18	13 46	9	22	20	18	20	18

	08	24	15 16	26	16		20	18	18	13	18	13
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 15 49	5 16 05	7 17 06	0 15 07	3 19 48	5 15 20	7 10 57	0 28 41	23 00	2 20 32	5 23 00	20 32
10	17 30	17 46	18 58	20 24	21 20	16 53	12 35	1 4 15	25 41	22 51	25 41	22 51
20	19 11	19 27	20 51	25 18	22 51	18 26	14 14	9 08	28 22	25 11	28 22	25 11
30	20 51	21 07	22 47	29 51	24 23	19 59	15 55	13 28	00 1 01	27 32	6 1 01	27 32
40	22 31	22 48	24 45	1 4 03	25 54	21 32	17 37	17 21	3 40	29 53	3 40	29 53
50	24 11	24 28	26 45	7 58	27 26	23.05	19 21	20 52	6 18	3 2 15	6 18	9 2 15
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3	5	7	1	3	5 24	7	1	8	3 4	6 8	4

	25 51	26 09	28 48	11 37	28 57	37	21 07	24 04	54	38	54	38
10	27 31	27 49	8 0 54	15 03	4 0 29	26 10	22 55	27 01	11 30	7 02	11 30	7 02
20	29 11	29 29	3 04	18 15	2 01	27 42	24 46	29 46	14 04	9 26	14 04	9 26
30	4 0 51	6 1 09	5 18	21 17	3 32	29 15	26 40	2 2 20	16 38	11 52	16 38	11 52
40	2 30	2 49	7 37	24 09	5 04	6 0 47	28 37	4 45	19 10	14 19	19 10	14 19
50	4 10	4 29	10 01	26 53	6 36	2 19	8 0 39	7 03	21 41	16 47	21 41	16 47
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. °'	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 5 50	6 6 09	8 12 30	1 29 29	4 8 08	6 3 51	8 2 45	2 9 15	24 11	3 19 15	6 24 11	19 15
10	7 30	7 49	15 07	2 1 59	9 40	5 23	4 56	11 21	26 40	21 45	26 40	21 45
20	9 10	9 29	17 50	4 22	11 12	6 55	7 14	13 22	29 08	24 17	29 08	24 17
30	10 50	11 09	20 42	6 41	12 45	8 27	9 39	15 20	1 1 35	26 49	7 1 35	26 49

40	12 30	12 49	23 44	8 55	14 17	9 59	12 14	17 14	4 00	29 22	4 00	29 22
50	14 10	14 29	26 57	11 05	15 50	11 30	14 58	19 05	6 25	4 1 57	6 25	10 1 57
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. °'	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 15 51	6 16 08	9 0 22	2 13 11	4 17 22	6 13 02	8 17 56	2 20 53	8 49	4 4 32	7 8 49	4 32
10	17 31	17 48	4 01	15 15	18 55	14 34	21 08	22 39	11 12	7 09	11 12	7 09
20	19 12	19 28	7 56	17 15	20 28	16 05	24 38	24 23	13 34	9 47	13 34	9 47
30	20 52	21 09	12 09	19 13	22 01	17 37	28 31	26 05	15 55	12 25	15 55	12 25
40	22 33	22 49	16 41	21 08	23 34	19 08	2 51	27 45	18 15	15 05	18 15	15 05
50	24 13	24 29	21 35	23 02	25 07	20 40	9 7 45	29 25	20 35	17 45	20 35	17 45
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °'	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °	रा. °

	'	'	'	'	'		'	'	'	'	'	'
0	4 25 54	6 26 10	9 26 52	2 24 53	4 26 40	6 22 12	9 13 19	3 1 03	22 55	4 20 26	7 22 55	20 26
10	27 35	27 51	10 2 33	26 43	28 13	23 43	19 42	2 40	25 14	23 08	25 14	23 08
20	29 16	29 33	8 38	28 32	29 46	25 15	27 01	4 16	27 32	25 51	27 32	25 51
30	5 0 57	7 1 15	15 05	3 0 20	5 1 20	26 48	10 5 24	5 51	29 50	28 33	29 50	28 33
40	2 38	2 57	21 51	2 06	2 53	28 20	14 50	7 26	2 2 08	5 1 17	8 2 08	11 1 17
50	4 19	4 40	28 52	3 51	4 26	29 53	25 09	9 00	4 26	4 00	4 26	4 00

5.4 सारांश

जन्मकुण्डली बनाने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता लग्न निकालने की होती है। अर्थात् जन्म के समय पूर्वी क्षितिज में जो राशि उदित हो रही होती है उसे लग्न कहते हैं और लग्न निकालने के लिए साम्पातिक काल और अक्षांश के आधार पर लग्न सारणी दी होती है। उसके आधार पर लग्न स्पष्ट की गणना की जाती है। सर्वप्रथम जन्म के घड़ी के समय अर्थात् मानक समय को स्थानीय समय में परिवर्तित किया जाता है उसके आधार पर साम्पातिक काल की गणना की जाती है।

इसी साम्पातिक काल के आधार पर संपूर्ण पृथ्वी के लिए दशम भाव सारणी दी होती है उसके आधार पर दशम भाव स्पष्ट किया जाता है। लग्न स्पष्ट प्रथम भाव के मध्य का स्पष्ट होता है और

दशम भाव स्पष्ट दशम भाव मध्य का रेखांश होता है। इसके अंतर को 6 से भाग देकर षष्ठांश निकाला जाता है। जिसको दशम भाव स्पष्ट के 6 बार क्रम से जोड़ने पर दशम से प्रथम भाव तक के संधि और मध्य भाव ज्ञात होते हैं। इसमें 6 राशि जोड़ने पर चतुर्थ से सप्तम भाव के मध्य और भाव संधि ज्ञात हो जाते हैं। इसी प्रकार दशम भाव व सप्तम भाव के मध्य रेखांशों के अंतर को 6 से भाग देने पर दूसरा षष्ठांश ज्ञात करते हैं। जिसको सप्तम भाव मध्य से क्रम से 6 बार जोड़ने पर सप्तम से दशम भाव के मध्य रेखांश व भाव संधि ज्ञात हो जाते हैं। इनमें 6 राशि जोड़ने पर चतुर्थ से प्रथम भाव के मध्य रेखांश व मध्य संधि ज्ञात हो जाते हैं, इस प्रकार द्वादश भाव स्पष्ट हो जाते हैं।

5.5 शब्दावली

साम्पातिक काल – तारे के संदर्भ में नापा गया समय

भावस्पष्ट – भावों के अंश

अयनांश – स्थिर भचक्र और चर भचक्र का अंतर

संस्कार – शुद्धि

षष्ठांश – छठा भाग

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. लग्न किसे कहते हैं?

प्रश्न 2. एक लग्न की अवधि लगभग कितने समय की होती है?

प्रश्न 3. एक लग्न कितने अंशों का होता है?

प्रश्न 4. क्या आवश्यक है कि एक भाव 300 का ही हो?

प्रश्न 5. क्या प्रत्येक वर्ष निश्चित तिथि और समय पर लग्न लगभग समान ही होगा?

प्रश्न 6. क्या सूर्योदय के समय लग्न के अंश और सूर्य के अंश लगभग समान होंगे?

प्रश्न 7. भाव संधि किसे कहते हैं?

प्रश्न 8. चलितकुण्डली से ग्रह की स्थिति राशि में मालूम होती है या भाव में।

प्रश्न 9. चलितकुण्डली बनाने के लिए भाव स्पष्ट का उपयोग किस प्रकार किया जाता है?

प्रश्न 10. लग्नकुण्डली और चलितकुण्डली में मूलभूत क्या अंतर होता है?

प्रश्न 11. दशमभाव–स्पष्ट के अंश दशम भाव के किस स्थिति के रेखांश होते हैं?

प्रश्न 12. षष्ठांश का मान किस प्रकार निकाला जाता है?

प्रश्न 13. भाव–स्पष्ट करने के लिए लग्न और दशम भाव को ही गणना का आधार क्यों माना जाता है?

प्रश्न 14. ग्रह की भाव में स्थिति को जानने के लिए किस कुण्डली को देखा जाना चाहिए?

प्रश्न 15. दशमभाव–स्पष्ट वास्तव में क्या होता है?

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. जन्म के समय या किसी घटना के घटित होने के समय जो राशि पूर्वी क्षितिज में उदित हो रही होती है उसे लग्न कहते हैं। यह प्रथम भाव की राशि होती है।

उत्तर 2. लगभग 2 घंटे

उत्तर 3. 300

उत्तर 4. नहीं

उत्तर 5. हां

उत्तर 6. हां

उत्तर 7. भाव प्रारम्भ के स्पष्ट रेखांश को भाव संधि कहते हैं।

उत्तर 8. भाव में

उत्तर 9. चलितकुण्डली बनाने के लिए ग्रह स्पष्ट को देखा जाता है कि यह किस भाव में आते है।

उत्तर 10. लग्नकुण्डली राशि में और चलितकुण्डली भाव में स्थिति को बताता है।

उत्तर 11. दशम भाव मध्य

उत्तर 12. षष्ठांश 1 = (प्रथम भाव मध्य – दशम भाव मध्य) / 6

षष्ठांश 2 = (दशम भाव मध्य – सप्तम भाव मध्य) / 6

उत्तर 13. दशमभाव–स्पष्ट राशि को आकाश में देखा जा सकता है।

उत्तर 14. चलितकुण्डली

उत्तर 15. आकाश में स्थित राशि

5.7 संदर्भ ग्रंथ / सूची

1. भारतीय ज्योतिष – नेमिचंद्र शास्त्री – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

2. वृहत् पाराशर होरा शास्त्र

3. सरल ज्योतिष – अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

4. फ्यूचर पंचाँग – फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.

5.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. Tables of Ascendant's on Niryana Basis

लेखक – एन. सी. लाहिरी

प्रकाशक – एस्ट्रो रिसर्च ब्यूरो, कोलकाता

2. Lahiri's Indian Ephemeries of Planet's Position

लेखक – एन. सी. लाहिरी

प्रकाशक – एस्ट्रो रिसर्च ब्यूरो, कोलकाता

3. Condensed Ephemeries of Planet's Position

लेखक – एन. सी. लाहिरी

प्रकाशक – एस्ट्रो रिसर्च ब्यूरो, कोलकाता

4 भारतीय ज्योतिष, नेमिचंद शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नयी दिल्ली

5 पंचाँग

6 ग्लोब

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 11 जुलाई 1964 को रात्रि 09:30 पर, दिल्ली में जन्मे व्यक्ति के लिए साम्पातिक और लग्न स्पष्ट करें।

प्रश्न 2. प्रश्न 16 में दिये गये जातक के लिए दशम भाव स्पष्ट करें तथा सभी द्वादश भाव के भाव मध्य और संधि स्पष्ट करें।

5.8 निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. कुंभ 40 27'

उत्तर 2.

	भाव संधि		भाव मध्य	
1.	मकर	210 14' 58"	कुंभ	040 27' 46"
2.	कुंभ	210 14' 58"	मीन	080 020 10"
3.	मीन	240 49' 23"	मेष	110 36' 35"
4.	मेष	280 23' 48"	वृष	150 11' 00"
5.	वृष	280 23' 48"	मिथुन	110 36' 35"
6.	मिथुन	240 49' 23"	कर्क	080 02' 10"
7.	कर्क	210 14' 58"	सिंह	040 27' 46"
8.	सिंह	210 14' 58"	कन्या	080 02' 10"
9.	कन्या	240 49' 23"	तुला	110 36' 35"
10.	तुला	280 23' 48"	वृश्चिक	150 11' 00"
11.	वृश्चिक	280 23' 48"	धनु	110 36' 35"
12.	धनु	240 49' 23"	मकर	080 02' 10"

इकाई – 6 ग्रह–स्पष्ट साधन

6.1 **प्रस्तावना**

6.2 **उद्देश्य**

6.3 **ग्रह– स्पष्ट**

6.3.1 ग्रह–स्पष्ट गणना

6.3.2 वक्रीग्रह–स्पष्ट की गणना

6.3.3 लग्नकुण्डली का निर्माण

6.3.4 चंद्रकुण्डली का निर्माण

6.3.5 चलितकुण्डली का निर्माण

6.3.6 विदेश में जन्मे जातक की ग्रह स्पष्ट विधि

6.4 **सारांश**

6.5 **शब्दावली**

6.6 **अभ्यास प्रश्नों के उत्तर**

6.7 **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

6.8 **सहायक / उपयोगी ग्रन्थ**

6.9 **निबन्धात्मक प्रश्न**

6.1 प्रस्तावना

लग्न–साधन व द्वादशभाव–स्पष्ट की विधि का आपने विगत इकाई में अध्ययन किया। लग्न साधन के साथ ही ग्रहों का अंश कला में स्पष्ट ज्ञान दशा–साधन व षड्वर्ग साधन हेतु महत्वपूर्ण है। आज का युग कम्प्यूटर युग है जिसमें बड़ी से बड़ी गणनाओं को बड़ी ही आसानी से बिना किसी गलती के हल किया जा सकता है। परंतु इस मशीन को बनाने वाला व्यक्ति ही है। इसमें आप जैसी गणना विधि को भरेंगे, उसका जवाब उसी के अनुरूप आता है। इसके अतिरिक्त यदि आपने कोई छोटी सी भी गलती की तो उसका पता भी नहीं चल पायेगा तथा उसका उत्तर हमेशा तथा बार–बार गलत आता रहेगा। अतः इस मशीनी युग में भी मनुष्य का गणित कौशल अत्यन्त आवश्यक है। यदि आप इसे गणना की विधि और तर्क के साथ ठीक–ठीक नहीं समझेंगे तो आप इतनी बड़ी मशीन के साथ भी सही उत्तर प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष के विद्यार्थियों को ज्योतिष गणना का सही–सही व सटीक ज्ञान होना आवश्यक है। कोई कितना भी बड़ा ज्योतिषी क्यों न हो जाये, अगर वह गणित पक्ष में कमजोर है तो उसके फलादेश में वह आत्मबल नहीं होगा जो एक सही व गणित का अच्छा ज्ञान रखने वाले व्यक्ति में होगा।

इस इकाई के पूर्व आपने लग्न स्पष्ट व भाव स्पष्ट की गणना की विधि सीखी होगी। अब इस इकाई में आपको सिखाया जायेगा कि ग्रहों को किस राशि व किस भाव में स्थित किया जाना चाहिए। वैसे तो ग्रह ब्रह्मांड में सदैव अपनी–अपनी कक्षा में अपनी ही गति से घूमते रहते हैं। परन्तु जन्म के समय ग्रहों की स्थिति क्या थी, वह आप इस इकाई में गणना करके सीख पायेंगे। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे कि किसी समारोह में वीडियोग्राफी चल रही हो और किसी विशेष समय पर उसमें से एक स्थिर फोटोग्राफ निकाल लिया गया हो।

इस इकाई में नवग्रहों के रेखांश ज्ञात करने की विधि के साथ– साथ इस बात की भी जानकारी दी गयी है कि ग्रहों की मार्गी व वक्री गति क्या होती है ? इसमें गणना की विधि को पंचांग व ऐफेमेरिस की सहायता से समझाने का प्रयास किया गया है तथा गणना की यह विधि काफी हद तक शुद्ध व सही गणना फल देती है। इस इकाई में सम्बन्धित सारणियों का नमूना भी आवश्यकतानुसार दिया गया है। जो स्थितियों के ज्ञान व जानकारी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। गणना की विधि मिलान के स्तर अर्थात् लॉग सारणी की सहायता से समझायी गयी है। साथ ही सामान्य विधि से भी ग्रह–स्पष्ट किया गया है।

आशा है, इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी गणना के गूढ़ विषय को बड़ी ही आसानी से समझकर हल कर पाएंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी इस बात को अच्छी प्रकार समझ सकें कि वक्री एवं मार्गी ग्रह क्या होते हैं तथा इन ग्रहों का स्पष्ट रेखांश ज्ञात करने की क्रमबद्ध विधि क्या है? इसके अतिरिक्त गणना के लिए कठिन विधि को आसान विधि लॉग–सारणी की सहायता से कैसे हल करेंगे। प्रस्तुत इकाई में ग्रह के स्पष्ट रेखांश प्राप्त करने के लिए लॉग–सारणी का प्रयोग सिखाया गया है।

वास्तव में जन सामान्य में यह धारणा रहती है कि वक्री ग्रह अपनी दिशा से विपरीत दिशा में चलना प्रारम्भ कर देते हैं। विद्यार्थी इस बात को समझ सकेंगे कि वास्तव में वक्री ग्रह विपरीत दिशा में न चलकर समान दिशा में ही चलते रहते हैं। परंतु पृथ्वी से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रह विपरीत दिशा में चल रहा है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उचित उदाहरणों की सहायता से समझाने का प्रयास किया गया है।

इस इकाई का उद्देश्य मुख्यतः यह है कि विद्यार्थी ग्रह स्पष्ट की गणना करना आसान और क्रमबद्ध तरीके से सीख सकें। क्योंकि जब तक ग्रह के शुद्ध स्पष्ट रेखांश प्राप्त नहीं होंगे तब तक जन्मकुण्डली का निर्माण और उसका फलादेश करना असंभव है। चंद्रमा जैसे प्रगतिशील ग्रह के लिए शुद्ध गणना करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इसी के आधार पर जन्म राशि, जन्म नक्षत्र, चरण, जन्म नामाक्षर एवं विंशोत्तरी दशा की गणना आधारित होती है।

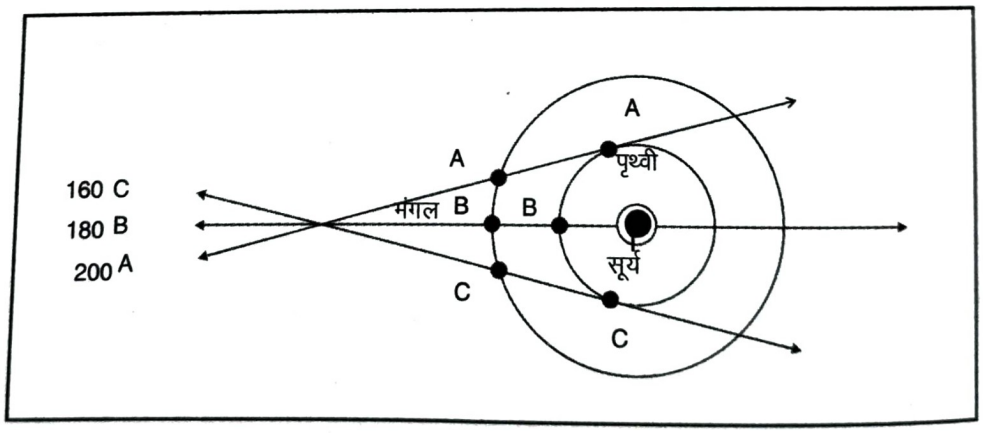
इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :–

- ग्रहों की वक्री एवं मार्गी गति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वक्री ग्रहों के स्पष्ट रेखांश ज्ञात कर पाएंगे।
- मार्गी ग्रहों के स्पष्ट रेखांश ज्ञात करने की विधि सीख पाएंगे।
- गणना हेतु लॉग–सारणी की उपयोग विधि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- जन्मकुण्डली निर्माण हेतु लग्नकुण्डली में ग्रहों की स्थापना कर सकेंगे।

6.3 ग्रह– स्पष्ट

वक्री एवं मार्गी ग्रह:

सामान्यतः ग्रहों की गति मार्गी होती है अर्थात् ग्रह के अंश निरंतर बढ़ते रहते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ग्रह हमेशा आगे की ओर गतिमान् होते हैं। परन्तु जब पृथ्वी से किसी ग्रह को आकाश में देखें और वह विपरीत दिशा में जाता हुआ दिखाई दे तो माना जाता है कि ग्रह वक्र गति से चल रहा है। ऐसी स्थिति में ग्रह के अंश निरंतर घटते हुए क्रम में प्राप्त होते हैं।



वास्तव में तो ग्रह हमेशा अपनी कक्षा में सीधी गति में ही चलता है परंतु पृथ्वी से देखने पर वह विपरीत दिशा में जाता हुआ दिखाई देता है। इसके दो कारण हैं–

पहला, जब ग्रह की गति पृथ्वी की गति से कम हो जाती है तो ग्रह विपरीत दिशा में जाता हुआ प्रतीत होता है। परंतु वास्तव में वह सीधी रेखा में ही चल रहा होता है। यह ठीक उसी प्रकार होता है जैसे कि यदि कोई व्यक्ति ऐसे वाहन में बैठा हो जिसकी गति अधिक हो और सड़क पर चलते हुए अन्य वाहन की गति तुलनात्मक कम हो तो पास आने पर पहले वाहन में बैठे व्यक्ति को दूसरे वाहन में बैठा व्यक्ति विपरीत दिशा में जाता हुआ दिखाई देता है।

दूसरा कारण यह है, कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। जब पृथ्वी से दूसरा ग्रह ठीक 180 अंश के अंतर पर होगा तो ग्रह की दिशा विपरीत दिशा में प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में भी यह प्रतीत होता है कि ग्रह विपरीत दिशा में चल रहा है। परंतु उस समय में भी ग्रह एक ही दिशा में (सीधी रेखा में) चल रहा होता है।

अर्थात् हम कह सकते हैं कि ग्रह की गति हमेशा एक ही दिशा में होती है वह वामावर्ती होती है परंतु पृथ्वी से देखने पर हमें ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रह विपरीत दिशा में चल रहा है। ग्रह की इस आभासी गति को ही ग्रह की वक्री गति कहा जाता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं जबकि चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है। अर्थात् पृथ्वी के सापेक्ष सूर्य और चंद्रमा कभी भी विपरीत दिशा में जाते हुए नहीं दिखाई देंगे। इसलिए सूर्य और चंद्र की गति कभी भी वक्री नहीं हो सकती है। अर्थात् इन ग्रहों की गति सदैव मार्गी ही होगी।

6.3.1 ग्रहस्पष्ट–गणना

कुण्डली निर्माण के इस पाठ में नवग्रहों के स्पष्ट अर्थात् रेखांश निकालने की विधि बताई जाएगी। नवग्रहों की जन्म समय पर राशि चक्र में क्या स्थिति थी अर्थात् ग्रह किस राशि में कितने अंशों पर गोचर कर रहे थे यह ग्रह–स्पष्ट से जाना जाता है। इसके लिए हम पंचाँग या इफेमेरिस का प्रयोग करते हैं।

भारतीय पंचाँग या इफेमेरिस में ग्रहों की स्थिति प्रति दिन प्रातः 5:30 बजे की दी गई होती है। जिस दिन जितने बजे जातक का जन्म होता है उसके आधार पर हम पंचांग में तिथियों का चुनाव करते हैं। जैसे किसी व्यक्ति का जन्म यदि 4 मई को सायं 17:20 पर हुआ हो तो हम पंचाँग से 4 मई के प्रातः 5:30 बजे की ग्रह स्थिति को नोट करेंगे तथा 5 मई को प्रातः 5:30 की ग्रह स्थिति को नोट करेंगे। यह समय अंतराल 24 घंटे का होगा। परंतु हमें सुबह 5:30 से शाम 17:20 अर्थात् 11 घंटे 50 मिनट में ग्रह द्वारा चली गई दूरी का आकलन करना होगा। इसके लिए हमें गणित का सामान्य ऐकिक नियम लागू करना होता है। जिसके द्वारा हम 11 घंटे 50 मिनट में ग्रह द्वारा चली गई दूरी का आकलन कर सकते हैं। इस समय अंतराल में चली गई दूरी को 4 मई के प्रातः 5:30 बजे की ग्रह स्थिति में जोड़ देंगे तो हमें निश्चित जन्म समय अर्थात् सायं 17:20 पर ग्रह की स्थिति ज्ञात हो जाएगी।

ग्रह– स्पष्ट करने के लिए बाजार में विभिन्न पंचाँग उपलब्ध हैं । परंतु एन.सी. लाहिरी द्वारा प्रकाशित इफेमेरिस को गणना की दृष्टि से सर्व शुद्ध एवं सर्वमान्य माना गया है तथा किसी भी गणना की शुद्धि के लिए इसको मानक माना जाता है। इन पंचाँग और इफेमेरिस में ग्रह स्पष्ट पूरे वर्ष के लिए अर्थात् 12 महीनों के लिए दिए होते हैं और यह ग्रह–स्पष्ट प्रत्येक माह के लिए अलग–अलग पृष्ठों में दिए गए होते हैं। अतः जिस माह व वर्ष का जन्म हो उस वर्ष का पंचाँग या इफेमेरिस द्वारा अमुक माह का पृष्ठ खोलकर ग्रह–स्पष्ट प्राप्त किये जा सकते हैं।

यह इफेमेरिस दो प्रकार की उपलब्ध है– पहली, प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है तथा दूसरी, कन्डेन्स्ड इफेमेरिस होती है जो पांच या दस वर्ष के आँकड़ों के साथ उपलब्ध होती है इसमें ग्रहों की

स्थिति प्रति दिन न होकर दो दिन के अंतराल पर होती है। प्रतिदिन की इफेमेरिस द्वारा 24 घंटे के समय अंतराल पर ग्रह–स्पष्ट प्राप्त होते हैं जबकि कन्डेन्सड इफेमेरिस में यही ग्रह–स्पष्ट 48 घंटे के समय अंतराल पर प्राप्त होते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रतिवर्ष की इफेमेरिस द्वारा कन्डेन्सड इफेमेरिस की तुलना में अधिक शुद्ध गणना की जा सकती है।

जबकि पंचाँग सिर्फ प्रतिवर्ष ही प्रकाशित होते हैं अतः इसमें आपको ग्रहों की स्थिति प्रतिदिन अर्थात् 24 घंटे के समय अंतराल पर ही प्राप्त होती है। परन्तु पंचाँगों में प्रकाशित ग्रह–स्पष्ट की स्थिति स्थानीय समय पर भी निर्भर करती है। अतः जातक का जन्म जिस स्थान का है उसी स्थान से प्रकाशित पंचाँग पर निर्भर रहना पड़ सकता है। यदि कोई ऐसा पंचाँग प्राप्त हो जिसमें ग्रह–स्पष्ट की स्थिति स्थानीय समय को आधार मानकर न दी गई हो और एन.सी. लाहिरी द्वारा प्रकाशित इफेमेरिस के ग्रह–स्पष्ट से मेल खाती हो तो ऐसा पंचाँग ग्रह–स्पष्ट की गणना प्रयोग में लाया जा सकता है।

निकाले गये लग्न स्पष्ट दशमभाव–स्पष्ट क्रमशः प्रथम भाव और दशम भाव के मध्य का रेखांश होता है। इसी प्रकार जन्म कुण्डली के सभी बारह भावों के मध्य रेखांश निकाले जायेंगे। इसके साथ–साथ बारहों भावों के (सन्धि) प्रारम्भिक रेखांश भी निकालना आवश्यक है जिससे हर भाव की लम्बाई और भाव मध्य उदित राशि का ज्ञान होगा।

उदाहरण 2– 30 जनवरी 2011 को समय 3:30 सायं पर जन्मे व्यक्ति के लिए नवग्रह स्पष्ट की गणना करें।

हल – दी गई सारणियां संपूर्ण पृथ्वी के लिए समय प्रातः 05:30 के आधार पर दी गई है। वांछित समय पर ग्रह स्पष्ट की गणना निम्न प्रकार करेंगे।

जन्म समय = 3:30 सायं = 15:30 घंटे

सारणी का आधारित समय = 05:30 घंटे

कुल समय अंतराल = 10 घंटे

पृष्ठ संख्या 20 के आधार पर,

31 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=	9s	16°	43' 46"
30 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=	(-) 9s	15°	42' 49"
24 घंटे में सूर्य स्पष्ट अंतर	=	1°	00'	57"
10 घंटे में सूर्य स्पष्ट अंतर	=	1° 0' 57" x 10h		

24 h

लॉग–सारणी प्रयोग करने पर = लॉग (1° 0' 57") + लॉग (10h) - लॉग (24h)

लॉग–सारणी की सहायता से इसके मानों को पढ़ेंगे जो फ्यूचर पंचाँग में दी गई हैं।

= 1.3730 + 0.3802-0.0 = 1.7532

अब हमको इसका एंटीलॉग देखना होगा इसके लिए भी लॉग सारणी ही देखेंगे। लेकिन इसको देखने का तरीका उल्टा होगा अर्थात लॉग–सारणी में देखेंगे कि 1.7532 के साथ कितने अंश होते हैं। सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि 1.7532 का निकटतम मान 0° 25' पर है। अर्थात् 10 घंटे में सूर्य की गति 25' होगी।

एंटीलॉग (1.7532) = 0° 25'

30 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=	9s	15°	42' 49"
10 घंटे में सूर्य की गति	=	(+) 0°	25' 49"	
अभीष्ट सूर्य स्पष्ट	=	9s	16°	07' 49"

इसी प्रकार हम अन्य ग्रहों का भी ग्रह–स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं लेकिन यह याद रखना चाहिए कि वक्री ग्रहों के लिए ग्रह की गति को ग्रह–स्पष्ट के मान में से जोड़ने की जगह घटाया जाएगा।

30.1.2011, 15.30 घंटे पर नव ग्रह स्पष्ट का गणित

विवरण	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
30. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	7रा 28° 27'	9रा 17° 00'	8रा 28° 28'	11रा 07° 20'	8रा 00° 04'	5रा 28° 11'	8रा 08° 19'
31. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	8रा 11° 15'	9रा 17° 47'	8रा 29° 58'	11रा 07° 32'	8रा 01° 11'	5रा 23° 11'	8रा 08° 19'
24 घंटे की ग्रह	14°	0° 47'	1° 30'	0° 12'	1° 07'	0°	0°

30.1.2011, 15.30 घंटे पर नव ग्रह स्पष्ट का गणित							
विवरण	**चंद्र**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**
की चाल	48'						
24 घंटे की चाल का लॉग (A)	0.2730	1.4863	1.2041	2.0792	1.3323	0.00	0.00
10 घंटे का लॉग (B)	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802
24 घंटे का लॉग (C)	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल मान (A + B) - (C)	0.6532	1.8665	1.5843	2.4594	1.7125	0.00	0.00
10 घं. की चाल (कुल मान का एंटी लॉग)	5° 20'	0° 19'	0° 37'	0° 5'	0° 28'	0.00	0.00
ग्रह के 30. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	7रा 28° 27'	9रा 17° 00'	8रा 28° 28'	11रा 07° 20'	8रा 00° 04'	5रा 23° 11'	8रा 08° 19'
ग्रह के 15.30 घंटे पर स्पष्ट रेखांश	8रा 3° 47'	9रा 17° 19'	8रा 29° 05'	11रा 07° 25'	8रा 00° 32'	5रा 23° 11'	8रा 08° 19'

ग्रह–स्पष्ट की तालिका

ग्रह	राशि अंश	राशि	अंश
सूर्य	09$^{रा}$ 16° 07'	मकर	16° 07'

ग्रह	राशि अंश	राशि	अंश
चन्द्र	08ग 03° 47'	धनु	03° 47'
मंगल	09ग 17° 19'	मकर	17° 19'
बुध	08ग 29° 05'	धनु	29° 05'
गुरु	11ग 07° 25'	मीन	07° 25'
शुक्र	08ग 00° 32'	धनु	00° 32'
शनि	05ग 23° 11'	कन्या	23° 11'
राहु	08ग 08° 19'	धनु	08° 19'
केतु	02ग 08° 19'	मिथुन	08° 19'

यदि 3.30 पर 1 जुलाई 2011 को जन्मे बालक का चन्द्र स्पष्ट करना हों तो –

चन्द्र स्पष्ट – 2 जुलाई 2011 प्रातः 5.30 का चन्द्र स्पष्ट

	राशि	अंश	कला	वि.
	2.	23.	38.	13
1 जुलाई 2011 को 5.30 का चन्द्र स्पष्ट		2. 10.	15.	20
24 घंटे की चन्द्र चर		13. 22.	53	

24 घंटे में चन्द्रमा की गति

	अंश	कला	विकला
	13.	22.	53

1 घण्टे में चन्द्रमा की गति

$$\frac{13.\quad 22.\quad 53}{24}$$

10 घण्टे में चन्द्रमा की गति

$$\frac{13.\quad 22.\quad 53}{24} \times 10$$

अब अंश कला में परिवर्तन 13 X 60 = 780 कला

+ 22 कला

24 घण्टे में चन्द्र गति कला विकला में – 802 कला 53 विकला

1 घण्टे में चन्द्रमा की गति 802.53 / 24

शेष 10 को विकला बनाने पर 10 X 60 = 600 विकला

53 विकला जोड़ने पर 600 + 53 = 653

पुनः 24 का भाग देने पर = 653 / 24

= 802 / 24 = 33.10 कला

इस प्रकार 10 घण्टे की चन्द्र गति 33 कला 27 विकला 12 प्रति विकला

= 33 X 10 / 27 X 10 / 12 X 10

= 330 कला / 270 विकला / 120 प्रति विकला

अंश कला विकला में परिवर्तित करने पर

330 कला[?] / 60 = 5 अंश 30 कला

270 विकला / 60 = 4 कला 30 विकला

120 प्रति विकला / 60 = 2 विकला

इस प्रकार 10 घण्टे की चन्द्रमा की गति = 5 अंश 30 + 4 कला + 30 + 2 विकला = 5 अंश 34 कला 32 विकला

	राशि	अंश	कला	विकला
1 जुलाई 2011 के प्रातः 5.30 पर चन्द्र स्पष्ट =	2	10	15	20
10 घण्टे की चन्द्रमा की गति = +	5	34	32	
अब 1 जनवरी दिन में 3.30 पर चन्द्र स्पष्ट =	2	15	49	52

वक्री ग्रह को स्पष्ट करने की विधि – राशि	अंश	कला	विकला	
1 जून 2011 को 5.30 पर शनि स्पष्ट	5	16	32	49
2 जून 2011 को 5.30 पर शनि स्पष्ट	5	16	31	39

24 घण्टे का शनि का चर 1 10

1 X 60 = 60

विकला 10

विकला 70

विकला

1 घण्टे का चर ज्ञान करने के लिए 70 / 24 =

70 X 60 = 4200 / 24 प्रति विकला

प्रति विकला को कला में बदलने पर= 175 प्रति विकला

= 2 विकला 55 प्रति विकला

10 घण्टे का चर ज्ञात करने के लिए = 2 X 10 + 55 X 10

= 20 विकला + 550 प्रति विकला

= 29 विकला + 10 प्रति विकला

शनि वक्री होने के कारण

	राशि	अंश	कला	विकला	प्र.वि.
1 जून 2011 को 5.30 पर शनि स्पष्ट	5	16	32	49	00
10 घण्टे का चन्द्र चर –				29	10
1 जून 2011 को 3.30 बजे का शनि स्पष्ट	5	16	32	19	50

6.3.2 वक्रीग्रह–स्पष्ट की गणना :

वक्री ग्रह की गति में ग्रह के अंश निरंतर घटते हुए क्रम में होते हैं। जबकि मार्गी गति में ग्रह के अंश बढ़ते हुए क्रम में होते हैं। अतः वक्री ग्रह के अंश की गणना करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पूर्व प्राप्त ग्रह–स्पष्ट में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को घटाया जाता है जबकि मार्गी गति में ग्रह के प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को जोड़ा जाता है।

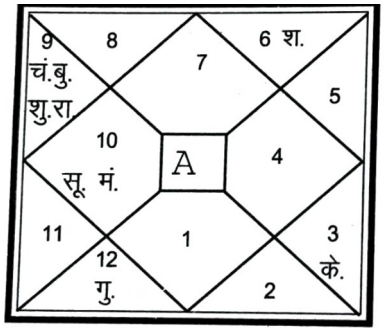
आगे दिए गए उदाहरण में बुध, गुरु और राहु वक्री ग्रह हैं अतः आप देखेंगे कि इन ग्रहों के प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को घटाया गया है। जबकि अन्य मार्गी ग्रहों में ग्रह द्वारा प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को जोड़ा गया है।

6.3.3 लग्नकुण्डली का निर्माण :

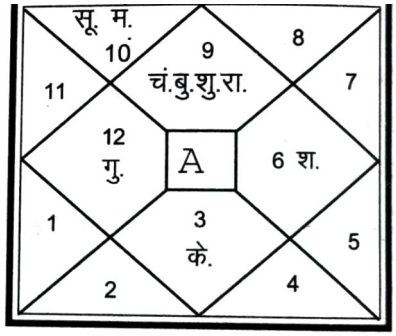
लग्नकुण्डली बनाने के लिए प्राप्त लग्न को आधार मानकर तथा ग्रह–स्पष्ट के आधार पर ग्रहों को स्थित कर दिया जाता है। इस प्रकार जो कुण्डली बनायी जाती है उसे लग्नकुण्डली कहते हैं। जैसे कि नीचे चित्र में दिया गया है।

6.3.4 चन्द्रकुण्डली का निर्माण :

चन्द्रकुण्डली बनाने के लिए चन्द्रराशि को लग्न मानकर जो कुण्डली बनायी जाती है उसे चन्द्रकुण्डली कहते हैं। जैसे कि नीचे कुण्डली में दिया गया है।



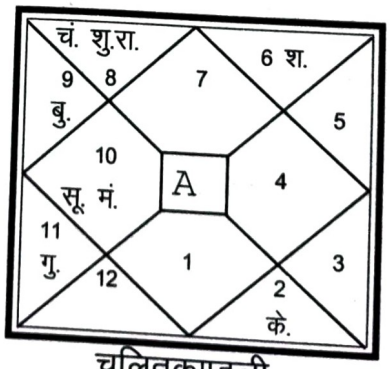
लग्नकुण्डली



चन्द्रकुण्डली

6.3.5 चलितकुण्डली का निर्माण :

चलितकुण्डली बनाने के लिए ग्रहों के रेखांश को देखना होता है कि वह किस भाव के प्रारम्भ और समाप्ति के बीच आते हैं। उसके आधार पर ग्रहों को स्थित किया जाता है। इसमें लग्न वहीं होता है जो लग्नकुण्डली में होता है। परन्तु ग्रहों को राशि के आधार पर न रखकर भाव के प्रारम्भ और समाप्ति के आधार पर रखा जाता है। इस प्रकार चलितकुण्डली से यह ज्ञात होता है कि ग्रह किस राशि में स्थित है।



चलितकुण्डली

6.3.6 विदेश में जन्मे जातक के ग्रह–स्पष्ट विधि

विदेश में जन्मे जातक की कुण्डली के ग्रह स्पष्ट करने से पहले जन्म समय की भारतीय मानक समय में बदलना होगा उसी अनुसार ग्रह–स्पष्ट किये जाएंगे क्योंकि इफेमेरिस में भारतीय मानक अनुसार प्रातः 5 घं. 30 मि. पर ग्रह की स्थिति दी गई है।

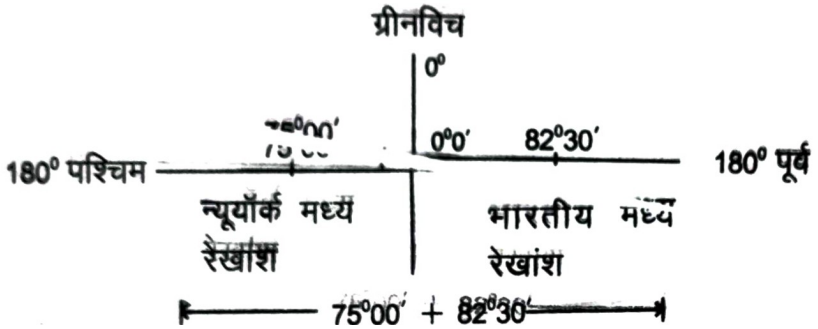
उदाहरण :

जातक की जन्म तारीख 30 . 01. 2011 , समय 15 घं. 30 मि . स्थान न्यूयॉर्क

पहले न्यूयॉर्क मानक समय को भारतीय मानक समय में बदले

न्यूयॉर्क का मध्य रेखांश = 75° 00' पश्चिम

भारतीय मध्य रेखांश = 82° 30' पूर्व



दोनों जोनल रेखांशों में अंतर 157°30'

पृथ्वी की अपनी धुरी पर चाल प्रति अंश 4 मि. है

इसलिए अंतर को 4 मि. से गुणा करें तो दो रेखांशों पर समय का अंतर मालूम होगा।

अर्थात् 157°30' × 4 मि. = 628 मि. 120 सै. = 630 मि.

= 10 घंटे 30 मि.

क्योंकि न्यूयॉर्क भारत से पश्चिम में है इसलिए भारतीय घड़ी न्यूयॉर्क की घंड़ी[?] से 10 घं. 30 मि. आगे है इसलिए न्यूयॉर्क के समय को भारतीय समय में बदलने के लिए 10 घं. 30 मि. जोड़ने होंगे।

		घं.	मि.	
जन्म समय	=	15	30	न्यूयॉर्क मानक समय
भारतीय समय संस्कार=		(+) 10	30	
भारतीय समय	=	25	60	
	=	26	00	
=	02	00		

अर्थात् यदि न्यूयॉर्क का समय सायं 15 घं. 30 मि. है तो उस वक्त भारत में अगले दिन प्रातः 02 घं. 00 मि. थे

भारतीय समय अनुसार जातक का जन्म 02 घं. 00 मि. 31. 01. 2011 को हुआ

ग्रह–स्पष्ट इसी समय के लिए किये जायेंगे क्योंकि जिस इफेमेरिस की सहायता हम ले रहे हैं उसमें सारणी भारतीय समय प्रातः 5 घं. 30 मि. की दी है।

भारतीय समय अनुसार जातक का जन्म प्रातः 30 जनवरी के 5 घं. 30 मि. के बाद 26 घं. 00 मि. पर हुआ अर्थात् प्रातः 5 घं. 30 मि. के 20 घं. 30 मि. बाद हुआ।30. 01. 2011 की प्रातः 5.30 चन्द्र स्पष्ट = $7^{रा}$ 28° 27'

31. 01. 2011 की प्रातः 5.30 चन्द्र स्पष्ट = $8^{रा}$ 11° 15'

24 घं. में चन्द्र की चाल = 12° 48'

1 ,, ,, ,, = $\frac{12°48'}{24 \text{ घं.}}$

20 घंटे 30 मि. ,, ,, ,, $\frac{12°48' \times 20 \text{ घं. } 30 \text{ मि.}}{24 \text{ घं.}}$

लॉग-सारणी के अनुसार,

लॉग (12° 48') + लॉग (20 घं. 30 मि.) – लॉग (24 घं.)

= 0.2730 + 0.0685 – 0 = 0.3415 यह संख्या लॉग-सारणी में 10° 56' पर है

30. 1. 2011 को प्रातः 5.30 बजे चन्द्र स्पष्ट	= $7^{रा}$ 28° 27'
1 घं. 38 मि. में चन्द्र की चाल	+ 10° 56'
31. 01. 2011 को 2.00 बजे पर चन्द्र स्पष्ट	= $8^{रा}$ 9° 23'

इसी तरह से सभी ग्रहों को स्पष्ट करेंगे जैसा कि स्वदेशी कुण्डली के लिए किया गया।

ग्रह स्पष्ट–जनवरी, 2011

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:55 भारतीय समय प्रात: 05:30

तवार	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो
	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "
(शनि 1	08:16:11:15	07:05:13:30	08:24:21:23	07:25:49:21	11:02:32:10	06:29:32:56	05:22:38:41	08:08:44:57	02:08:44:57	11:02:56:35	10:02:43:08	08:11:18:56
(रवि 2	08:17:12:25	07:18:37:59	08:25:07:49	07:26:08:04	11:02:40:16	07:00:30:49	05:22:41:18	08:08:45:35	02:08:45:35	11:02:57:55	10:02:44:50	08:11:21:05
(सोम 3	08:18:13:36	08:01:49:42	08:25:54:18	07:26:34:07	11:02:48:32	07:01:29:13	05:22:43:48	08:08:46:02	02:08:46:02	11:02:59:18	10:02:46:34	08:11:23:14
(मंग 4 ल	08:19:14:46	08:14:48:05	08:26:40:50	07:27:06:49	11:02:56:57	07:02:28:06	05:22:46:12	08:08:46:02	02:08:46:02	11:03:00:44	10:02:48:20	08:11:25:23
(बुध 5	08:20:15:57	08:27:32:49	08:27:27:23	07:27:45:29	11:03:05:30	07:03:27:27	05:22:48:30	08:08:45:26	02:08:45:26	11:03:02:13	10:02:50:06	08:11:27:32
(गुरु 6	08:21:17:07	09:10:04:06	08:28:13:58	07:28:29:30	11:03:14:12	07:04:27:15	05:22:50:42	08:08:44:12	02:08:44:12	11:03:03:44	10:02:51:55	08:11:29:40
(शुक्र 7	08:22:18:17	09:22:22:47	08:29:00:36	07:29·18.16	11:03:23:03	07:05:27:29	05:22:52:48	08:08:42:27	02:08:42:27	11:03:05:19	10:02:53:44	08:11:31:48
(शनि 8	08:23:19:27	10:04:30:25	08:29:47:15	08:00:11:17	11:03:32:02	07:06:28:08	05:22:54:47	08:08:40:09	02:08:40:09	11:03:06:56	10:02:55:34	08:11:33:56
(रवि	08:24:	10:16:29:	09:00:33:	08:01:08:	11:03:41:	07:07:29:	05:22:56:	08:08:37:	02:08:37:	11:03:08:	10:02:57:	08:11:36:

ग्रह स्पष्ट–जनवरी, 2011

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:55 भारतीय समय प्रात: 05:30

तवार	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो
	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "
9	20:37	21	57	05	09	11	41	31	31	36	26	03
सोम	08:25:	10:28:22:	09:01:20:	08:02:08:	11:03:50:	07:08:30:	05:22:58:	08:08:35:	02:08:35:	11:03:10:	10:02:59:	08:11:38:
(	21:46	43	40	17	24	38	28	09	09	18	19	10
मंग	08:26:	11:10:14:	09:02:07:	08:03:11:	11:03:59:	07:09:32:	05:23:00:	08:08:33:	02:08:33:	11:03:12:	10:03:01:	08:11:40:
ल	22:55	16	25	30	47	27	09	31	31	03	13	16
बुध	08:27:	11:22:08:	09:02:54:	08:04:17:	11:04:09:	07:10:34:	05:23:01:	08:08:32:	02:08:32:	11:03:13:	10:03:03:	08:11:42:
1	24:03	18	12	25	19	37	43	40	40	51	09	22
गुरु	08:28:	00:04:09:	09:03:41:	08:05:25:	11:04:18:	07:11:37:	05:23:03:	08:08:32:	02:08:32:	11:03:15:	10:03:05:	08:11:44:
1	25:11	31	00	45	57	09	11	37	37	42	05	28
शुक्र	08:29:	00:16:22:	09:04:27:	08:06:36:	11:04:28:	07:12:40:	05:23:04:	08:08:33:	02:08:33:	11:03:17:	10:03:07:	08:11:46:
4	26:18	40	50	16	44	01	33	28	28	35	03	33
शनि	09:00:	00:28:52:	09:05:14:	08:07:48:	11:04:38:	07:13:43:	05:23:05:	08:08:35:	02:08:35:	11:03:19:	10:03:09:	08:11:48:
5	27:25	23	42	45	38	13	48	05	05	31	01	37
रवि	09:01:	01:11:42:	09:06:01:	08:09:03:	11:04:48:	07:14:46:	05:23:06:	08:08:36:	02:08:36:	11:03:21:	10:03:11:	08:11:50:
(	28:30	40	35	01	39	43	57	52	52	30	01	41
सोम	09:02:	01:24:56:	09:06:48:	08:10:18:	11:04:58:	07:15:50:	05:23:08:	08:08:38:	02:08:38:	11:03:23:	10:03:13:	08:11:52:
7	29:36	28	30	54	48	32	00	11	11	30	01	44
मंग	09:03:	02:08:35:	09:07:35:	08:11:36:	11:05:09:	07:16:54:	05:23:08:	08:08:38:	02:08:38:	11:03:25:	10:03:15:	08:11:54:
ल	30:40	10	26	15	03	39	56	41	41	34	03	47
बुध	09:04:	02:22:38:	09:08:22:	08:12:54:	11:05:19:	07:17:59:	05:23:09:	08:08:38:	02:08:38:	11:03:27:	10:03:17:	08:11:56:
9	31:44	05	24	57	26	04	46	03	03	40	06	49
गुरु	09:05:	03:07:02:	09:09:09:	08:14:14:	11:05:29:	07:19:03:	05:23:10:	08:08:35:	02:08:35:	11:03:29:	10:03:19:	08:11:58:
(	32:47	05	23	55	56	45	29	55	55	48	09	50
शुक्र	09:06:	03:21:41:	09:09:56:	08:15:36:	11:05:40:	07:20:08:	05:23:11:	08:08:32:	02:08:32:	11:03:31:	10:03:21:	08:12:00:
1	33:49	44	24	02	32	42	06	27	27	59	13	51
शनि	09:07:	04:06:29:	09:10:43:	08:16:58:	11:05:51:	07:21:13:	05:23:11:	08:08:28:	02:08:28:	11:03:34:	10:03:23:	08:12:02:
2	34:52	47	26	14	15	55	37[?]	19	19	12	18	50
रवि	09:08:	04:21:18:	09:11:30:	08:18:21:	11:06:02:	07:22:19:	05:23:12:	08:08:24:	02:08:24:	11:03:36:	10:03:25:	08:12:04:

ग्रह स्पष्ट–जनवरी, 2011

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:55 भारतीय समय प्रात: 05:30

तवार	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो
	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "
3	35:53	17	29	27	05	24	01	10	10	27	24	49
2 सोम 4	09:09:36:54	05:05:59:45	09:12:17:34	08:19:45:38	11:06:13:01	07:23:25:08	05:23:12:19	08:08:20:16	02:08:20:16	11:03:38:45	10:03:27:31	08:12:06:48
2 मंगल 5	09:10:37:55	05:20:28:13	09:13:04:41	08:21:10:43	11:06:24:03	07:24:31:05	05:23:12:30	08:08:17:04	02:08:17:04	11:03:41:05	10:03:29:39	08:12:08:45
2 बुध 6	09:11:38:55	06:04:39:51	09:13:51:48	08:22:36:40	11:06:35:12	07:25:37:17	05:23:12:35	08:08:15:13	02:08:15:13	11:03:43:27	10:03:31:47	08:12:10:42
2 गुरु 7	09:12:39:54	06:18:32:57	09:14:38:58	08:24:03:27	11:06:46:27	07:26:43:42	05:23:12:33	08:08:15:05	02:08:15:05	11:03:45:51	10:03:33:56	08:12:12:37
2 शुक्र 8	09:13:40:53	07:02:07:36	09:15:26:08	08:25:31:03	11:06:57:48	07:27:50:20	05:23:12:25	08:08:16:18	02:08:16:18	11:03:48:18	10:03:36:06	08:12:14:32
2 शनि 9	09:14:41:52	07:15:25:01	09:16:13:19	08:26:59:26	11:07:09:15	07:28:57:10	05:23:12:10	08:08:18:02	02:08:18:02	11:03:50:47	10:03:38:16	08:12:16:26
3 रवि 0	09:15:42:49	07:28:27:02	09:17:00:32	08:28:28:35	11:07:20:49	08:00:04:12	05:23:11:49	08:08:19:26	02:08:19:26	11:03:53:18	10:03:40:27	08:12:18:19
3 सोम 1	09:16:43:46	08:11:15:36	09:17:47:46	08:29:58:30	11:07:32:27	08:01:11:25	05:23:11:22	08:08:19:48	02:08:19:48	11:03:55:51	10:03:42:39	08:12:20:11

लॉग–सारणी

मिनट	डिग्री या घंटे													मिनट
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
0	-	1.3802	1.0792	9031	7781	6812	6021	5351	4771	4260	3802	3388	3010	0
1	3.1584	1.3730	1.0756	9007	7763	6798	6009	5341	4762	4252	3795	3382	3004	1
2	2.8573	1.3660	1.0720	8983	7745	6784	5997	5330	4753	4244	3788	3375	2998	2
3	2.68	1.3590	1.0685	8959	7728	6769	5985	5320	4744	4236[?]	3780	3368	2992	3

मिनट	डिग्री या घंटे													मिनट
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
	12													
4	2.5563	1.3522	1.0649	8935	7710	6755.	5973	5310	4735	4228	3773	3362	2986	4
5	2.4594	1.3454	1.0614	8912	7692	6741	5961	5300	4726	4220	3766	3355	2980	5
6	2.3802	1.3388	1.0580	8888	7674	6726	5949	5289	4717	4212	3759	3349	2974	6
7	2.3133	1.3323	1.0546	8865	7657	6712	5937	5279	4708	4204	3752	3342	2968	7
8	2.2553	1.3258	1.0511	8842	7639	6698	5925	5269	4699	4196	3745	3336	2962	8
9	2.2041	1.3195	1.0478	8819	7622	6684	5913	5259	4690	4188	3737	3329	2956	9
10	2.1584	1.3133	1.0444	8796	7604	6670	5902	5249	4682	4180	3730	3323	2950	10
11	2.1170	1.3071	1.0411	8773	7587	6656	5890	5239	4673	4172	3723	3316	2944	11
12	2.0792	1.3010	1.0378	8751	7570	6642	5878	5229	4664	4164	3716	3310	2938	12
13	2.0444	1.2950	1.0345	8728	7552	6628	5866	5219	4655	4156	3709	3303	2933	13
14	2.0122	1.2891	1.0313	8706	7535	6614	5855	5209	4646	4148	3702	3297	2927	14
15	1.9823	1.2833	1.0280	8683	7518	6600	5843	5199	4638	4141	3695	3291	2921	15
16	1.9542	1.2775	1.0248	8661	7501	6587	5832	5189	4629	4133	3688	3284	2915	16
17	1.9279	1.2719	1.0216	8639	7484	6573	5820	5179	4620	4125	3681	3278	2909	17

मिनट	डिग्री या घंटे													मिनट
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
18	1.9031	1.2663	1.0185	8617	7467	6559	5809	5169	4611	4117	3674	3271	2903	18
19	1.8796	1.2607	1.0153	8595	7451	6546	5797	5159	4603	4109	3667	3265	2897	19
20	1.8573	1.2553	1.0122	8573	7434	6532	5786	5149	4594	4102	3660	3258	2891	20
21	1.8361	1.2499	1.0091	8552	7417	6519	5774	5139	4585	4094	3653	3252	2885	21
22	1.8159	1.2445	1.0061	8530	7401	6505	5763	5129	4577	4086	3646	3246	2880	22
23	1.7966	1.2393	10030	8509	7384	6492	5752	5120	4568	4079	3639	3239	2874	23
24	1.7781	1.2341	1.0000	8487	7368	6478	5740	5110	4559	4071	3632	3233	2868	24
25	1.7604	1.2289	0.9970	8466	7351	6465	5729	5100	4551	4063	3625	3227	2862	25
26	1.7434	1.2239	0.9940	8445	1335	6451	5718	5090	4542	4055	3618	3220	2856	26
27	1.7270	1.2188	0.9910	8424	7318	6438	5706	5081	4534	4048	3611	3214	2850	27
28	1.7112	1.2139	0.9881	8403	7302	6425	5695	5071	4525	4040	3604	3208	2845	28
29	1.6960	1.2090	0.9852	8382	7286	6412	5684	5061	4516	4032	3597	3201	2839	29
30	1.6812	1.2041	0.9823	8361	7270	6398	5673	5051	4508	4025	3590	3195	2833	30
31	1.6670	1.1993	0.9794	8341	7254	6385	5662	5042	4499	4017	3583	3189	2827	31
32	1.6532	1.1946	0.9765	8320	7238	6372	5651	5032	4491	4010	3576	3183	2821	32

मिनट	डिग्री या घंटे													मिनट
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
33	1.6398	1.1899	0.9737	8300	7222	6359	5640	5023	4482	4002	3570	3176	2816	33
34	1.6269	1.1852	0.9708	8279	7206	6346	5629	5013	4474	3994	3563	3170	2810	34
35	1.6143	1.1806	0.9680	8259	7190	6333	5618	5003	4466	3987	3556	3164	2804	35
36	1.6021	1.1761	0.9652	8239	7174	6320	5607	4994	4457	3979	3549	3157	2798	36
37	1.5902	1.1716	0.9625	8219	7159	6307	5596	4984	4449	3972	3542	3151	2793	37
38	1.5786	1.1671	0.9597	8199	7143	6294	5585	4975	4440	3964	3535	3145	2787	38
39	1.5673	1.1627	0.9570	8179	7128	6282	5574	4965	4432	3957	3529	3139	2781	39
40	1.5563	1.15M	0.9542	8159	7112	6269	5563	4956	4424	3949	3522	3133	2775	40
41	1.5456'	1.1540	0.9515	8140	7097	6256	5552	4947	4415	3942	3515	3126	2770	41
42	1.5351	1.1498	0.9488	8120	7081	6243	5541	4937	4407	3934	3508	3120	2764	42
43	1.5249	1.1455	0.9462	8101	7066	6231	5531	4928	4399	3927	3501	3114	2758	43
44	1.5149	1.1413	0.9435	8081	7050	6218	5520	4918	4390	3919	3495	3108	2753	44
45	1.5051	1.1372	0.9409	8062	7035	6205	5509	4909	4382	3912	3488	3102	2747	45
46	1.4956	1.1331	0.9383	8043	7020	6193	5498	4900	4374	3905	3481	3096	2741	46
47	1.4863	1.1290	0.9356	8023	7005	6180	5488	4890	4365	3897	3475	3089	2736	47

मिनट	डिग्री या घंटे													मिनट
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
48	1.4771	1.1249	0.9330	8004	6990	6168	5477	4881	4357	3890	3468	3083	2730	48
49	1.4682	1.1209	0.9305	7985	6975	6155	5466	4872	4349	3882	3461	3077	2724	49
50	1.4594	1.1170	0.9279	7966	6960	6143	5456	4863	4341	3875	3454	3071	2719	50
51	1.4508	1.1130	0.9254	7947	6945	6131	5445	4853	4333	3868	3448	3065	2713	51
52	1.4424	1.1091'	0.9228	7929	~930	6118	5435	4844	4324	3860	3441	3059	2707	52
53	1.4341	1.1053	0.9203	7910	6915	6106	5424	4835	4316	3853	3434	3053	2702	53
54	1.4260	1.1015	0.9178	7891	6900	6094	5414	4826	4308	3846	3428	3047	2696	54
55	1.4180	1.0977	0.9153	7873	6885	6081	5403	4817	4300	3838	3421	3041	2691	55
56	1.4102	1.0939	0.9128	7854	6871	6069	5393	4808	4292	3831	3415	3034	2685	56
57	1.4025	1.0902	0.9104	7836	6856	6057	5382	4798	4284	3824	3408	3028	2679	57
58	1.3949	1.0865	0.9079	7818	6841	6045	5372	4789	4276	3817	3401	3022	2674	58
59	1.3875	1.0828	0.9055	7800	6827	6033	5361	4780	4268	3809	3395	3016	2668	59
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	

लॉग सारणी

मिडिग्री या घंटे	मिनट

नट	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
0	2663	2341	2041	1761	1498	1249	1015	0792	0580	0378	0185	0
1	2657	2336	2036	1756	1493	1245	1011	0788	0577	0375	0182	1
2	2652	2330	2032	1752	1489	1241	1007	0785	0573	0371	0179	2
3	2646	2325	2027	1747	'485	1237	1003	0781	0570	0368	0175	3
4	2640	2320	2022	1743	1481	1233	0999	0777	0566	0365	0172	4
5	2635	2315	2017	1738	1476	1229	0996	0774	0563	0361	0169	5
6	2629	2310	2012	1734	1472	1225	0992	0770	0559	0358	0166	6
7	2624	2305	2008	1729	1468	1221	0988	0767	0556	0355	0163	7
8	2618	2300	2003	1725	1464	1217	0984	0763	0552	0352	0160	8
9	2613	2295	1998	1720	1459	1213	0980	0759	0549	0348	0157	9
10	2607	2289	1993	1716	1455	1209	0977	0756	0546	0345	0154	10
11	2602	2284	1988	1711	1451	1205	0973	0752	0542	0342	0150	11
12	2596	2279	1984	1707	1447	1201	0969	0749	0539	0339	0147	12
13	2591	2274	1979	1702	1443	1197	0965	0745	0535	0335	0144	13
14	2585	2269	1974	1698	1438	1193	0962	0741	0532	0332	0141	14
15	2580	2264	1969	1694	1434	1190	0958	0738	0529	0329	0138	15

मिनट	डिग्री या घंटे											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
16	2574	2259	1965	1689	1430	1186	0954	0734	0525	0326	0135	16
17	2569	2254	1960	1685	1426	1182	0950	0731	0522	0322	0132	17
18	2564	2249	1955	1680	1422	1.178	0947	0727	0518	0319	0129	18
19	2558	2244	1950	1676	1417	1174	0943	0724	0515	0316	0126	19
20	2553	2239	1946	1671	1413	1170	0939	0720	0512	0313	0122	20
21	2547	2234	1941	1667	1409	1166	0935	0716	0508	0309	0119	21
22	2542	2229	1936	1662	1405	1162	0932	0713	0505	0306	0116	22
23	2536	2223	1932	1658	1401	1158	0928	0709	0501	0303	0113	23
24	2531	2218	1927	1654	1397	1154	0924	0706	0498	0300	0110	24
25	2526	2213	1922	1649	1392	1150	0920	0702	0495	0296	0107	25
26	2520	2208	1917	1645	1388	1146	0917	0699	0491	0293	0104	26

गिनट	डिग्री या घंटे											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
27	2515	2203	1913	1640	1384	1142	0913	0695	0488	0290	0101'	27
28	2509	2198	1908	1636	1380	1138	0909	0692	0484	0287	0098	28
29	2504	2193	1903	1632	1376	1134	0906	0688	0481	0284	0095	29
30	2499	2188	1899	1627	1372	1130	0902	0685	0478	0280	0091	30
31	2493	2183	1894	1623	1368	1127	0898	0681	0474	0277	0088	31
32	2488	2178	1889	1618	1364	1123	0894	0678	0471	0274	0085	32
33	2483	2173	1885	1614	1359	1119	0891	0674	0468	0271	0082	33
34	2477	2168	1880	1610	1355	1115	0887	0671	0464	0267	0079	34
35	2472	2164	1875	1605	1351	1111	0883	0667	0461	0264	0076	35
36	2467	2159	1871	1601	1347	1107	0880	0663	0458	0261	0073	36
37	2461	2154	1866	1597	1343	1103	0876	0660	0454	0258	0070	37

मिनट	डिग्री या घंटे											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
38	2456	2149	1862	1592	1339	1099	0872	0656	0451	0255	0067	38
39	2451	2144	1857	1588	1335	1095	0869	0653	0448	0251	0064	39
40	2445	2139	1852	1584	1331	1091	0865	0649	0444	0248	0061	40
41	2440	2134	1848	1579	1326	1088	0861	0646	0441	0245	0058	41
42	2435	2129	1843	1575	1322	1084	0858	0642	0438	0242	0055	42
43	2430	2124	1838	1571	1318	1080	0854	0639	0434	0239	0052	43
44	2424	2119	1834	1566	1314	1076	0850	0635	0431	0236	0049	44
45	2419	2114	1829	1562	1310	1072	0847	0632	0428	0232	0046	45
46	2414	2109	1825	1558	1306	1068	0843	0628	0424	0229	0042	46
47	2409	2104	1820	1553	1302	1064	0839	0625	0421	0226	0039	47
48	2403	2099	1816	1549	1298	1061	0835	0622	0418	0-223	0036	48

मिनट	डिग्री या घंटे											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
49	2398	2095	1811	1545	1294	1057	0832	0618	0414	0220	0033	49
50	2393	2090	1806	1540	1290	1053	0828	0615	0411	0216	0030	50
51	2388	2085	1802	1536	1286	1049	0825	0611	0408	0213	0027	51
52	2382	2080	1797	1532	1282	1045	0821	0608	0404	0210	0024	52
53	2377	2075	1793	1528	1278	1041	0817	0604	0401	0207	0021	53
54	2372	2070	1788	1523	1274	1038	0814	0601	0398	0204	0018	54
55	2367	2065	1784	1519	1270	1034	0810	0597	0394	0201	0015	55
56	2362	2061	1779	1515	1266	1030	0806	0594	0391	0197	0012	56
57	2356	2056	1774	1510	1261	1026	0803	0590	0388	0194	0009	57
58	2351	2051	1770	1506	1257	1022	0799	0587	0384	0191	0006	58
59	2346	2046	1765	1502	1253	1018	0795	0583	0381	0188	0003	59

मिनट	डिग्री या घंटे											मिनट
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	

6.4 सारांश

लग्न–स्पष्ट व भाव–स्पष्ट होने के पश्चात् जब तक ग्रह–स्पष्ट न हों तब तक जन्मकुण्डली निर्माण संभव नहीं है। ग्रह–स्पष्ट करने के लिए मानक समय के आधार पर ग्रह स्पष्ट सारणी का प्रयोग किया जाता है। भारत के लिए इसका समय 5.30 घंटे निर्धारित किया गया है क्योंकि भारत का मानक समय ग्रीनविच मीन टाइम से 5.30 घंटे आगे है। अर्थात् ग्रीनविच मीन टाइम पर जब 00.00 घंटे होगा तो भारत का समय 5.30 बजे प्रात: होगा।

जन्म समय और प्रात: 5.30 बजे का अंतर निकाला जाता है। जबकि ग्रह–स्पष्ट सारणी में 24 घंटे का 48 घंटे के अंतर का ग्रह–स्पष्ट दिया गया होता है, इसके आधार पर वांछित समय अंतराल के लिए ग्रह की चाल लॉग सारणी की सहायता से निकाल ली जाती है। यदि ग्रह मार्गी गति से चल रहा होता है तो ग्रह की चाल को पूर्व ग्रह–स्पष्ट में जोड़ देते हैं अन्यथा वक्री होने पर पूर्व ग्रह–स्पष्ट में से ग्रह की चाल को घटा देते हैं। इस प्रकार अभीष्ट ग्रह–स्पष्ट के रेखांश प्राप्त हो जाते हैं।

जिसको राशि के आधार पर लग्नकुण्डली में ग्रहों को स्थापित कर दिया जाता है। जबकि चलितकुण्डली के लिए ग्रह–स्पष्ट को भाव स्पष्ट के आधार पर स्थापित कर दिया जाता है। इस प्रकार लग्नकुण्डली व चलितकुण्डली का निर्माण हो जाता है।

6.5 शब्दावली

वक्री – उल्टी

मार्गी – सीधी

इफेमेरिस– पंचाँग

लॉग–सारणी – गणना हेतु प्रयुक्त लघु सारणी

लग्न – कुण्डली का प्रथम भाव

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. ग्रह–स्पष्ट के लिये जन्म समय कौन सा लिया जाता है स्थानीय समय या मानक समय और क्यों?

प्रश्न 2. भारतीय इफेमेरिस में ग्रह–स्पष्ट के लिए कितने बजे का समय लिया जाता है और क्यों?

प्रश्न 3. नवग्रहों की गति को घटते हुए क्रम में सूची बनाएं।

प्रश्न 4. ग्रहों की वक्री गति से क्या तात्पर्य है, उचित उदाहरण की सहायता से स्पष्ट करें।

प्रश्न 5. वक्री ग्रह के स्पष्ट रेखांश ज्ञात करने की विधि बताएं।

प्रश्न 6. क्या वक्री ग्रह वास्तव में विपरीत दिशा में गति करना प्रारंभ कर देते हैं या ऐसा सिर्फ आभासी रूप में होता है और क्यों?

प्रश्न 7. कौन सा ऐसा ग्रह है जो कभी वक्री नहीं होता और क्यों?

प्रश्न 8. चंद्र की 24 घंटे में लगभग कितनी चाल होती है?

प्रश्न 9. कौन सा ऐसा ग्रह है जो प्रत्येक वर्ष निश्चित तिथि पर मेष राशि में प्रवेश करता है और कब?

प्रश्न 10. नवग्रहों की प्रतिदिन औसत चाल बताएं।

प्रश्न 11. नवग्रहों की एक राशि में रहने की अवधि बताएं।

प्रश्न 12. नवग्रहों की भचक्र के एक चक्कर को पूरा करने की अवधि बताएं।

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. मानक समय या मध्य रेखांश का समय

उत्तर 2. 5:30 घंटे क्योंकि यह ग्रीनविच मध्य रेखांश से 82.30′ पूर्व में है।

उत्तर 3. चंद्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, राहु, केतु, शनि।

उत्तर 4. वक्री ग्रह की गति वास्तव में पृथ्वी की गति से धीमी हो जाती है या पृथ्वी से ग्रह 1800 से अधिक दूरी पर होता है।

उत्तर 5. वक्री गति के स्पष्ट रेखांश के लिए ग्रह की चाल को घटाया जाता है।

उत्तर 6. नहीं, ग्रह सीधी दिशा में ही चलता है।

उत्तर 7. चन्द्रमा, क्योंकि यह सूर्य के चारों ओर चक्कर नहीं लगाता।

उत्तर 8. 120

उत्तर 9. सूर्य, 14 अप्रैल

उत्तर 10. सूर्य 10, चंद्र 120, मंगल 45′, बुध 10, गुरु 2′ 30″, शुक्र 10, शनि 2′, राहु 3′, केतु

उत्तर 11. सूर्य[?]–1 माह, चंद्र–2.5 दिन, मंगल–40 दिन, बुध–30 दिन, गुरु–1 वर्ष, शनि–2.5 वर्ष, राहु–1.5 वर्ष, केतु–1.5 वर्ष

उत्तर 12. सूर्य–1 वर्ष, चंद्र–1 माह, मंगल–16 माह, बुध–1 वर्ष, गुरु–12 वर्ष, शनि–30 वर्ष, राहु–18 वर्ष, केतु–18 वर्ष

6.7 संदर्भ ग्रंथ /सूची

1. भारतीय ज्योतिष – नेमिचंद्र शास्त्री – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
2. बृहत् पाराशर होरा शास्त्र
3. सरल ज्योतिष – अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
4. फ्यूचर पंचांग – फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.

6.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. पंचाँग में दैनिक ग्रह–स्पष्ट
2. इंटरनेट साइट http ://www.skymap.com
3. वेधशाला

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 13. 11 जनवरी 2011 को दोपहर 12:15 दिल्ली में जन्मे व्यक्ति के लिए नवग्रह स्पष्ट की गणना करें। जिसमें गणना हेतु लॉग–सारणी का प्रयोग किया गया हो।

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 13. सूर्य 08S 260 40′

चंद्र 11S 130 35′

मंगल 09S 020 21′

बुध 08S 030 30′

गुरु 11S 040 21′

शुक्र 07S 090 50′

शनि 05S 230 00′

राहु 08S 080 33′

केतु 02S 080 33

इकाई – 7 विंशोत्तरीदशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तरदशा–साधन

7.1 **प्रस्तावना**

7.2 **उद्देश्य**

7.3 **विंशोत्तरीदशा– परिचय**

7.3.1 विंशोत्तरीदशा – गणना विधि

7.3.2 अन्तर्दशा – परिचय

7.3.3 अन्तर्दशा – गणना विधि

7.3.4 प्रत्यन्तरदशा – परिचय

7.3.5 अन्तर्दशा – गणना विधि

7.4 **सारांश**

7.5 **शब्दावली**

7.6 **अभ्यास प्रश्नों के उत्तर**

7.7 **संदर्भ ग्रंथ सूची**

7.8 **सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री**

7.9 **निबन्धात्मक प्रश्न**

7.1 प्रस्तावना

पिछले अध्यायों में आपने लग्नसाधन व ग्रह–स्पष्ट करने की विधि का ज्ञान प्राप्त किया। जन्मकुण्डली में ग्रह स्थिति के कारण हमें जीवन में नाना प्रकार के शुभ और अशुभ प्रभाव मिलते हैं। विभिन्न तरह की घटनाएं विभिन्न ग्रह योगों के कारण होती हैं। ये शुभाशुभ प्रभाव जीवन में कब घटित होंगे इसकी जानकारी ग्रह दशाओं के माध्यम से होती है। अर्थात् घटनाओं का समय निर्धारित करने की पद्धति को दशा पद्धति कहते हैं। भारतीय ज्योतिष में सबसे ज्यादा प्रचलन विंशोत्तरी दशा पद्धति का है। इसमें सभी ग्रहों की दशा वर्षों का योगफल 120 वर्ष आता है। विंशोत्तरी दशा साधन गणित ज्योतिष का महत्वपूर्ण अंग है।

विंशोत्तरी दशा की गणना जन्म के समय चन्द्र ग्रह की स्थिति के आधार पर की जाती है। किस समय किसी व्यक्ति के जीवन में किस ग्रह की दशा का प्रभाव चल रहा है इसका निर्णय करने के लिए सर्व प्रथम यह जानना आवश्यक होता है कि जन्म के समय आप किस ग्रह की दशा के प्रभाव में चल रहे थे और उस ग्रह की दशा जन्म समय से कितनी भोगना शेष था।

आगामी अध्याय में दशा गणना की अनेक विधियां ज्योतिष शास्त्र में प्रचलित हैं। यथा भोगिनी दशा, चर दशा, काल चक्र दशा, अष्टोत्तरी दशा का प्रचलन विशेष है।

7.2 उद्देश्य

- विंशोत्तरी दशा का परिचय प्राप्त कर पायेंगे।
- अन्तर्दशाओं का परिचय और गणना का विधिवत् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रत्यन्तर दशा की गणना कर पायेंगे।

7.3 विंशोत्तरीदशा– परिचय

जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा जन्म समय में चल रही होती है। आगे दी जा रही तालिका से यह जाना जा सकता है –

विंशोत्तरी दशा के तीन स्तर –

महादशा

अन्तर्दशा

प्रत्यन्तरदशा

नक्षत्र का नाम	स्वामी	नक्षत्र प्रारम्भ अंश	नक्षत्र समाप्ति अंश
अश्विनी	केतु	मेष 0°–1' से	13°–20' तक
भरणी	शुक्र	मेष 13°–21' से	26°–40' तक
कृतिका	सूर्य	मेष 26°–41' से	वृष में 10°–00' तक
रोहिणी	चन्द्र	वृष में 10°–01' से	23°–20' तक
मृगशिरा	मंगल	वृष में 23°–21' से	मिथुन में 6°–40' तक
आर्द्रा	राहु	मिथुन में 6°–41' से	20°–00' तक
पुनर्वसु	गुरु	मिथुन में 20°–01' से	कर्क में 3°–20' तक
पुष्य	शनि	कर्क में 3°–21' से	16°–40' तक
आश्लेषा	बुध	कर्क में 16°–41' से	30°–00' तक
मघा	केतु	सिंह में 0°–01' से	13°–20' तक
पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र	सिंह में 13°–21'से	26°–40' तक
उत्तरा फाल्गुनी	सूर्य	सिंह में 26°–41'से	कन्या में 10°–00' तक
हस्त	चन्द्र	कन्या में 10°–01' से	23°–20' तक
चित्रा	मंगल	कन्या में 23°–21' से	तुला में 6°–40' तक
स्वाती	राहु	तुला में 6°–41' से	20°–00' तक
विशाखा	गुरु	तुला में 20°–01' से	वृश्चिक में 3°–20' तक
अनुराधा	शनि	वृश्चिक में 3°–21' से	16°–40' तक
ज्येष्ठा	बुध	वृश्चिक में 16°–41' से	30°–00' तक
मूल	केतु	धनु में 0°–1' से	13°–20' तक
पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	धनु में 13°–21' से	26°–40' तक
उत्तराषाढ़ा	सूर्य	धनु में 26°–41' से	मकर में 10°–00' तक
श्रवण	चन्द्र	मकर में 10°–01' से	23°–20' तक

धनिष्ठा	मंगल	मकर में 23°–21' से कुंभ में 6°–40' तक
शतभिषा	राहु	कुंभ में 6°–41' से 20°–00' तक
पूर्वाभाद्रपद	गुरु	कुंभ में 20°–01' से मीन में 3°–20' तक
उत्तरा भाद्रपद	शनि	मीन में 3°–21' से 16°–40' तक
रेवती	बुध	मीन में 16°–41' से 30°–00' तक

7.3.1 विंशोत्तरीदशा–गणनाविधि

जन्म के समय चन्द्रमा के नक्षत्र को देखकर आप जान जाएँगे कि अमुक ग्रह की दशा जन्म समय में चल रही है। लेकिन वह दशा कितने समय तक चलेगी इसकी गणना इस तरह की जाएगी :

जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उसके भोगांश पर दशा की शेष अवधि निर्भर करेगी। एक नक्षत्र का मान 13 अंश 20 कला होता है जिसमें कि चन्द्रमा का गोचर होता है। यदि इसे कलाओं में बांटा जाए तो उस नक्षत्र का मान 800 कला हो जाता है। पाठकों के लिए समझने वाली बात यह भी है कि यह 800 कला शुक्र ग्रह के नक्षत्र के लिए 20 वर्ष का प्रतिनिधित्व करेगी, चन्द्र ग्रह के नक्षत्र के लिए 10 वर्ष और शनि ग्रह के नक्षत्र के लिए 19 वर्ष की, अर्थात् यह नक्षत्र का सम्पूर्ण मान है, उसके स्वामी ग्रह के अनुसार दशा वर्ष भिन्न हो सकते हैं।

सरल उदाहरण से समझें –

चन्द्रमा मिथुन राशि में 8 अंश 26 कला और 49 विकला पर है। नक्षत्र नाम और विस्तार तालिका देखने से मालूम होता है कि चन्द्रमा आर्द्रा नक्षत्र में है जिसका स्वामी ग्रह राहु है अतः यह निश्चित हो जाता है कि जन्म समय राहु ग्रह की दशा चल रही थी।

राहु दशा जन्म के बाद कितनी आयु तक चलेगी यह जानने के लिए अग्रलिखित विधि को ध्यान से पढें –

नक्षत्र का भोगांश = नक्षत्र के समाप्ति अंश – चन्द्र स्पष्ट

मिथुन राशि में आर्द्रा नक्षत्र का समाप्ति अंश 20 अंश 0 कला

जन्म समय चन्द्र की आर्द्रा नक्षत्र में स्थिति 8 अंश 26 कला

नक्षत्र भोगांश = 11 अंश 33 कला

11 अंश 33 कला = 660 अंश. 33 अंश

693 कला

राहु की दशा का कुल समय = 18 वर्ष

नक्षत्र भोगांश = 693 कला

जन्म के समय शेष भोग्य दशा = कुल ग्रह दशावर्ष X नक्षत्र भोगांश (कलाओं में)

800

जन्म के समय शेष भोग्य दशा = 18 X 693

800

= 15.5925 वर्ष

= 15 वर्ष 7 माह 4 दिन

जातक का जन्म 20 जुलाई 1971 को हुआ है अतः इस दिनांक में 15 वर्ष 7 माह और 4 दिन बाद राहु दशा समाप्त होकर गुरु महादशा शुरू हो जाएगी।

इस जातक के जीवन में दशा क्रम इस तरह से चलेगा –

	वर्ष	महीना	दिन
जन्म तारीख	1971	07	20
राहु दशा शेष अवधि	15	07	04
राहु दशा की समाप्ति	1987	02	24
गुरु दशा की अवधि	16	00	00
गुरु दशा समाप्ति काल	2003	02	24
शनि दशा की अवधि	19	00	00
शनि दशा समाप्ति काल	2021	02	24

इस तरह से गणना करके हम जान सकते हैं कि यह जातक अभी शनि महादशा में चल रहा है।

ग्रहों की महादशा वर्ष तालिका

ग्रह महादशा का क्रम	महादशा के सम्पूर्ण वर्ष
सूर्य	6 वर्ष
चन्द्र	10 वर्ष
मंगल	7 वर्ष
राहु	18 वर्ष
गुरु	16 वर्ष
शनि	19 वर्ष
बुध	17 वर्ष
केतु	7 वर्ष
शुक्र	20 वर्ष

7.3.2 अन्तर्दशा–परिचय

महादशा की गणना के बाद अन्तर्दशा की गणना की जाती है। जिस तरह से ग्रहों की महादशाएं एक निश्चित क्रम से जीवन में आती हैं उसी तरह से अन्तर्दशाओं का भी एक निश्चित क्रम होता है। जिस ग्रह की महादशा होती है उस ग्रह की अन्तर्दशा सबसे पहले आती है शेष अन्तर्दशाएं उसी क्रम से चलेंगी जो महादशा में ग्रहों का क्रम होता है।

ग्रहों की अन्तर्दशा की गणना के लिए जिस ग्रह की अन्तर्दशा की गणना करनी हो उसकी विंशोत्तरी दशा में उसके वर्ष ले लें। उस संख्या को चल रही ग्रह महादशा के विंशोत्तरी में कुल वर्षों से गुणा कर लें और उसमें 120 से भाग लगाएं। जो मान आएं वही उस ग्रह की अन्तर्दशा की अवधि होगी।

7.3.3 अन्तर्दशा–गणनाविधि

उदाहरण के लिए आपको शनि ग्रह की महादशा में बुध ग्रह की अन्तर्दशा ज्ञात करनी है तो आपको निम्नलिखित जानकारी लेनी होगी –

अन्तर्दशा ग्रह बुध की महादशा के विंशोत्तरी में वर्ष = 17 वर्ष

अन्तर्दशा काल =	विंशोत्तरी महादशा ग्रह के वर्ष x विंशोत्तरी में अन्तर्दशा ग्रह के वर्ष 120

शनि ग्रह की महादशा में बुध ग्रह की अन्तर्दशा = 17 X 19 ÷ 120

= 2 वर्ष 8 माह 9 दिन

विभिन्न ग्रहों की महादशाओं में अन्तर्दशाओं के वर्ष – मास – दिन की अवधि की सारणियां आगे दी जा रही हैं जिससे कि विद्यार्थियों के समय की बचत तो हो ही साथ ही वे स्वयं गणना करके अन्तर्दशा गणना सूत्र को परख पाएं।

अन्तर्दशा गणना का आवश्यक सूत्र –

सबसे पहले उसी ग्रह की अन्तर्दशा आती है जिस ग्रह की महादशा होती है।

अन्तर्दशा में ग्रहों का क्रम –

सूर्य – चन्द्र – मंगल – राहु – गुरु – शनि – बुध – केतु – शुक्र

सूर्य–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(सूर्य महादशा कुल दशा काल 6 वर्ष)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

चन्द्र–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(चन्द्र महादशा कुल दशा काल 10 वर्ष)

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	0	0	1	1	1	1	0	1	0
मास	10	7	6	4	7	5	7	8	6
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(मंगल महादशा कुल दशा काल 7 वर्ष)

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
वर्ष	0	1	0	1	0	0	1	0	0
मास	4	0	11	1	11	4	2	4	7
दिन	27	18	6	9	27	27	0	6	0

राहु–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(राहु महादशा कुल दशा काल 18 वर्ष)

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
वर्ष	2	2	2	2	1	3	0	1	1
मास	8	4	10	6	0	0	10	6	0
दिन	12	24	6	18	18	0	24	0	18

गुरु–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(गुरु महादशा कुल दशा काल 16 वर्ष)

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

शनि–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(शनि महादशा कुल दशा काल 19 वर्ष)

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु
वर्ष	3	2	1	3	0	1	1	2	2
मास	0	8	1	2	11	7	1	10	6
दिन	3	9	9	0	12	0	9	6	12

बुध–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(बुध महादशा कुल दशा काल 17 वर्ष)

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	2	0	2	0	1	0	2	2	2
मास	4	11	10	10	5	11	6	3	8
दिन	27	27	0	6	0	27	18	6	9

केतु–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(केतु महादशा कुल दशा काल 7 वर्ष)

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

शुक्र–महादशा में ग्रहों का अन्तर्दशा–काल

(शुक्र महादशा कुल दशा काल 20 वर्ष)

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
वर्ष	3	1	1	1	3	2	3	2	1
मास	4	0	8	2	0	8	2	10	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0

7.3.4 प्रत्यन्तरदशा–परिचय

प्रत्यन्तरदशा की गणना, अन्तर्दशा की गणना के बाद होती है। सबसे पहले हमें यह देखना होता है कि किस ग्रह की प्रत्यन्तर दशा की गणना करनी है। उस ग्रह को विंशोत्तरी महादशा में कितने वर्ष दिए गए हैं। प्रत्यन्तर दशा की यह गणना जिस अन्तर्दशा में की जानी है वह अन्तर्दशाकाल महादशा में कितने दिन चलने वाला है। इन दोनों संख्याओं को गुणा करके जो संख्या प्राप्त हो उसमें 120 से भाग देने पर प्रत्यन्तरदशा के दिन प्राप्त होते हैं।

7.3.5 प्रत्यन्तरदशा–गणना विधि

आपको चन्द्र ग्रह की महादशा (10 वर्ष) में शुक्र ग्रह की अन्तर्दशा में सूर्य ग्रह की प्रत्यन्तरदशा ज्ञात करनी है तो आपको निम्नलिखित जानकारी लेनी होगी –

प्रत्यन्तरदशा ग्रह सूर्य के विंशोत्तरी में महादशा के वर्ष = 6 वर्ष

चन्द्रमहादशा में शुक्र अन्तर्दशा के दिन = 365. 240 = 605 दिन

प्रत्यन्तर दशा काल =	$\frac{\text{अन्तर्दशा अवधि (दिन में) x विंशोत्तरी में प्रत्यन्तरदशा ग्रह के वर्ष}}{120}$

चन्द्र ग्रह की महादशा में शुक्र ग्रह की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तरदशा = 6 X 605 ÷ 120

= 30 . 25 दिन अर्थात् 1 माह 6 घण्टे

विभिन्न ग्रहों की महादशाओं की अन्तर्दशाओं में प्रत्यन्तर दशा की अवधि की सारणियां आगे दी जा रही हैं जिससे कि विद्यार्थियों के समय की बचत तो हो ही साथ ही वे स्वयं गणना करके अन्तर्दशा गणना सूत्र को परख पाएंगे।

उदाहरण 2 –

यदि आपको शुक्र महादशा में बुध अन्तर्दशा में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करनी हो तो आपको निम्नलिखित चरणों के अनुसार गणना करनी होगी।

प्रत्यन्तरग्रह–दशा चन्द्र के विंशोत्तरी महादशा में वर्ष = 10 वर्ष

शुक्र–महादशा में बुध अन्तर्दशा की अवधि = 1030 दिन

शुक्र–महादशा में बुध अन्तर्दशा में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा = 10 X 1030 ÷ 120

= 85 दिन

= 2 माह 25 दिन

सूर्य–महादशा में

(सूर्य–महादशा काल 6 वर्ष)

सूर्य–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं –

(सूर्य महादशा सूर्य अन्तर्दशा काल 3 माह 18 दिन)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	5	9	6	16	14	17	15	6	18
दिन	24	0	18	12	24	6	18	18	0

चन्द्र–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं –

(सूर्य महादशा चन्द्र अन्तर्दशा काल 6 माह)

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1 0
मास	15	10	27	24	28	25	10	0	9
दिन	0	30	0	0	30	30	30	0	0

मंगल–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा मंगल अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	21	54	48	57	51	21	0	18	30
माह	7	18	16	19	17	7	21	6	10
दिन	21	54	48	57	51	21	0	18	30

राहु–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा राहु अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

बृहस्पति–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा बृहस्पति अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

शनि–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा शनि अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

बुध–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा बुध अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

केतु–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा केतु अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

शुक्र–अन्तर्दशा में प्रत्यन्तरदशाएं

(सूर्य महादशा शुक्र अन्तर्दशा काल माह दिन)

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	18	13	21	15	18	24	16	27	18
माह	36	12	18	54	54	0	12	0	54
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18

7.4 सारांश

इस इकाई में आपने विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तरदशा की गणना विधि उदाहरण देकर समझाई गई है। विंशोत्तरी दशाओं की गणना के सूत्र दिए गए हैं जिनकी सहायता से ज्योतिष की सामान्य जानकारी रखने वाले पाठक भी दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तरदशा की गणना

सरलता पूर्वक कर सकते हैं। विभिन्न महादशाओं में अन्तर्दशा काल और विभिन्न अन्तर्दशाओं में प्रत्यन्तर दशा की तालिकाएं भी दी गई हैं। विंशोत्तरी दशा की गणना का आधार चन्द्रमा की नक्षत्रीय स्थिति है। चन्द्रमा जिस ग्रह के नक्षत्र में है उस ग्रह की महादशा चल रही होती है।

7.5 शब्दावली

विंशोत्तरी महादशा – 120 वर्ष की महादशा

अन्तर्दशा – महादशा का उपविभाग

प्रत्यन्तरदशा – अन्तर्दशा का उपविभाग

भोग्य दशा – जन्म समय ग्रह की दशा जितनी भोगना शेष हो

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– विंशोत्तरी महादशा कुल कितने वर्ष की होती है ?

प्रश्न 2– विंशोत्तरी दशा के जनक कौन हैं ?

प्रश्न 3– महादशाओं का क्या क्रम है ?

प्रश्न 4– सबसे पहली महादशा कौन सी है ?

प्रश्न 5– किसी ग्रह की महादशा में पहली अन्तर्दशा कौन से ग्रह की होती है ?

प्रश्न 6– किसी ग्रह की अन्तर्दशा में पहली प्रत्यन्तर दशा किस ग्रह की होगी ?

प्रश्न 7– सबसे छोटी महादशा कौन सी होती है ?

प्रश्न 8– सबसे बड़ी महादशा कौन सी है ?

प्रश्न 9– जातक के जन्म के समय कौन सी दशा चल रही होती है ?

प्रश्न 10– अन्तर्दशा साधन का सूत्र बताइए।

प्रश्न 11– प्रत्यन्तर दशा की गणना किस सूत्र द्वारा की जाती है ?

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1– 120 वर्ष।

उत्तर 2– महर्षि पाराशर।

उत्तर 3– सूर्य–चन्द्र–मंगल–राहु–गुरु–शनि–बुध–केतु–शुक्र।

उत्तर 4– सूर्य।

उत्तर 5– पहली अन्तर्दशा उसी ग्रह की होती है जिस ग्रह की महादशा चल रही होती है। जैसे– सूर्य महादशा में पहली अन्तर्दशा सूर्य की ही होगी।

उत्तर 6– पहली प्रत्यन्तरदशा उसी ग्रह की होती है जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही होती है। जैसे– बुध की अन्तर्दशा में पहली प्रत्यन्तरदशा बुध की ही होगी।

उत्तर 7– सूर्य।

उत्तर 8– शुक्र।

उत्तर 9– चन्द्रमा की स्थिति जन्म के समय जिस नक्षत्र में होती है उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह की उस समय दशा चल रही होती है।

उत्तर 10–

$$\text{अन्तर्दशा} = \frac{\text{विंशोत्तरी में महादशा ग्रह के वर्ष x विंशोत्तरी में अन्तर्दशा ग्रह के वर्ष}}{120}$$

उत्तर 11–

$$\text{प्रत्यन्तरदशा} = \frac{\text{अन्तर्दशा ग्रह की अवधि (दिन) x विंशोत्तरी में प्रत्यन्तरदशा ग्रह के वर्ष}}{120}$$

7.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

वृहत् पाराशर होराशास्त्र – गणित खण्ड

भारतीय ज्योतिष – नेमिचन्द्र शास्त्री

7.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश शर्मा

ज्योतिष प्रारम्भिकी – डा. विनोद शास्त्री

7.9 निबन्धात्मक प्रश्न

एक जातक के ग्रह–स्पष्ट के अनुसार चन्द्रमा कर्क राशि में 18 अंश 10 कला 55 विकला का है। यह आश्लेषा नक्षत्र में स्थित है। अतः उपर्युक्त जातक की शेष भोग्य दशा बताइए ?

इकाई – 8 योगिनीदशा एवं अन्तर्दशा–साधन

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 योगिनीदशा– साधन

8.3.1 योगिनी अन्तर्दशा विचार

8.3.2 योगिनी अन्तर्दशा तालिका

8.4 सारांश

8.5 शब्दावली

8.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

8.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

8.9 निबन्धात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

विगत अध्याय में विंशोत्तरी दशा अन्तर्दशा व प्रत्यन्तरदशा की गणना विधि का ज्ञान प्राप्त किया। योगिनी की गणना भी विविध दशा पद्धतियों की भांति महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत इकाई में फलित ज्योतिष में ग्रहों के शुभाशुभ फल के समय का ज्ञान करने के लिए भारतीय दशा–पद्धति का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी–अपनी दशा अन्तर्दशाओं के अनुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं तथा अन्तर्दशाओं का वर्णन किया है। जैसे विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा, अष्टोत्तरी दशा तथा कालचक्र आदि मुख्य हैं। भारत के कुछ विशेष क्षेत्रों में योगिनी दशा का प्रचार अत्यधिक है। प्रस्तुत इकाई से विद्यार्थी योगिनी महादशा, अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर दशा की जानकारी प्राप्त कर पायेंगे। आगामी इकाई में षोडशवर्ग की गणना विधि का अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य:

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- योगिनी दशा का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- योगिनी महादशा की गणना कर सकेंगे।
- योगिनी अन्तर्दशा की गणना का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
- अन्तर्दशा तालिका से दशा में अन्तर्दशा की अवधि (वर्ष, मास, दिन) का ज्ञान प्राप्त होगा।

8.3 योगिनी दशा साधन

योगिनी दशा का कुल मान 36 वर्ष होता है। प्रत्येक 36 वर्ष पश्चात् पुनः इसकी आवृत्ति होती है। योगिनी दशाओं के क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम होते हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7 वर्ष = 36 वर्ष क्रमानुसार होती है।

मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी भद्रिका तथा।
उल्का, सिद्धा च फलमासां स्वनामवत् ।।

मंगला, पिंगला आदि दशाएं अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं। जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है उस नक्षत्र के अंक में 3 जोड़कर 8 से भाग देना चाहिये। जो शेष बचे वह योगिनी दशा होती है।

दशा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्फा	सिद्धा	संकटा
स्वामी	चंद्रमा	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु
वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8
नक्षत्र				अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग.
	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.
	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती		

इसमें अभिजित् नक्षत्र का ग्रहण नहीं है। इनके 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 क्रमशः दशा वर्ष होते हैं। इसकी एक आवृत्ति 36 वर्ष की होती है।

दशा का भुक्त भोग्य काल जानने के लिये विंशोत्तरी दशा की तरह प्रक्रिया करनी होती है। मान लीजिए कि किसी जातक की भ्रामरी योगिनी दशा सिद्ध होती है। चंद्रमा अश्विनी नक्षत्र पर 10° अंश का है।

13°–20′ = 800′ कला पर वर्ष संख्या = 4 वर्ष

$$1'''''' = \frac{4}{800}$$

$$600'''''' = \frac{4X600}{800} = 3 \text{ वर्ष}$$

ये तीन वर्ष भुक्त वर्ष है, शेष 4–3 = 1 वर्ष भोग्य वर्ष है। अर्थात् जातक को भ्रामरी योगिनी दशा का एक वर्ष अभी शेष है। दूसरा उदाहरण लें : यदि चंद्रमा स्पष्ट 11 रा.–20°–55′ है तो चंद्रमा रेवती नक्षत्र पर और उसका अंक 27 है।

27+3 = 30÷8 शेष = 6

अर्थात् उल्का योगिनी दशा चल रही है। मीन राशि में रेवती नक्षत्र का मान 11 रा . 16–40 से 30° तक का है।

चंद्रमा का स्पष्ट 11 रा . 20°–55′ है तो चंद्रमा रेवती नक्षत्र पर भुक्त है।

(11 / 20–55)–(11 / 16–40) = 4°–15′ =255 मिनट

यदि मान 13°–20′ = 800′ हो तो भुक्त दशा वर्ष = 6

″ ″ 1 ″ ″ ″ ″ ″ = 6 .

800

″ ″ 255′ ″ ″ ″ ″ ″ = 6X255

800

= 1.9 / 25 =1 वर्ष–10 मा.–29 दि.

भोग्य वर्ष 6–(1–10–29)= 4वर्ष–1मा.–1दि.

8.3.1 योगिनी अन्तर्दशा विचार

विंशोत्तरी दशा की तरह योगिनी दशा में भी आठों अन्तर्दशाएं चलती हैं। विंशोत्तरी दशा की तरह यहां पर भी वही नियम है। पहले उसी की अन्तर्दशा होती है।

दशा वर्ष X अन्तर्दशा वर्ष = वर्ष

36

माना उल्का योगिनी दशा में संकटा योगिनी दशा की अन्तर्दशा का समय साधना है तो

6X8

36

= 1.333 =1 वर्ष 4 मास उसकी तालिका निम्न प्रकार से होती है :

8.3.2 योगिनीदशान्तर्दशा–तालिका

मंगला में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	म.	उ.	सि.	सं.
मास	0	0	1	1	1	2	2	2
दिन	10	20	0	10	20	0	10	20

पिंगला में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
मास	1	2	2	3	4	4	5	0
दिन	10	0	20	10	0	20	10	20

धान्या में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.
मास	3	4	5	6	7	8	9	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

भ्रामरी में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
मास	5	6	8	9	10	1	2	4
दिन	10	20	0	10	20	10	20	0

भद्रिका में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.
वर्ष	0	0	0	1	0	0	0	0
मास	8	10	11	1	1	3	5	6
दिन	10	0	20	10	20	10	0	20

उल्का में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
वर्ष	1	1	1	0	0	0	0	0
मास	0	2	4	2	4	6	8	10
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

सिद्धा में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
वर्ष	1	1	0	0	0	0	0	1
मास	4	6	2	4	7	9	11	2
दिन	10	20	10	20	0	10	20	0

संकटा में अन्तर्दशा–चक्र

दशा	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
वर्ष	1	0	0	0	0	1	1	1
मास	9	2	5	8	10	1	4	6
दिन	10	20	10	0	20	10	0	20

8.4 सारांश

इस इकाई से ज्योतिष के विद्यार्थियों को योगिनी दशा और अन्तर्दशा के आधार पर शुभाशुभ फल का समय जानने के लिए योगिनी दशा और अन्तर्दशा की काल गणना की जानकारी प्राप्त होगी। इस इकाई से विद्यार्थी योगिनी दशा में अन्तर्दशा की समयावधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

8.5 शब्दावली

योगिनी दशा – 36 वर्ष की दशा

अन्तर्दशा – महादशा का उपविभाग

प्रत्यन्तर्दशा – अन्तर्दशा का उपविभाग

भोग्य दशा – जन्म समय पर ग्रह की जितनी दशा भोगनी शेष हो।

अभ्यास प्रश्न

1. योगिनी दशा का एक चक्र कितने वर्ष का होता है ?
2. भ्रामरी दशा की समयावधि क्या है ?
3. पुनर्वसु नक्षत्र में कौन सी दशा होती है ?
4. सिद्धा दशा का स्वामी कौन सा ग्रह है ?
5. उल्का दशा में पिंगला दशा की समयावधि क्या है ?
6. धान्या दशा में संकटा दशा की समयावधि क्या है ?

8.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. योगिनी दशा का एक चक्र 36 वर्ष का होता है।
2. भ्रामरी दशा की समयावधि 4 वर्ष है।
3. पुनर्वसु नक्षत्र में पिंगला दशा होती है।
4. सिद्धा दशा का स्वामी शुक्र ग्रह है।
5. उल्का दशा में पिंगला की अन्तर्दशा 4 मास की होती है।
6. धान्या दशा में संकटा की अन्तर्दशा 8 मास की होती है।

8.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

पन्ना लाल ज्योतिष तत्त्व जनरल बुक डिपो (जालन्धर)

के.के.जोशी मुहूर्त्त सागर पब्लिकेशन (दिल्ली);2008

कुरसीजा एस.सी. दशा फल निर्णय अखिल भारतीय ज्योतिष

संस्था संघ; दिल्ली

डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री भारतीय ज्योतिष भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली

8.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश शर्मा

ज्योतिष प्रारम्भिकी – डा. विनोद शास्त्री

8.9 निबन्धात्मक प्रश्न

योगिनी दशाओं का वर्ष विभाजन तथा दशा व अन्तर्दशा की गणना विधि का वर्णन करें।

ब्लॉक - 3

षोडशवर्ग – साधन

इकाई – 9 द्रेष्कॉण, चतुर्थांश, सप्तमांश एवं नवांश साधन

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 षोडश वर्ग

9.3.1 द्रेष्कॉण कुण्डली – परिचय

9.3.2 द्रेष्कॉण कुण्डली – साधन विधि

9.3.3 चतुर्थांश कुण्डली – परिचय

9.3.4 चतुर्थांश कुण्डली – साधन विधि

9.3.5 सप्तमांश कुण्डली – परिचय

9.3.6 सप्तमांश कुण्डली – साधन विधि

9.3.7 नवांश कुण्डली – परिचय

9.3.8 नवांश कुण्डली – साधन विधि

9.4 सारांश

9.5 शब्दावली

9.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

9.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

9.9 निबन्धात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

अध्ययन क्रम की विगत इकाईयों में आपने लग्न साधन, भाव–स्पष्ट, विशोत्तरी दशा व योगिनी दशा की गणना विधियों के साथ–साथ काल क्रम के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की।

प्रस्तुत अध्याय में लग्न–स्पष्ट व ग्रह–स्पष्ट के आधार पर वर्ग कुण्डलियों का निर्माण किया जाना है। भारतीय ज्योतिष जैसे गूढ और उपयोगी विषय के चमत्कारी फलादेश लोगों को सहज ही ज्योतिष के अध्ययन की ओर आकर्षित करते हैं। आज के कम्प्यूटर युग में जब बटन दबाते ही कुण्डली छप जाती हो तो लोग ज्योतिष के गणितीय पक्ष पर ध्यान न देकर सीधे ही फलित ज्योतिष का अध्ययन शुरू कर देते हैं। सच्चाई यह है कि सफल ज्योतिषी बनने के लिए हमें गणित ज्योतिष का भली – भांति ज्ञान होना आवश्यक है। गणितीय ज्ञान के बिना ज्योतिष फलादेश में सटीकता और गहाराई नहीं आ सकती है। क्योंकि जब हम ज्योतिष की गणनाएं करते हैं तो हमें उस कुण्डली में ग्रहों, राशियों और भावों की स्थितियों का गहराई से ज्ञान हो जाता है और संबंधित फलादेश ज्यादा सटीक बैठता है। गणित ज्योतिष में षोडशवर्ग साधन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि ये वर्ग ही फलादेश के आधार होते हैं। इस इकाई में द्रेष्कॉण, चतुर्थांश, सप्तमांश, नवांश कुण्डली की गणना की सरल विधि बताई गई है।

आगामी अध्याय में आप व्यवसाय सम्बन्धी वर्ग दशमांश के साथ–साथ अन्य विशेष वर्गों द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश और खवेदांश आदि की साधन विधि से परिचित हो पायेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- द्रेष्कॉण कुण्डली का परिचय और गणना कर सकेंगे
- चतुर्थांश कुण्डली का निर्माण कर सेकेंगे[?]।
- सप्तमांश कुण्डली को बनाने की विधि से परिचित हो पायेंगे।
- नवांश कुण्डली बना सकेंगे।

9.3 षोडशवर्ग

जिन कुण्डलियों में विस्तृत गणनाएं की जाती हैं उनमें आपने बहुत सी कुण्डलियां बनी देखी होंगी । ये संख्या में अधिकतम 16 हो सकती हैं। इस कारण ही इनका षोडशवर्ग नामकरण किया

गया है। इन 16 वर्ग कुण्डलियों को विविध नामों से जाना जाता है। षोडश वर्ग की आवश्यकता ग्रहों का बल ज्ञात करने के लिए होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के विविध क्षेत्रों का गहराई से विचार करने के लिए एक निश्चित वर्ग कुण्डली का अध्ययन आवश्यक है। षोडशवर्ग के जनक महर्षि पाराशर थे। वैसे तो जन्म कुण्डली हमारे फलादेश का मुख्य आधार है किन्तु किसी भाव या भावेश का गहन अध्ययन षोडशवर्ग से ही किया जाता है। लग्न कदाचित् सर्वाधिक महत्वपूर्ण है अतः षोडशवर्ग में लग्न और लग्नेश का गंभीरता से विचार करना चाहिए।

षोडशवर्ग की कुण्डलियों का विवरण आगे दिया जा रहा है –

1. लग्नकुण्डली
2. चन्द्रकुण्डली
3. द्रेष्कॉण कुण्डली
4. चतुर्थांश कुण्डली
5. सप्तमांश कुण्डली
6. नवांश कुण्डली
7. दशमांश कुण्डली
8. द्वादशांश कुण्डली
9. षोडशांश कुण्डली
10. विंशांश कुण्डली
11. खवेदांश कुण्डली
12. अक्षवेदांश कुण्डली
13. चतुर्विंशांश कुण्डली
14. सप्तविंशांश कुण्डली
15. त्रिंशांश कुण्डली
16. षष्ट्यंश कुण्डली

9.3.1 द्रेष्कॉणकुण्डली – परिचय

राशि को तीन समान भागों में बांटने से जो तीन समान भाग मिलते हैं उसे द्रेष्कॉण कहते हैं। एक द्रेष्कॉण को दस अंश का माना जाता है। एक राशि में दस – दस अंश के तीन द्रेष्कॉण बनते हैं। 1 से 10 अंश तक प्रथम द्रेष्कॉण, 11 से 20 अंश तक दूसरा द्रेष्कॉण, 21 से 30 अंश तक तीसरा द्रेष्कॉण होता है। हर राशि में प्रथम द्रेष्कॉण उसी राशि का, दूसरा द्रेष्कॉण उस राशि से पांचवी राशि का, तीसरा द्रेष्कॉण प्रथम राशि से नवीं राशि का होता है। प्रथम द्रेष्कॉण को नारद द्रेष्कॉण, दूसरे द्रेष्कॉण को अगस्त्य द्रेष्कॉण तीसरे द्रेष्कॉण को दुर्वासा द्रेष्कॉण कहा जाता है।

द्रेष्कॉण कुण्डली का विचार भाई–बहिनों से प्राप्त सुख और सहयोग, जातक के अपने साहस, पराक्रम, परिश्रम और सम्पन्नता तथा भाई – बहिनों की संख्या का विचार भी किया जाता है।

लग्न और ग्रह–स्पष्ट देखकर द्रेष्कॉण कुण्डली बनाने वाली तालिका आगे दी जा रही है –

द्रेष्कॉणचक्र–तालिका

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
0° से 10°	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10° से 20°	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
20° से 30°	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

9.3.2 द्रेष्कॉणकुण्डली–साधनविधि

द्रेष्कॉण कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

एक जातक का जन्म 20 जुलाई 1971 को दोपहर 12 बजकर 55 मिनट पर मथुरा में हुआ। इस जातक के लग्न और ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं –

	राशि	अंश	कला	विकला
लग्न–स्पष्ट	तुला	08	37	14
सूर्य–स्पष्ट	कर्क	03	28	45
चद्र–स्पष्ट	मिथुन	08	26	49

	राशि	अंश	कला	विकला
मंगल–स्पष्ट	मकर	27	58	07
बुध–स्पष्ट	कर्क	28	41	08
गुरु–स्पष्ट	वृश्चिक	03	09	52
शुक्र–स्पष्ट	मिथुन	22	55	39
शनि–स्पष्ट	वृष	09	58	27
राहु–स्पष्ट	मकर	21	07	10
केतु–स्पष्ट	कर्क	21	07	10

इस जातक का लग्न तुला राशि में 9 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में तुला राशि का पहले द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 7 अंक अर्थात् तुला राशि है। इस कारण से इस जातक की द्रेष्कॉण लग्न तुला होगी।

सूर्य की स्थिति कर्क राशि में 4 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में कर्क राशि का पहले द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 4 अंक अर्थात् कर्क राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में सूर्य को कर्क राशि में लिखा जाऐगा।

चन्द्र की स्थिति मिथुन राशि में 9 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में मिथुन राशि का पहले द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 3 अंक अर्थात् मिथुन राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में चन्द्र को मिथुन राशि में लिखा जाऐगा।

मंगल की स्थिति मकर राशि में 28 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में मकर राशि के तीसरे द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 6 अंक अर्थात् कन्या राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में मंगल को कन्या राशि में लिखा जाऐगा।

बुध की स्थिति कर्क राशि में 29 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में कर्क राशि के तीसरे द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 12 अंक अर्थात् मीन राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में बुध को मीन राशि में लिखा जाऐगा।

गुरु की स्थिति वृश्चिक राशि में 4 थे अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में वृश्चिक राशि के प्रथम द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 8 अंक अर्थात् वृश्चिक राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में बुध को वृश्चिक राशि में लिखा जाऐगा।

शुक्र की स्थिति मिथुन राशि में 23 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में मिथुन राशि के तीसरे द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 11 अंक अर्थात् कुंभ राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में चन्द्र को कुंभ राशि में लिखा जाऐगा।

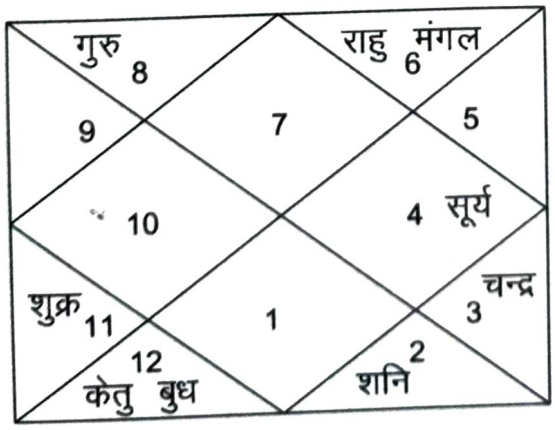
शनि की स्थिति वृष राशि में 10 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में वृष राशि के प्रथम द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 2 अंक अर्थात् वृष राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में शनि को वृष राशि में लिखा जाऐगा।

राहु की स्थिति मकर राशि में 22 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में मकर राशि के तीसरे द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 6 अंक अर्थात् कन्या राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में राहु को कन्या राशि में लिखा जाऐगा।

केतु की स्थिति कर्क राशि में 22 वें अंश पर है यह द्रेष्कॉण तालिका में कर्क राशि का तीसरे द्रेष्कॉण में पड़ता है जहां पर 12 अंक अर्थात् मीन राशि है। अतः द्रेष्कॉण कुण्डली में केतु को मीन राशि में लिखा जाएगा। इस गणना के आधार पर जातक की द्रेष्कॉण कुण्डली इस प्रकार बन जाएगी।

उदाहरण –

द्रेष्कॉण कुण्डली



9.3.3 चतुर्थांश कुण्डली–परिचय

एक राशि के चतुर्थ भाग को चतुर्थांश कहा जाता है। कुल 30 अंश में चार का भाग देने पर एक भाग 7 अंश लेकर 15 अंश का तृतीय 15 अंश से लेकर 22 अंश 30 कला का तथा चतुर्थ भाग 22 अंश 30 कला से लेकर 30 अंश तक का होता है। चतुर्थांश के प्रथम भाग के स्वामी सनक द्वितीय भाग के सनन्दन तृतीय भाग के स्वामी सनत्कुमार तथा चतुर्थ भाग के स्वामी सनातन हैं। नीचे पाठक वर्ग के लिए चतुर्थांश चक्र दिया जा रहा है –

चतुर्थांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
0–7° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
7° 30′–15°	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
15°–22°30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
22°30′–30°	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9

चतुर्थांश कुंडली में चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, चतुर्थांश लग्न व चतुर्थांश लग्न से चतुर्थ भाव का विचार जातक के सुख–सुविधा एवं भोग विलास का आकलन करने के लिए किया जाता है।

9.3.4 चतुर्थांश कुण्डली – साधन विधि

चतुर्थांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

एक जातक का जन्म 20 जुलाई 1971 को दोपहर 12 बजकर 55 मिनट पर मथुरा में हुआ। इस जातक के लग्न और ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं –

	राशि	अंश	कला	विकला
लग्न–स्पष्ट	तुला	08	37	14
सूर्य–स्पष्ट	कर्क	03	28	45
चन्द्र–स्पष्ट	मिथुन	08	26	49

	राशि	अंश	कला	विकला
मंगल–स्पष्ट	मकर	27	58	07
बुध–स्पष्ट	कर्क	28	41	08
गुरु–स्पष्ट	वृश्चिक	03	09	52
शुक्र–स्पष्ट	मिथुन	22	55	39
शनि–स्पष्ट	वृष	09	58	27
राहु–स्पष्ट	मकर	21	07	10
केतु–स्पष्ट	कर्क	21	07	10

चतुर्थांश कुण्डली



आइए उपर्युक्त जातक की चतुर्थांश कुंडली साधन की चर्चा करें –

उदाहरण कुंडली का लग्न तुला 8 अंश 37 कला होने से द्वितीय चतुर्थांश मकर की होगी। अतः लग्न मकर होगा।

सूर्य कर्क के 3 अंश 28 कला पर होने से प्रथम चतुर्थांश कर्क में जाएगा।

चंद्रमा मिथुन का 8 अंश 26 कला पर होने से द्वितीय चतुर्थांश कन्या में जाएगा।

मंगल मकर का 27 अंश 58 कला पर होने से चतुर्थ चतुर्थांश तुला में जाएगा।

इसी तरह बुध कर्क का 28 अंश 41 कला होने से चतुर्थ चतुर्थांश मेष में जाएगा।

गुरु वृश्चिक के 3 अंश 09 कला पर होने से प्रथम चतुर्थांश वृश्चिक में जाएगा।

शुक्र मिथुन का 22 अंश 55 कला का होने से चतुर्थ चतुर्थांश मीन में जाएगा।

शनि वृष का 9 अंश 58 कला का होने से द्वितीय चतुर्थांश सिंह में जाएगा।

राहु मकर का 21 अंश 7 कला का होने से तृतीय चतुर्थांश कर्क में जाएगा।

केतु कर्क का 21 अंश 7 कला का होने से तृतीय चतुर्थांश मकर में जाएगा।

9.3.5 सप्तमांश कुण्डली – परिचय

लग्न को सात समान भागों में बांटने से जो सातवां भाग मिलता है उसे सप्तमांश कहा जाता है। लग्न के 30 अंशों को 7 से भाग देने पर एक भाग 4 अंश 17 कला व 8 विकला का होता है। द्वितीय भाग 4–17–8 से 8–34–17 तृतीय 8–34–17 से 12–51–25 तक चतुर्थ भाग 12–51–25 से 17–8–34 तक पंचम भाग 17–8–34 से 21–25–42 तक षष्ठ भाग 21–25–42 तक व सातवां भाग 25–42–51 से 30–00–00 तक होता है। सप्तमांश साधन से हम जातक के संतान (पुत्र, पौत्र, पौत्री) पक्ष का प्रमुखतः विचार करते हैं।

सप्तमांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
4° 17′ 08″	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6
8° 34′ 17″	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7
12° 15′ 25″	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8
17° 8′ 34″	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9
21° 25′ 42″	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10
25° 42′ 51″	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11
30° 00′ 00″	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12

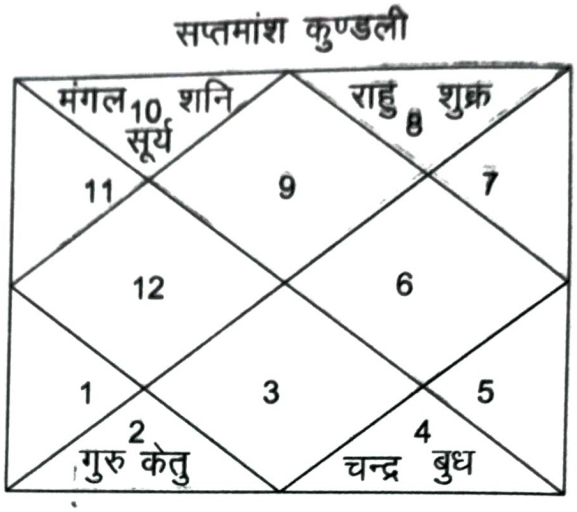
9.3.6 सप्तमांश कुण्डली – साधन विधि

सप्तमांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण हेतु जातक के लग्न और ग्रह स्पष्ट इसी यूनिट में पहले दिए जा चुके हैं।



उदाहरण कुण्डली का लग्न तुला 8 अंश 37 कला 14 विकला होने के कारण तृतीय भाग धनु की होगा। अतः सप्तमांश कुंडली का लग्न धनु हुआ।

सूर्य कर्क का 3 अंश 28 कला 45 विकला होने से प्रथम भाग मकर में जाएगा।

चन्द्र मिथुन का 8 अंश 26 कला होने के कारण द्वितीय भाग कर्क में जाएगा।

मंगल मकर का 27 अंश 58 कला 7 विकला होने से सप्तम भाग मकर में जाएगा।

बुध कर्क का 28 अंश 41 कला 08 विकला होने से सप्तम भाग कर्क में ही रहेगा।

गुरु वृश्चिक का 3 अंश 9 कला 52 विकला होने से प्रथम भाग वृश्चिक में जाएगा।

शुक्र मिथुन के 22 अंश 55 कला 39 विकला का होने से सप्तमांश सारणी के षष्ठ भाग वृश्चिक में जाएगा।

शनि वृष का 9 अंश 58 कला 27 विकला का होने से तृतीय भाग मकर में जाएगा।

राहु मकर का 21 अंश 07 कला 10 विकला होने से पंचम भाग वृश्चिक में जाएगा।

केतु कर्क का 21 अंश 07 कला 10 विकला होने से कर्क के पंचम भाग वृष में जाएगा।

9.3.7 नवमांश कुण्डली – परिचय

लग्न को नौ समान भागों में बांटने से जो नवां भाग मिलता है उसे नवमांश कहते हैं। लग्न के 30 अंशों में 9 से भाग देने पर एक भाग 3 अंश 20 कला का आता है। द्वितीय भाग 6–40 तक, तृतीय भाग 10–00 तक, चतुर्थ भाग 13–20 तक, अष्टम भाग 26–40 तक व नवम भाग 30–00 तक होता है। नवमांश के प्रत्येक भाग के स्वामी क्रमशः देवता, नर, राक्षस, देवता, नर, राक्षस, देवता, नर, राक्षस होते हैं।

नवांश साधन का प्रयोग जातक के दाम्पत्य जीवन व वैवाहिक सुख जानने के लिए किया जाता है। पारिवारिक सुख–दुःख में भी नवमांश कुंडली से बहुत सहायता मिलती है। यदि लग्नकुण्डली को शरीर माना जाए तो नवांश कुंडली उसकी आत्मा होती है। सर्वप्रथम विद्यार्थी सारणी का अवलोकन अवश्य करें –

नवमांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
03° 20′	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
06° 40′	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10° 00′	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13° 20′	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16° 40′	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20° 00′	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23° 20′	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26° 40′	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30° 00′	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

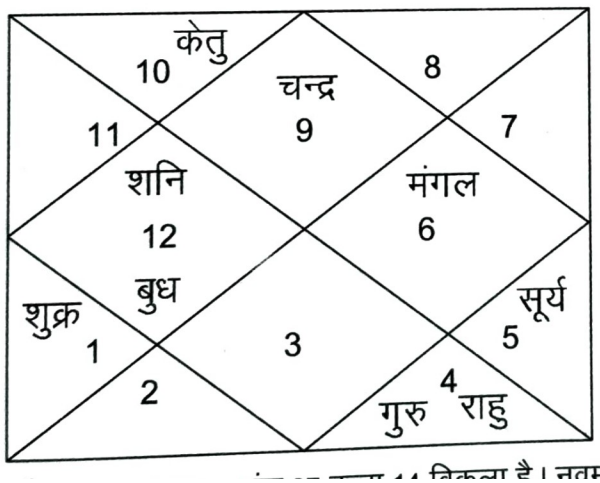
9.3.8 नवमांश कुण्डलीसाधन–विधि

आइए देखें नवमांश कुण्डली किस प्रकार बनती है।

उदाहरणकुण्डली –

–

नवमांश कुण्डली



उदाहरण कुण्डली का लग्न तुला 8 अंश 37 कला 14 विकला है। नवमांश चक्र सारणी में यह तुला के तृतीय भाग यानी धनु में आएगा अतः नवमांश कुण्डली की लग्न धनु होगा।

सूर्य कर्क का 3 अंश 28 कला का होने के कारण द्वितीय भाग सिंह के नवमांश में होगा।

चन्द्र मिथुन का 8 अंश 26 कला का होने से तृतीय भाग धनु के नवमांश में होगा।

मंगल मकर का 27 अंश 58 कला का होने से नवम भाग कन्या के नवमांश में होगा।

बुध कर्क का 28 अंश 41 कला का होने के कारण कर्क के नवम भाग मीन के नवमांश में जाएगा।

गुरु वृश्चिक का 3 अंश 9 कला का होने से प्रथम भाग कर्क के नवमांश में होगा।

शुक्र मिथुन के 22 अंश 55 कला का होने के कारण सप्तम भाग मेष के नवमांश में होगा।

शनि वृष का 9 अंश 58 कला का होने से तृतीय भाग मीन के नवमांश में जाएगा।

राहु मकर का 21 अंश 07 कला का होने के कारण मकर के सप्तम नवांश कर्क में जाएगा।

केतु कर्क का 21 अंश 07 कला का होने से कर्क में सप्तम नवांश मकर में जाएगा।

9.4 सारांश

इस इकाई में आपने द्रेष्कॉन साधन, चतुर्थांश साधन, सप्तमांश साधन व नवांश साधन की वर्ग कुंडलियों की गणना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की। वर्ग कुंडली के लिए निर्माण के लिए उपयोगी तालिकाएं भी आवश्यकतानुसार प्रस्तुत की गई हैं। द्रेष्कॉन में राशि के 30 अंशों का 3 बराबर भागों में , चतुर्थांश में राशि के 30 अंशों का 4 बराबर भागों में , सप्तमांश में राशि के 30 अंशों का 7 बराबर भागों में ,नवांश में राशि के 30 अंशों का 9 बराबर भागों में बांटकर तालिका बनाई गई है जो ग्रह जिस राशि में जितने अंशों पर होता है तालिका देखकर उसे संबंधित कुण्डली में उपयुक्त राशि में स्थापित किया जाता है। इस इकाई में दिए गए उदाहरणों के अध्ययन से आप सरलतापूर्वक वर्ग कुंडली के निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सक्षम हो पाएंगे।

9.5 शब्दावली

जातक – जिस व्यक्ति की कुण्डली हो उसे जातक के संबोधन से पुकारा गया है।

1 राशि = 30 अंश

1 अंश = 60 कला

1 कला = 60 विकला

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– षोडश वर्ग के जनक का नाम बताइए।

प्रश्न 2– द्रेष्कॉण साधन में लग्न को कितने भागों में विभाजित किया जाता है ?

प्रश्न 3– अगस्त्य द्रेष्कॉण किस भाग को कहा जाता है ?

प्रश्न 4– चतुर्थांश से जातक के जीवन की कौन–कौन सी चीजों का आकलन करते हैं ?

प्रश्न 5– चतुर्थांश के प्रथम भाग के स्वामी कौन है ?

प्रश्न 6– सप्तमांश साधन में लग्न को कितने भागों में बांटा जाता है ?

प्रश्न 7– जातक के संतान पक्ष का विचार किस साधन से किया जाता है ?

प्रश्न 8– नवमांश साधन का प्रथम अंश कितने अंश व कला का होता है ?

प्रश्न 9– नवमांश साधन के सप्तम भाग के स्वामी कौन है ?

प्रश्न 10– नवमांश साधन से जातक के जीवन में किस तथ्य के संबंध में विचार करते है ?

प्रश्न 11– वृषभ राशि की लग्न 20 अंश 37 कला 24 विकला है। द्रेष्कॉण लग्न बताइए।

प्रश्न 12– एक जातक की लग्न स्पष्ट तुला 8 अंश 26 कला 10 विकला है तो नवमांश कुंडली की लग्न किस राशि की होगी गणना कीजिए।

9.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1– महर्षि पाराशर।

उत्तर 2– तीन भागों में।

उत्तर 3– द्वितीय भाग को।

उत्तर 4– जातक की सुख सुविधा व भोग विलास का आकलन करते हैं।

उत्तर 5– सनक।

उत्तर 6– सात भागों में।

उत्तर 7– सप्तमांश साधन से।

उत्तर 8– 3 अंश 20 कला।

उत्तर 9– देवता।

उत्तर 10– जातक के दाम्पत्य जीवन वैवाहिक सुख व पारिवारिक सुख–दुःख का विचार किया जाता है।

उत्तर 11– सर्वप्रथम द्रेष्कॉण साधन की सारणी देखकर यह ज्ञात करेंगे कि वृषभ राशि के 20 अंश 37 कला 24 विकल किस राशि में जाएगें। सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि वृषभ राशि में यह स्थिति तीसरे द्रेष्कॉण में जाएगी जहां मकर राशि है। अतः द्रेष्कॉण लग्न मकर होगी।

उत्तर 12– नवमांश सारणी में तुला 8 अंश 26 कला 10 विकला तीसरे भाग में जाती है जहां धनु राशि है। अतः नवमांश कुण्डली का लग्न धनु होगा।

9.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

वृहत्पाराशर होराशास्त्रम् – महर्षि पाराशर

सचित्र ज्योतिष शिक्षा (द्वितीय गणित खण्ड) – बाबू लाल ठाकुर ज्योतिषाचार्य

बृहज्जातक – वराहमिहिर

9.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

पाठक ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करें जिसमें कि षोडशवर्ग गणना को उदाहरण देकर समझाया गया है। साथ ही किसी कुण्डली में लग्न और भाव स्पष्ट लेकर उससे द्रेष्कॉन कुण्डली चतुर्थांश कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली, नवांश कुण्डली बनाने का अभ्यास करें।

9.9 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न – द्रेष्कॉन कुण्डली, चतुर्थांश कुण्डली, सप्तमांश कुण्डली, नवांश कुण्डली बनाने की विधि लगभग एक समान है, विवेचना कीजिए।

इकाई – 10 दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश एवं खवेदांश साधन

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 षोडश वर्ग

10.3.1 दशमांश कुण्डली – परिचय

10.3.2 दशमांश कुण्डली – साधन विधि

10.3.3 द्वादशांश कुण्डली – परिचय

10.3.4 द्वादशांश कुण्डली – साधन विधि

10.3.5 षोडशांश कुण्डली – परिचय

10.3.6 षोडशांश कुण्डली – साधन विधि

10.3.7 विंशांश कुण्डली – परिचय

10.3.8 विंशांश कुण्डली – साधन विधि

10.3.9 खवेदांश कुण्डली – परिचय

10.3.10 खवेदांश कुण्डली – साधन विधि

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

10.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

10.9 निबन्धात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

षोडशवर्गसाधन–सम्बन्धी प्रथम इकाई में आपने तृतीय अंश अर्थात् द्रेष्कॉन, चतुर्थांश, सप्तमांश व नवांश की साधन विधि का ज्ञान प्राप्त किया।

प्रस्तुत वर्ग साधन की महत्वपूर्ण इकाई में आप दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश, खवेदांश साधन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। वर्ग कुण्डलियों की गणना करने के दौरान आप लग्न, सभी ग्रहों की राशि और अंशात्मक स्थिति से पूरी तरह परिचित हो जाते हैं और फलादेश के समय यह जानकारी ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध और स्थिति को समझने में काफी सहायक होती है। ग्रह बल की जानकारी के लिए ग्रहों की इन वर्गों में स्थिति का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। अतः आपको इस इकाई का ध्यान पूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

आगामी अध्याय में आप वर्ग साधन के अक्षवेदांश, चतुर्विंशाश, सप्तविंशांश, षष्ट्यंश वर्गों की गणना करेंगे।

10.2 उद्देश्य

- दशमांश कुण्डली की रचना कर पायेंगे।
- द्वादशांश कुण्डली के निर्माण विधि से परिचित हो सकेंगे।
- षोडशांश कुण्डली का साधन कर सकेंगे।
- विंशांश कुण्डली बना सकेंगे।
- खवेदांश कुण्डली को बनाने की विधि लिख सकेंगे।

10.3 षोडश वर्ग

10.3.1 दशमांशकुण्डली–परिचय

जब राशि को दस समान भागों में विभाजित किया जाए तो एक भाग 3 अंश का होता है। इसी को दशमांश कहा जाता है। दशमांश साधन में दशमांश गणना विषम राशियों में उसी राशि के दशमांश से प्रारम्भ होती है। जैसे – मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ विषम राशियाँ हैं और इनमें पहला दशमांश इन्हीं राशियों का रहता है। सम राशियों में उस राशि से नवम राशि से प्रारम्भ होकर आगे क्रम से चलता रहता है।

दशमांश साधन से जातक की आजीविका, पदोन्नति, अधिकार व कर्म आदि का विचार किया जाता है।

दशमांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
03°	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
06°	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
9°	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10
12°	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
15°	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
18°	6	3	8	5	0	7	12	9	2	11	4	1
21°	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
24°	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
27°	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
30°	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

10.3.2 दशमांशकुण्डली–साधन विधि

दशमांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

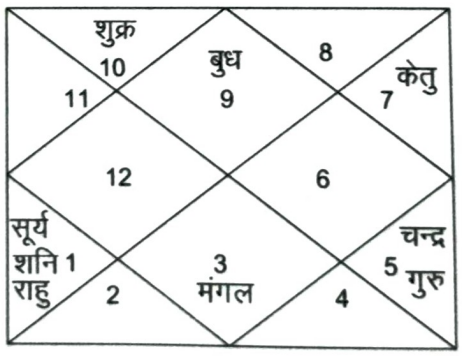
एक जातक का जन्म 20 जुलाई 1971 को दोपहर 12 बजकर 55 मिनट पर मथुरा में हुआ।

इस जातक के लग्न और ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं –

	राशि	अंश	कला	विकला
लग्न–स्पष्ट	तुला	08	37	14

	राशि	अंश	कला	विकला
सूर्य–स्पष्ट	कर्क	03	28	45
चन्द्र–स्पष्ट	मिथुन	08	26	49
मंगल–स्पष्ट	मकर	27	58	07
बुध–स्पष्ट	कर्क	28	41	08
गुरु–स्पष्ट	वृश्चिक	03	09	52
शुक्र–स्पष्ट	मिथुन	22	55	39
शनि–स्पष्ट	वृष	09	58	27
राहु–स्पष्ट	मकर	21	07	10
केतु–स्पष्ट	कर्क	21	07	10

दशमांश कुण्डली



उदाहरण कुण्डली का लग्न तुला का 8 अंश होने से दशमांश चक्र सारणी के तृतीय भाग धनु में जाएगा। अतः दशमांश कुण्डली का लग्न धनु होगा। सूर्य कर्क का 3 अंश 28 कला होने के कारण कर्क के द्वितीय भाग मेष में जाएगा। चन्द्र मिथुन का 8 अंश 26 कला होने से मिथुन के सप्तम भाव सिंह मे, मंगल मकर का 27 अंश 58 कला होने से दशम भाग मिथुन में, बुध कर्क का 28 अंश 41 कला होने से दशम भाग बुध में, गुरु वृश्चिक का 3 अंश 9 कला होने से द्वितीय भाग सिंह में तथा शुक्र मिथुन के 22 अंश 55 कला होने से अष्टम भाग मकर में जाएगा। ठीक इसी प्रकार शनि वृष का 9 अंश 58 कला होने से चतुर्थ भाग मेष में राहु मकर का 21 अंश 7 कला होने से अष्टम भाग मेष में

एवं केतु कर्क का 21 अंश 7 कला होने के कारण दशमांश सारणी के अंतर्गत कर्क राशि के अष्टम भाग तुला में जाएगा।

दशमांश कुण्डली से आजीविका का विचार किया जाता है। दशमांश कुण्डली के लग्न, दशम भाव, दशमांश कुण्डली के लग्नेश, दशम भावेश और लग्नकुण्डली के दशम भाव से व्यक्ति के जीवन में कार्य व्यवसाय तथा नौकरी सम्बन्धी निर्णय लिये जाते हैं।

10.3.3 द्वादशांशकुण्डली–परिचय

एक लग्न के बारह भाग किए जाएं तो एक भाग 2 अंश 30 कला का होगा। इसी को द्वादशांश कहते हैं। इसमें प्रथम द्वादशांश उसी राशि का होगा जैसे मेष में पहला द्वादशांश मेष का, द्वितीय वृष का, तृतीय मिथुन का आदि। ठीक इसी प्रकार वृष में प्रथम द्वादशांश वृष का, द्वितीय मिथुन का, तृतीय कर्क का आदि। आगे द्वादशांश चक्र सारणी दी जा रही हैं

द्वादशांश साधन से जातक के माता–पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। जातक के माता पिता की आर्थिक व सामाजिक स्थिति तथा जातक के जीवन में माता पिता से प्राप्त सुख का ज्ञान सहजता से मिल जाता है।

द्वादशांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
2° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
5° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
7° 30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
10° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
12° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
15° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
17° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
20° 00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
22° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
25° 00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
27° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
30° 00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

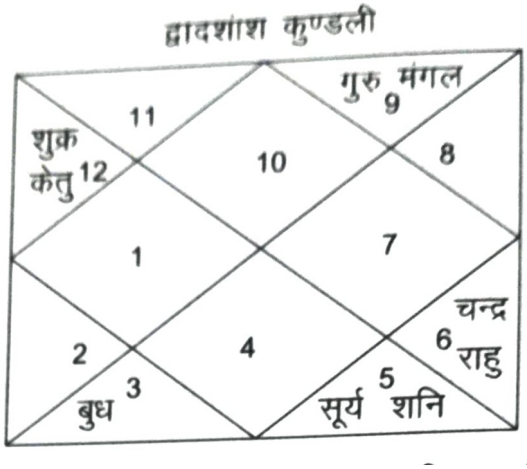
द्वादशांश साधन से जातक के माता–पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। जातक के माता पिता की आर्थिक व सामाजिक स्थिति तथा जातक के जीवन में माता पिता से प्राप्त सुख का ज्ञान सहजता से मिल जाता है।

10.3.4 द्वादशांशकुण्डली–साधन विधि

द्वादशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)



उदाहरण कुंडली की लग्न तुला के 8 अंश 37 कला 14 विकला की है। द्वादशांश सारणी में तुला राशि के अन्तर्गत देखा तो यह तुला के चतुर्थ भाग में मकर राशि के अन्तर्गत प्राप्त हुई। अतः मकर राशि द्वादशांश का लग्न होगा। सूर्य कर्क में 3 अंश 28 कला 45 विकला होने से कर्क राशि का द्वितीय भाग सिंह में, चन्द्र मिथुन में 8 अंश 26 कला 49 विकला होने से मिथुन का चतुर्थ भाग कन्या में, मंगल मकर में 27 अंश, 58 कला 7 विकला होने से बारहवें भाग में,धनु में बुध कर्क में 28

अंश 41 कला होने से कर्क के बारहवें भाग मिथुन में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला होने से द्वितीय भाग धनु में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला होने से मिथुन के दशम भाव के अन्तर्गत मीन में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला होने से चतुर्थ भाग सिंह में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला होने से नवम भाग कन्या में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला होने से कर्क के नवम भाग मीन में जाएगा।

10.3.5 षोडशांशकुण्डली–परिचय

किसी राशि को 16 बराबर भागों में बांटने से प्रत्येक भाग 1 अंश 52 कला 30 विकला का होगा। इन्हीं भागों को षोडशांश कहा जाता है। षोडशांश साधन राशियों के स्वभाव के अनुसार तीन भागों में विभक्त किया हुआ है। चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव। चर राशियों में षोडशांश मेष से प्रारंभ होता है। स्थिर राशि में सिंह से और द्विस्वभाव राशियों में धनु से प्रारंभ होता है।

षोडशांश–चक्र

अंश कला विकला	**चर राशि में** **मेष कर्क तुला मकर**	**स्थिर राशि में** **वृष सिंह वृश्चिक कुंभ**	**द्विस्वभाव राशि में** **मिथुन कन्या धनु मीन**
01° 52′ 30″	1	5	9
03° 45′ 00″	2	6	10
05° 37′ 30″	3	7	11
07° 30′ 00″	4	8	12
09° 22′ 30″	5	9	1
11° 15′ 00″	6	10	2
13° 07′ 30″	7	11	3
15° 00′ 00″	8	12	4
16° 52′ 30″	9	1	5

अंश कला विकला	चर राशि में मेष कर्क तुला मकर	स्थिर राशि में वृष सिंह वृश्चिक कुंभ	द्विस्वभाव राशि में मिथुन कन्या धनु मीन
18° 45′ 00″	10	2	6
20° 37′ 30″	11	3	7
22° 30′ 00″	12	4	8
24° 22′ 30″	1	5	9
26° 15′ 00″	2	6	10
28° 07′ 30″	3	7	11
30° 00′ 00″	4	8	12

षोडशांश साधन से हम जातक के वाहन सुख का विचार करते हैं। षोडशांश साधन की उदाहरण कुण्डली आगे दी जा रही है।

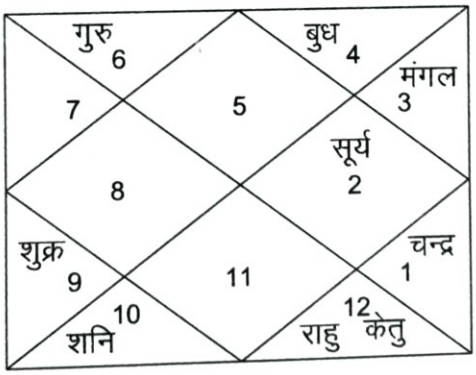
10.3.6 षोडशांश कुण्डली – साधन विधि

षोडशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित[?] गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

षोडशांश कुण्डली



उदाहरण कुण्डली में तुला लग्न है जो कि 8 अंश 37 कला 14 विकला पर है। षोडशांश सारणी में देखने पर[?] ज्ञात हुआ कि तुला लग्न के खाने में चर राशि के अन्तर्गत यह अंशादि पंचम भाग में सिंह राशि के प्राप्त हुए। अतः षोडशांश कुण्डली की लग्न सिंह की बनेगा। सूर्य कर्क राशि में 3 अंश 28 कला 45 विकला होने से चर राशि के अन्तर्गत द्वितीय भाग वृष में, चन्द्र मिथुन में 8 अंश, 26 कला 48 विकला होने से द्विस्वभाव राशि के अन्तर्गत पंचम भाग मेष में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला 7 विकला होने से चर राशि के अन्तर्गत पन्द्रहवें भाग मिथुन में बुध कर्क में 28 अंश 41 कला 8 विकला होने से चर राशि के अन्तर्गत सोलहवें भाग कर्क में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला 52 विकला होने से स्थिर राशि के अन्तर्गत द्वितीय भाग कन्या में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला 39 विकला होने से द्विस्वभाव राशि के अन्तर्गत धनु राशि में स्थित है। शनि वृष राशि के 9 अंश 58 कला 27 विकला पर होने से स्थिर राशि के अन्तर्गत छठे भाग मकर में आया है। राहु 21 अंश 07 कला और 10 विकला चर राशि के अन्तर्गत 12 वें भाग मीन राशि में आयेगा। केतु 21 अंश 07 कला और 10 विकला चर राशि के अन्तर्गत 12 वें भाग मीन राशि में आयेगा।

10.3.7 विंशांशकुण्डली–परिचय

लग्न के 30 अंशों को 20 से भाग देने पर एक भाग 1 अंश 30 कला का होता है। इसी प्रकार बने भाग को विंशांश कहते हैं। यह चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में धनु से तथा द्विस्वभाव राशि में सिंह से प्रारंभ होकर क्रमानुसार 20 भाग तक चलता है। आगे विंशांश साधन की सारणी दी जा रही है –

विंशांश–चक्र

स.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम – स्वामी	सम स्वामी
1	1° 30′	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	काली	दया
2	3° 00′	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	गौरी	मेधा
3	4° 30′	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	जया	छिन्नशी
4	6° 00′	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	लक्ष्मी	पिशाची
5	7° 30′	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	विजया	धूमावती
6	9° 00′	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	विमला	मातंगी
7	10° 30′	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	सती	बाला
8	12° 00′	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	तारा	भद्रा
9	13° 30′	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	ज्वाला	अरुणा
10	15° 00′	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	श्वेता	अनला
11	16° 30′	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	ललिता	पिंगला
1	18°	1	8	4	12	8	4	1	8	4	1	8	4	बगला	छुच्छुका

स.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम – स्वामी	सम स्वामी
2	00′	2						2			2				
13	19° 30′	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	प्रत्यंगिर	घोरा
14	21° 00′	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	शची	वाराही
15	22° 30′	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	रौद्री	वैष्णवी
16	24° 00′	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	भवानी	सिता
17	25° 30′	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	वरदा	भुवनेश्वरी
18	27° 00′	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	जया	भैरवी
19	28° 30′	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	त्रिपुरा	मंगला
20	30° 00′	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	सुमुखी	अपराजिता

विंशांश साधन से हम जातक की धार्मिक आस्था, उपासना व धार्मिक ज्ञान का विचार करते हैं। विद्यार्थीगण की सुविधा हेतु जातक की विंशांश कुण्डली का उदाहरण आगे दिया जा रहा है।

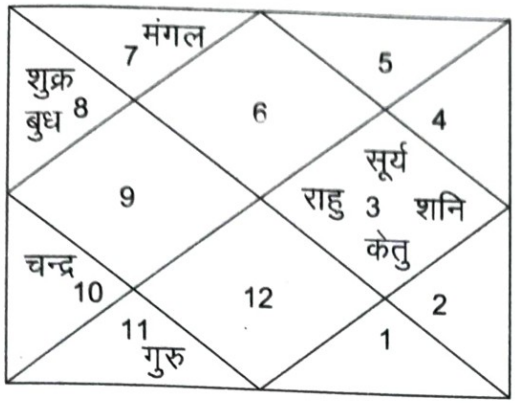
10.3.8 विंशांशकुण्डली–साधनविधि

विंशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

विंशांश कुण्डली



उदाहरण कुण्डली की लग्न स्पष्ट तुला के 8 अंश 37 कला 14 विकला है। विंशांश सारणी में यह 8 अंश 37 कला तुला राशि के षष्ठ भाग में कन्या राशि आई अतः विंशांश कुण्डली की लग्न कन्या होगी। सूर्य कर्क का 3 अंश 28 कला का तृतीय भाग मिथुन में, चन्द्र मिथुन का 8 अंश 26 कला होने से षष्ठ भाग मकर में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला होने से उन्नीसवें भाग तुला में, बुध कर्क में 28 अंश 41 कला होने से बीसवें भाग वृश्चिक में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 41 कला होने से तृतीय भाग कुंभ में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला होने से मिथुन के सोलहवें भाग वृश्चिक राशि में जाएगा। ठीक इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला होने से सप्तम भाव मिथुन में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला होने से पन्द्रहवें भाव मिथुन में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला का होने से सारणी अनुसार कर्क के पन्द्रहवें भाग मिथुन में जाएगा।

10.3.9 खवेदांशकुण्डली–परिचय

एक राशि के 30 अंशों को 40 समान भागों में बांटें तो प्रत्येक भाग 45 कला का आता है। इसी को खवेदांश साधन कहा जाता है। एक राशि में 45–45 कला के कुल 40 खवेदांश होते हैं। विद्यार्थीगण की सुविधा हेतु खवेदांश सारणी अगले पृष्ठ पर दी जा रही है।

खवेदांश साधन से हम जातक के जीवन में होने वाले शुभाशुभ का ज्ञान करते हैं।

खवेदांश चक्र

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.क.वि.
1	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	0° 45′

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.क.वि.
2	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	1° 30′
3	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	2° 15′
4	त्वष्टा	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	3° 00′
5	धाता	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	3° 45′
6	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	4° 30′
7	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	5° 15′
8	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	6° 00′
9	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	6° 45′
10	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	7° 30′
11	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	8° 15′
12	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	9° 00′
13	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	9° 45′
14	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	10° 30′
15	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	11° 15′
16	त्वष्टा	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	12° 00′
17	धाता	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	12° 45′
18	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	13° 30′
19	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	14° 15′
20	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	15° 00′

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.क.वि.
21	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	15° 45′
22	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	16° 30′
23	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	17° 15′
24	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	18° 00′
25	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	18° 45′
26	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	19° 30′
27	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	20° 15′
28	त्वष्टा	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	21° 00′
29	धाता	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	21° 45′
30	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	22° 30′
31	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	23° 15′
32	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	24° 00
33	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	24° 45′
34	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	25° 30′
35	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	26° 15′
36	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	27° 00′
37	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	27° 45′
38	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	28° 30
39	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	29° 15′

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.क.वि.
40	त्वष्टा	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	29° 00′

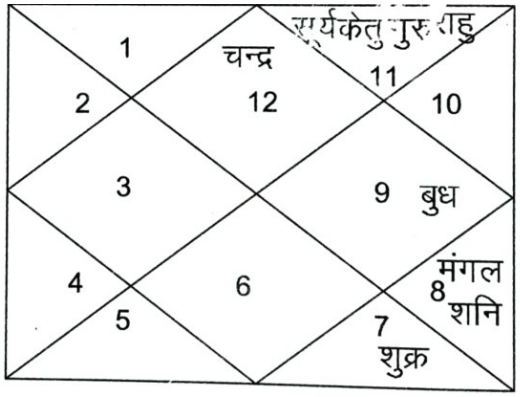
10.3.10 खवेदांशकुण्डली–साधन विधि

खवेदांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

खवेदांश कुण्डली



दी गई उदाहरण कुण्डली के अनुसार लग्न तुला राशि में 8 अंश 37 कला 14 विकला की है जो कि खवेदांश सारणी के बारहवें भाग के अन्तर्गत मीन राशि में आती है। अतः खवेदांश कुण्डली की लग्न मीन राशि की होगी। सूर्य कर्क में 3 अंश 28 कला होने से कर्क के पंचम भाग कुंभ में, चन्द्र मिथुन में 8 अंश 26 कला होने से बारहवें भाग मीन में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला होने से सैंतीसवें भाग वृश्चिक में, बुध कर्क में 28 अंश 41 कला होने से उन्तालीसवें भाग धनु में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला होने से पंचम भाग कुंभ में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला होने के कारण इकतीसवें भाग तुला राशि में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला होने से चौदहवें भाग वृश्चिक में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला होने से उन्तीसवें भाग कुंभ में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला होने के कारण खवेदांश सारणी के अन्तर्गत कर्क के उन्तीसवें भाग कुंभ राशि में जाएगा।

10.4 सारांश

इस इकाई में आपने दशमांश साधन, द्वादशांश साधन, षोडशांश साधन, विंशांश साधन व खवेदांश साधन की वर्ग कुण्डलियों की गणना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की। वर्ग कुण्डली के लिए निर्माण के लिए उपयोगी तालिकाएं भी आवश्यकतानुसार प्रस्तुत की गई हैं। इस इकाई के अध्ययन से आप सरलतापूर्वक वर्ग कुण्डली के निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सक्षम हो पायेंगे।

10.5 शब्दावली

दशमांश – एक राशि का दसवां अंश

द्वादशांश – एक राशि का बारहवां अंश

षोडशांश – एक राशि का सोलहवां अंश

विंशांश – एक राशि का बीसवां अंश

खवेदांश – एक राशि का[?] चालीसवां अंश

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– दशमांश साधन में एक भाग कितने अंश का होता है ?

प्रश्न 2– जातक के आजीविका सम्बन्धी प्रश्नों का विचार किस साधन[?] से किया जाता है ?

प्रश्न 3– एक जातक के ग्रह स्पष्ट अनुसार मंगल मकर राशि मे[?] 28 अंश 56 कला का है। गणना कर बताइए वह दशमांश कुण्डली में किस राशि में जाएगा ?

प्रश्न 4– लग्न को बारह भागों में बांटने से कौन से साधन की प्राप्ति होती है ?

प्रश्न 5– द्वादशांश साधन से जातक के किस क्षेत्र का विचार किया जाता है ?

प्रश्न 6– षोडशांश साधन राशियों के अनुसार कितने भागों में विभक्त किया जाता है ?

प्रश्न 7– षोडशांश साधन का एक भाग कितने अंश, कला व विकला का होता है ?

प्रश्न 8– एक जातक के ग्रह–स्पष्ट के अनुसार गुरु वृश्चिक में 3 अंश 12 कला 50 विकला है। षोडशांश कुण्डली में गुरु किस राशि में जाएगा ?

प्रश्न 9– विंशांश साधन चर राशि में किस राशि से प्रारंभ होता है ?

प्रश्न 10– विंशांश साधन का एक भाग कितने अंश व कला का होता है ?

प्रश्न 11– जातक की धार्मिक आस्था का आकलन किस साधन से करते हैं ?

प्रश्न 12– एक राशि में कुल कितने खवेदांश होते है ?

प्रश्न 13– जातक के जीवन में घटने वाले शुभाशुभों का ज्ञान किस साधन द्वारा होता है ?

प्रश्न 14– एक जातक की लग्न–स्पष्ट तुला राशि में 8 अंश 37 कला 14 विकला है, गणना कर बताइए खवेदांश कुण्डली की लग्न किस राशि की होगी ?

10.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1– 3 अंश का।

उत्तर 2– दशमांश साधन से।

उत्तर 3– मंगल की मकर राशि में 28 अंश 56 कला की स्थिति सारणी में दसवें भाग में जाता है जहाँ मिथुन राशि है अतः दशमांश कुण्डली में मंगल मिथुन राशि में जाएगा।

उत्तर 4– द्वादशांश साधन।

उत्तर 5– जातक के माता पिता व उनकी आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में।

उत्तर 6– तीन भागों में। चर, स्थिर व द्विस्वभाव।

उत्तर 7– 1 अंश 52 कला 30 विकला।

उत्तर 8– षोडशांश सारणी में गुरु की यह स्थिति स्थिर राशि के अन्तर्गत द्वितीय भाग में आ रही है जहां कन्या राशि है अतः षोडशांश कुण्डली में गुरु कन्या राशि में जाएगा।

उत्तर 9– मेष राशि से।

उत्तर 10– 1 अंश 30 कला।

उत्तर 11– विंशांश साधन से।

उत्तर 12– 40।

उत्तर 13– खवेदांश साधन से।

उत्तर 14– लग्न तुला राशि में 8 अंश 37 कला 14 विकला है जो कि खवेदांश सारणी के बारहवें भाग के अन्तर्गत मीन राशि में आता है। अतः खवेदांश कुण्डली की लग्न मीन होगी।

10.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

वृहत्पाराशर होराशास्त्रम् – महर्षि पाराशर

सचित्र ज्योतिष शिक्षा (द्वितीय गणित खण्ड) – बाबू लाल ठाकुर, ज्योतिषाचार्य

बृहज्जातक – वराहमिहिर

10.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

पाठक ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करें जिसमें कि षोडशवर्ग गणना को उदाहरण देकर समझाया गया है। साथ ही किसी कुण्डली में लग्न और भाव स्पष्ट लेकर दशमांश कुण्डली, द्वादशांश कुण्डली, षोडशांश कुण्डली, विंशांश कुण्डली, खवेदांश कुण्डली बनाने का अभ्यास करें।

10.9 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न – दशमांश कुण्डली, द्वादशांश कुण्डली, षोडशांश कुण्डली, विंशांश कुण्डली, खवेदांश कुण्डली बनाने की विधि लगभग एक समान है, विवेचना कीजिए।

ईकाई – 11 अक्षवेदांश, चतुर्विंशांश, सप्तविंशांश, त्रिंशांश एवं षष्ट्यंश साधन

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 षोडश वर्ग

11.3.1 अक्षवेदांश कुण्डली – परिचय

11.3.2 अक्षवेदांश कुण्डली – साधन विधि

11.3.3 चतुर्विंशांश कुण्डली – परिचय

11.3.4 चतुर्विंशांश कुण्डली – साधन विधि

11.3.5 सप्तविंशांश कुण्डली – परिचय

11.3.6 सप्तविंशांश कुण्डली – साधन विधि

11.3.7 त्रिंशांश कुण्डली – परिचय

11.3.8 त्रिंशांश कुण्डली – साधन विधि

11.3.9 षष्ट्यंश कुण्डली – परिचय

11.3.10 षष्ट्यंश कुण्डली – साधन विधि

11.4 सारांश

11.5 शब्दावली

11.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

11.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

11.9 निबन्धात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

गणित ज्योतिष में वर्ग साधन जैसी महत्वपूर्ण इस इकाई में आप अक्षवेदांश, चतुर्विंशाश[?], सप्तविंशांश, त्रिंशांश और षठ्यंश[?] साधन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। वर्ग कुण्डलियों की गणना करने के दौरान आप लग्न, सभी ग्रहों की राशि और अंशात्मक स्थिति से पूरी तरह परिचित हो जाते हैं और फलादेश के समय यह जानकारी ग्रहों के परस्पर संबंध और स्थिति को समझने में काफी सहायक होती है। इस कारण से आपको इस इकाई का ध्यान पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। आगामी अध्ययन में आप फलादेश की विशेष विधियों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। पूर्ववर्ती इकाई में वर्ग कुण्डली के दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश, खवेदांश साधन की विधि का ज्ञान प्राप्त किया।

11.2 उद्देश्य

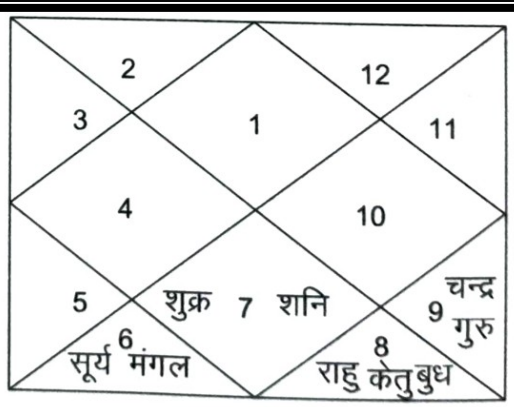
- अक्षवेदांश साधन कर पायेंगे।
- चतुर्विंशाश कुण्डली को बनाने की विधि से परिचित हो पायेंगे।
- सप्तविंशांश कुण्डली बना सकेंगे।
- त्रिंशांश कुण्डली साधन कर सकेंगे।
- षष्ट्यंश कुण्डली का निर्माण कर सकेंगे।

11.3 षोडश वर्ग

11.3.1 अक्षवेदांशकुण्डली–परिचय

लग्न के 30 अंशों में 45 से भाग देने पर हर भाग 40 कला का होगा। इसी को अक्षवेदांश कहते हैं। एक राशि के 40 कला के 45 अक्षवेदांश होते हैं। अक्षवेदांश चर राशि में मेष से स्थिर राशि में सिंह से तथा द्विस्वभाव राशि में धनु राशि से प्रारंभ होकर आगे चलती है। अक्षवेदांश साधन से हम जातक के जीवन की सभी शुभ अशुभ स्थिति का विचार करते हैं। अगले पृष्ठ पर अक्षवेदांश चक्र सारिणी दी जा रही है।

अक्षवेदांश कुण्डली



11.3.2 अक्षवेदांशकुण्डली – साधनविधि

अक्षवेदांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना[?] आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण कुण्डली की लग्न तुला के 8 अंश 37 कला 14 विकला होने से अक्षवेदांश सारणी के तेरहवें भाग में गई। जहाँ मेष राशि है। अतः अक्षवेदांश सारणी की लग्न मेष की बनेगी। सूर्य कर्क में 3 अंश 28 कला 45 विकला होने से षष्ठ भाग कन्या में, चन्द्र मिथुन में 8 अंश 26 कला 49 विकला होने से तेरहवें भाग धनु में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला 7 विकला होने से 42 वें भाग कन्या में, बुध कर्क में 28 अंश 41 विकला 8 विकला होने से 44 वें भाग वृश्चिक में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला 52 विकला होने से पंचम भाव धनु में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला 39 विकला होने के कारण अक्षवेदांश सारणी के अन्तर्गत 35 वें भाग तुला राशि में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला 27 विकला होने से 15 वें भाग तुला में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला 14 विकला होने से 32 वें भाग वृश्चिक में[?] तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला 14 विकला होने से 32 वें भाग वृश्चिक में जाएगा।

अक्षवेदांश चक्र.1

स्वामी	ब्रह्मा शंकर विष्णु	शं वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	विष्णु ब्रह्मा शंकर	स्वामी

सं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
1	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	0° 40′
2	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	1° 20′
3	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	2° 00′
4	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	2° 40′
5	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	3° 20′
6	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	4° 00′
7	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	4° 40′
8	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	5° 20′
9	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	6° 00′
10	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	6° 40′
11	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	7° 20′
12	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	8° 00′
13	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	8° 40′
14	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	9° 20′
15	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	10° 00′
16	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	10° 40′
17	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	11° 20′
18	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	12° 00′
19	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	12° 40′
20	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	13°

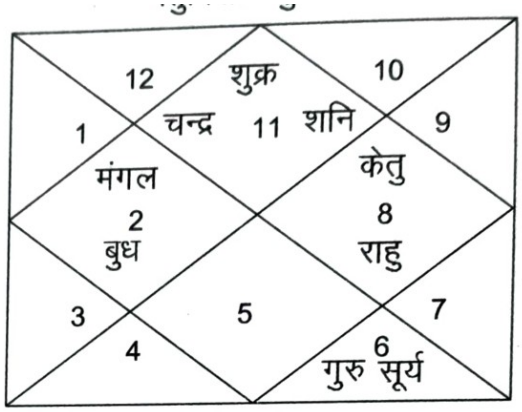
स्वामी	ब्रह्मा शंकर विष्णु	शं वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	विष्णु ब्रह्मा शंकर	स्वामी
सं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
													20′
21	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	14° 00′
22	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	14° 40′
23	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	15° 20′
24	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	16° 00′
25	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	16° 40′
26	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	17° 20′
27	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	18° 00′
28	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	18° 40′
29	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	19°20′
30	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	20° 00′
31	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	20° 40′
32	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	21° 20′

स्वामी	ब्रह्मा शंकर विष्णु	शं वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. श.	ब्र. श. वि.	श. वि. ब्र.	विष्णु ब्रह्मा शंकर	स्वामी
सं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
33	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	22°00′
34	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	22° 40′
35	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	23° 20′
36	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	24° 00′
37	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	24° 40′
38	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	25° 20′
39	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	26° 00′
40	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	26° 40′
41	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	27° 20′
42	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	28° 00′
43	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	28° 40′
44	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	29° 20′
45	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	30° 00′

11.3.3 चतुर्विंशांशकुण्डली–परिचय

लग्न के 30 अंशों में 24 का भाग देने पर प्रत्येक भाग 1 अंश 15 कला का होता है। इन्हीं भागों को चतुर्विंशांश कहा जाता है। एक राशि में 1 अंश 15 कला के कुल 24 चतुर्विंशांश होते हैं। चतुर्विंशाश[?] की विषम राशि में सिंह से, सम राशि में कर्क से गणना प्रारंभ की जाती है। चतुर्विंशांश साधन से जातक के विद्यार्जन संबंधी क्षेत्र का विचार किया जाता है। अगले पृष्ठ पर चतुर्विंशांश साधन की सारणी दी जा रही है।

चतुर्विंशांशकुण्डली



11.3.4 चतुर्विंशांशकुंडली–साधन विधि

चतुर्विंशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण कुण्डली का लग्न तुला के 8 अंश 37 कला पर होने से चतुर्विंशांश सारणी में तुला राशि के सप्तम भाग कुंभ में हुआ। अतः चतुर्विंशांश कुण्डली की लग्न कुंभ राशि का होगा। सूर्य कर्क में 3 अंश 28 कला होने से तृतीय भाग कन्या में, चन्द्र मिथुन में 8 अंश, 26 कला होने से सप्तम भाग कुंभ में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला होने से 23 वें भाग वृष में, बुध कर्क में 28 अंश 41 कला होने से 23 वें भाग वृष में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला होने से तृतीय भाग कन्या में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला होनेसे 19 वें भाग कुंभ में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला होने से अष्टम भाव कुंभ में जाएगा। राहु मकर में 21 अंश 7 कला होने से 17 वें भाग वृश्चिक में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला होने के कारण 17 वें भाग वृश्चिक में जाएगा।

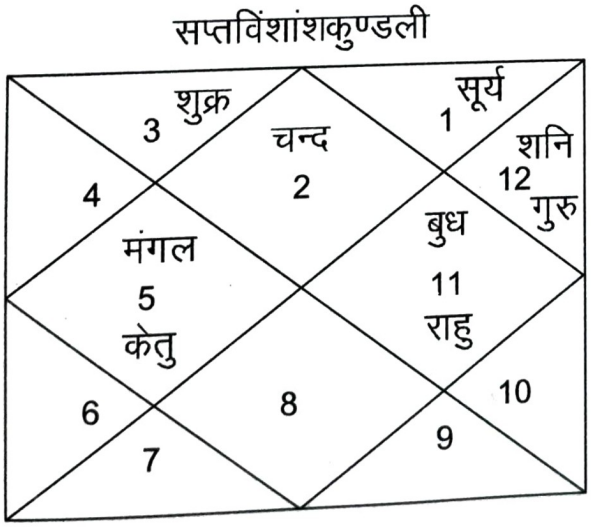
चतुर्विंशांश चक्र

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–स्वामी	सम स्वामी
1	1° 15′	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	स्कन्दः	भीमः
2	2° 30′	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	पशुधरः	मदनः
3	3° 45′	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	अनलः	गोविन्दः
4	5° 00′	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	विश्वकः	वृषध्वजः
5	6° 15′	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	भगः	अन्तकः
6	7° 30′	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	मित्रः	यमः
7	8° 45′	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	यमः	मित्रः
8	10° 00′	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	अन्तक.	भगः
9	11° 15′	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	वृषध्वजः	विश्वकः
10	12° 30′	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	गोविन्दः	अनलः
11	13° 45′	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	मदनः	पशुधरः
12	15° 00′	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	भीमः	स्कन्दः
13	16° 15′	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	स्कन्दः	भीमः

14	17° 30′	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	पशुधरः	मदनः
15	18° 45′	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	अनलः	गोविन्दः
16	20° 00′	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	विश्वकः	वृषध्वजः
17	21° 15′	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	भगः	अन्तकः
18	22° 30′	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	मित्रः	यमः
19	23° 45′	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	यमः	मित्रः
20	25° 00′	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	अन्तकः	भगः
21	26° 15′	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	वृषध्वजः	विश्वकर्मा
22	27° 30′	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	गोविन्दः	अनलः
23	28° 45′	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	मदनः	पशुधरः
24	30° 00′	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	भीमः	स्कन्दः

11.3.5 सप्तविंशांशकुण्डली–परिचय

एक राशि के 30 अंशों के 27 समान भाग करने पर एक भाग 1 अंश 6 कला व 40 विकला का होता है। इसी को सप्तविंशांश कहा जाता है। सप्तविंशांश को भांशेश भी कहा जाता है। सप्तविंशांश साधन से जातक के बलाबल का ज्ञान किया जाता है। अगले पृष्ठ पर सप्तविंशांश चक्र की सारणी दी जा रही है।



11.3.6 सप्तविंशांशकुण्डली–साधन विधि

सप्तविंशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण कुण्डली की लग्न तुला के 8 अंश 37 कला 14 विकला पर होने से सप्तविंशांश सारणी में तुला राशि के अष्टम भाग वृष में हैं। अतः सप्तविंशांशकुण्डली की लग्न वृष होगी। सूर्य कर्क में 3 अंश 28 कला 45 विकला होने से चतुर्थ भाग मेष में, चन्द्र मिथुन के 8 अंश 26 कला 49 विकला होने से अष्टम भाग वृष में, मंगल मकर के 27 अंश 58 कला 7 विकला होने से 26 वें भाग सिंह में, गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला 52 विकला होने से तृतीय भाग मीन में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला 39 विकला होने से सप्तविंशांश सारणी में मिथुन राशि के 21 वें भाग मिथुन में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला 27 विकला होने से नवम भाग मीन में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला 10 विकला होने से 20 वें भाग कुंभ में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला 10 विकला होने से कर्क के 20 वें भाग सिंह राशि में जाएगा।

सप्तविंशांश–चक्र

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
1	अश्वि.	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	$1^\circ\ 6'\ 40''$

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
	कु.													
2	यमः	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2° 13′ 20″
3	अग्निः	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3° 20′ 00″
4	ब्रह्मा	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4° 26′ 40″
5	चन्द्रमाः	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5° 33′ 20″
6	शंकरः	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6° 40′ 00″
7	अदितिः	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7° 46′ 40″
8	जीवः	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8° 53′ 20″
9	अहिः	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	10° 00′ 00″
10	पितरः	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	11° 06′ 40″
11	भगः	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	12° 13′ 20″
12	अर्यमा	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	13° 20′ 00″
13	अर्कः	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	14° 26′ 40″
14	त्वष्टा	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	15° 33′

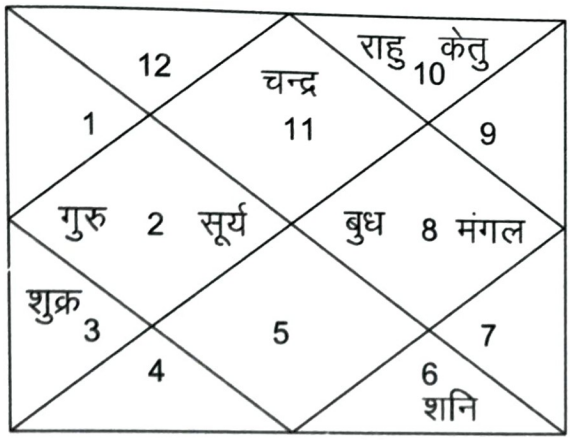
सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
														20″
15	वायुः	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	16° 40′ 00″
16	शक्राग्निः	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	17° 46′ 20″
17	मित्रः	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	18° 53′ 20″
18	वासवः	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	20° 00′ 00″
19	निर्ऋतिः	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	21° 06′ 40″
20	उदकः	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	22° 13′ 20″
21	विश्वेदेवा	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	23° 20′ 00″
22	गोविन्दः	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	24° 26′ 40″
23	वसुः	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	25° 33′ 20″
24	वरुणः	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	26° 40′ 00″
25	अजपात्	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	27° 46′ 40″
26	अहिर्बुध्न्यः	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	28° 53′ 20″
27	पूषा	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	30° 00′

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं. क. वि.
														00″

11.3.7 त्रिंशांशकुण्डली–परिचय

लग्न के 30 वें भाग को त्रिंशांश कहा जाता है। त्रिंशांश बोधक चक्र विषम व सम राशियों में अलग–अलग रहता है। अतः सम व विषम राशि के अनुरूप गणना करनी चाहिए। त्रिंशांश साधन से हम जातक के अरिष्ट, विपत्ति या विपदा का विचार करते हैं। इस साधन से विपत्ति का ज्योतिषीय कारण प्राप्त होता है। अगले पृष्ठ पर त्रिंशांश बोधक चक्र सम व विषम राशियों का अलग–अलग दिया जा रहा है।

त्रिंशांश कुण्डली



11.3.8 त्रिंशांशकुण्डली–साधनविधि

त्रिंशांश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण कुण्डली की लग्न तुला विषम राशि है। जिसके 8 अंश 37 कला 14 विकला व्यतीत हो चुके थे। विषम त्रिंशांश चक्र में देखा तो यह अंशांदि तुला के द्वितीय भाव में कुंभ राशि के अन्तर्गत प्राप्त हुए। अतः त्रिंशांश लग्न कुंभ हुई। सूर्य सम राशि कर्क में 3 अंश 28 कला होने से प्रथम

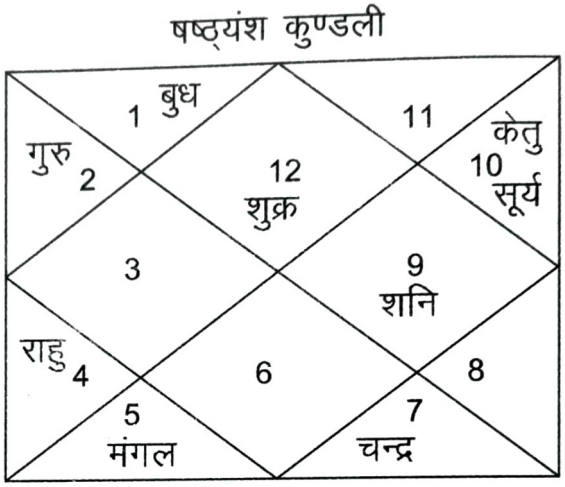
भाग वृष में, चन्द्र विषम राशि मिथुन में 8 अंश 26 कला होने से द्वितीय भाग कुंभ में, मंगल सम राशि मकर में 27 अंश 58 कला होने से पंचम भाग वृश्चिक में, बुध सम राशि कर्क में 28 अंश 41 कला होने से पंचम भाग वृश्चिक में, गुरु सम राशि वृश्चिक में 3 अंश 9 कला होने से प्रथम भाग वृष में तथा शुक्र विषम राशि मिथुन में 22 अंश 55 कला होने से चतुर्थ भाग मिथुन में जाएगा। इसी प्रकार शनि सम राशि वृष में 9 अंश 58 कला होने से द्वितीय भाग कन्या में, राहु सम राशि मकर में 21 अंश 7 कला होने से चतुर्थ भाग मकर में तथा केतु सम राशि कर्क में 21 अंश 7 कला का होने से त्रिंशांश चक्र अनुसार चतुर्थ भाग मकर में जाएगा।

त्रिशांश चक्र

अंश	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	अंश	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.
5°	1	1	1	1	1	1	5°	2	2	2	2	2	2
10°	11	11	11	11	11	11	12°	6	6	6	6	6	6
18°	9	9	9	9	9	9	20°	12	12	12	12	12	12
25°	3	3	3	3	3	3	25°	10	10	10	10	10	10
30°	7	7	7	7	7	7	30°	8	8	8	8	8	8

11.3.9 षष्ट्यंशकुण्डली–परिचय

लग्न के तीस अंशों के 60 समान भाग करने पर एक भाग 30 कला का होता है। इसी को षष्ट्यंश कहा जाता है। षष्ट्यंश के अति सूक्ष्म होने के कारण लग्न एवं ग्रह–स्पष्ट द्वारा इसकी गणना करना उचित होता है। षष्ट्यंश के स्वामी देव, दानव एवं मानव होने से इसका सूक्ष्म विवेचन करना आवश्यक है। षष्ट्यंश साधन से हमें जातक के जीवन की सभी स्थितियों का ज्ञान मिलता है। अगले पृष्ठ पर षष्ट्यंश चक्र सारिणी दी जा रही है।



11.3.10 षष्ठ्यंशकुंडली–साधन विधि

षष्ठ्यंश कुण्डली बनाने के लिए अग्रलिखित गणनाएं आपके पास होना आवश्यक है।

लग्न–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

ग्रह–स्पष्ट (राशि – अंश – कला – विकला)

उदाहरण कुण्डली की लग्न तुला के 8 अंश 37 कला 14 विकला होने से षष्ठ्यंश चक्र के 18 वें भाग में गई जहाँ मीन राशि है। अतः षष्ठ्यंश लग्न मीन बनेगा। सूर्य कर्क में 3 अंश व 28 कला 45 विकला होने से सप्तम भाग मकर में चन्द्र मिथुन में 8 अंश 26 कला 49 विकला होने से 17 वें भाग तुला में, मंगल मकर में 27 अंश 58 कला 7 विकला होने से 56 वें भाग सिंह में, बुध कर्क में 28 अंश 41 कला 8 विकला होने से 58 वें भाग में मेष में गुरु वृश्चिक में 3 अंश 9 कला 52 विकला होने से सप्तम भाग वृष में तथा शुक्र मिथुन में 22 अंश 55 कला 39 विकला होने के कारण षष्ठ्यंश चक्र के अन्तर्गत 46 वें भाग मीन में जाएगा। इसी प्रकार शनि वृष में 9 अंश 58 कला 27 विकला होने से 20 वें भाग धनु में, राहु मकर में 21 अंश 7 कला 14 विकला होने से 43 वें भाग में कर्क में तथा केतु कर्क में 21 अंश 7 कला 14 विकला होने से 43 वें भाग मकर में जाएगा।

षष्ठ्यंश–चक्र : 1

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
1	0° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	घोर	इन्दुरेखा

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
2	1° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	राक्षस	भ्रमण
3	1° 30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	देव	पयोधि
4	2° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	कुबेर	सुधा
5	2° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	यक्ष	शीत
6	3° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	किन्नर	क्रूर
7	3° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भ्रष्ट	सौम्य
8	4° 00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कुलघ्न	निर्मल
9	4° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	गरल	दण्डायुध
10	5° 00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	अग्नि	कालाग्नि
11	5° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	माया	प्रवीण
12	6° 00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	प्रेतपुरीष	इन्दुमुख
13	6° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	अपांपति	दंष्ट्राकराल
14	7° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	देवगणेश	शीतल
15	7° 30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	काल	मृदु

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
16	8° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	अहिभाग	सौम्य
17	8° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	अमृत	कालरूप
18	9° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	चन्द्र	पातक
19	9° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	मृद्वंश	वंशक्षय
20	10° 00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कोमल	कुलनाश
21	10° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	हेरम्ब	विषप्रदग्ध
22	11° 00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	ब्रह्मा	पूर्णचन्द्र
23	11° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	विष्णु	अमृत
24	12° 00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	महेश्वर	सुधा
25	12° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	देव	कपटक
26	13° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	आर्द्र	यम
27	13	3	4	5	6	7	8	9	1	1	1	1	2	कलिनाश	घोर

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
	° 30′								0	1	2				
28	14 ° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्षितीश्वर	दावाग्नि
29	14 ° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कमलाकर	काल
30	15 ° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	मान्दी	मृत्यु

षष्ट्यंश–चक्र : 2

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
31	15 ° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	मृत्युकर	मान्दी
32	16 ° 00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	काल	कमलाकर
33	16 ° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	दावाग्नि	क्षितिज
34	17 ° 00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	घोर	कलिनाश
35	17 ° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	यम	आर्द्र
3	18	1	1	2	3	4	5	6	7	8	9	1	1	कपटक	देव

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
6	° 00′	2										0	1		
37	18° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	सुधा	महेश्वर
38	19° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	अमृत	विष्णु
39	19° 30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	पूर्णचन्द्र	ब्रह्मा
40	20° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	विषप्रदग्ध	हेरम्ब
41	20° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कुलनाश	कोमल
42	21° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	वंशक्षय	मृद्वंश
43	21° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	पातक	चन्द्र
44	22° 00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	काल	अमृत
45	22° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	सौम्य	अहिभाग
4	23	1	1	1	1	2	3	4	5	6	7	8	9	मृदु	काल

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
6	° 00′	0	1	2											
47	23° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	शीतल	देवगणेश
48	24° 00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	दंष्ट्राकराल	अपांपति
49	24° 30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	इन्दुमुख	प्रेतपुरीष
50	25° 00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	प्रवीण	माया
51	25° 30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कालाग्नि	अग्नि
52	26° 00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	दण्डायुध	गरल
53	26° 30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	निर्मल	कुलघ्न
54	27° 00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	शुभाकर	भ्रष्ट
55	27° 30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	क्रूर	किन्नर
5	28	8	9	1	1	1	1	2	3	4	5	6	7	अतिशीतल	यक्ष

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम देवतांश
6	° 00′			0	1	2									
57	28 ° 30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	सुधा	कुबेर
58	29 ° 00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	पयोधि	देव
59	29 ° 30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	भ्रमण	राक्षस
60	30 ° 00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	इन्दुरेखा	घोर

11.4 सारांश

इस इकाई में आपने अक्षवेदांश साधन, चतुर्विंशांश साधन, सप्तविंशांश साधन, त्रिंशांश साधन व षष्ठ्यंश साधन की वर्ग कुण्डलियों की गणना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की। वर्ग कुण्डली के लिए निर्माण के लिए उपयोगी तालिकाएं भी आवश्यकतानुसार प्रस्तुत की गई हैं। इस इकाई के अध्ययन से आप सरलतापूर्वक वर्ग कुण्डली के निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सक्षम हो पायेंगे।

11.5 शब्दावली

अक्षवेदांश – एक राशि का पैतालीसवां अंश

चतुर्विंशांश – एक राशि का चौबीसवां अंश

सप्तविंशांश – एक राशि का सत्ताईसवां अंश

त्रिंशांश – एक राशि का तीसवां अंश

षष्ठ्यंश – एक राशि का साठवां अंश

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– अक्षवेदांश साधन में लग्न के कितने भाग किए जाते हैं ?

प्रश्न 2– अक्षवेदांश साधन स्थिर राशि में किस राशि से प्रारंभ होता है ?

प्रश्न 3– चतुर्विंशांश साधन का एक भाग कितने अंश व कला का होता है ?

प्रश्न 4– जातक के किस विशेष क्षेत्र की गणना चतुर्विंशांश साधन से की जाती है ?

प्रश्न 5– भांशेश किस साधन का दूसरा नाम है ?

प्रश्न 6– जातक के शारीरिक बल का आकलन किस साधन से करते हैं ?

प्रश्न 7– स्त्री जाति का किस साधन से विशेष विचार किया जाता है ?

प्रश्न 8– षड्वर्ग में किन किन साधनों की गणना की जाती है ?

प्रश्न 9– सप्तवर्ग में कौन कौन से साधन होते हैं ?

प्रश्न 10– दशवर्ग में किन किन साधनों की गणना की जाती है ?

प्रश्न 11– षष्ट्यंश साधन में एक भाग कितने कला का होता है ?

प्रश्न 12– एक जातक की लग्न स्पष्ट वृश्चिक राशि में 20 अंश 11 कला व 2 विकला है। अतः षष्ट्यंश कुण्डली का लग्नेश कौन होगा ?

11.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1– 45 भाग।

उत्तर 2– सिंह राशि से।

उत्तर 3– 1 अंश 15 कला।

उत्तर 4– विद्यार्जन संबंधी।

उत्तर 5– सप्तविंशांश साधन का।

उत्तर 6– सप्तविंशांश से।

उत्तर 7– त्रिंशांश साधन से।

उत्तर 8– होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश व त्रिंशांश।

उत्तर 9– लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश व त्रिंशांश।

उत्तर 10–लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिंशांश व षष्ट्यंश।

उत्तर 11–30 कला का।

उत्तर 12–षष्ट्यंश सारणी में वृश्चिक राशि में 20 अंश 11 कला 41वें भाग के अन्तर्गत मीन राशि में आती है। अतः षष्ट्यंश कुण्डली की लग्न मीन हुई व षष्ट्यंश लग्नेश गुरु होगा।

11.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

वृहत्पाराशर होराशास्त्रम् – महर्षि पाराशर

सचित्र ज्योतिष शिक्षा (द्वितीय गणित खण्ड) – बाबू लाल ठाकुर ज्योतिषाचार्य

बृहज्जातक – वराहमिहिर

11.8 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

पाठक ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करें जिसमें कि षोडशवर्ग गणना को उदाहरण देकर समझाया गया है। साथ ही किसी कुण्डली में लग्न और भाव स्पष्ट लेकर अक्षवेदांश कुण्डली, चतुर्विंशांश कुण्डली, सप्तविंशांश कुण्डली, त्रिंशांश कुण्डली, षष्ट्यंश कुण्डली बनाने का अभ्यास करें।

11.9 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न – अक्षवेदांश कुण्डली, चतुर्विंशांश कुण्डली, सप्तविंशांश कुण्डली, त्रिंशांश कुण्डली, षष्ट्यंश कुण्डली बनाने की विधि लगभग एक समान है, विवेचना कीजिए।